





दिनांक 23.11.2022 को विजयवाड़ा में आयोजित विशाल क्रेडिट कैंप में मंच पर आसिन बांये से श्री पी अनुप कुमार, क्षेत्रीय प्रमुख - हैदराबाद, श्री के.एस.एन वी राव, अंचल प्रमुख - हैदराबाद, श्री एम वी राव, माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा श्री एस.एस. मुर्ति, क्षेत्रीय प्रमुख - विजयवाड़ा.



आईबीए टेक्नोलॉजी कॉन्फ्रेंस, एक्सपो एंड अवॉर्ड्स में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को 'सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकी जोखिम प्रबंधन' श्रेणी में 'उपविजेता' के रूप में सम्मानित किया गया. श्री एम वी मुरली कृष्ण, कार्यपालक निदेशक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया एवं श्री रतनकुमार, महाप्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी) ने यह पुरस्कार प्राप्त किया.



.. न हि ज्ञानेन सदृशं ..

**संपादक**

स्मृति रंजन दाश

**संपादक मंडल**

नमिता रॉय शर्मा

वास्ती वेंकटेश

एस. एच. अय्यूबी

राजीव वार्शनी

**संपादकीय सहायक**

छाया पुराणिक

अनिता धुर्वे

**Editor**

Smruti Ranjan Dash

**Editorial Board**

Namita Roy Sharma

Vasti Venkatesh

S. H. Ayubi

Rajiv Varshney

**Editorial Assistant**

Chhaya Puranik

Anita Dhurve

**ई-मेल / E-mail**

centralite1982@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

Articles Published in this magazine does not necessarily contain views the Bank.



# सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका

## A Quarterly House - Journal of Central Bank of India

प्रकाशन तिथि - 13 फरवरी 2023 • खंड / Vol. 44 - 2022 • अंक - 4 • दिसंबर / Dec, 2022

## विषय-सूची / CONTENTS

प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम. वी. राव का संदेश .....	4
कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश .....	5
कार्यपालक निदेशक श्री राजीव पुरी का संदेश .....	6
कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्ण का संदेश .....	7
संपादकीय .....	8
प्रधान मंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों का सूत्रीकरण योजना .....	9
खुदरा बैंकिंग एवं विपणन .....	13
बैंकिंग विकास के लिए नए क्षेत्र .....	15
भारतीय बैंकिंग का इतिहास .....	16
काव्यकुंज .....	20
वसूली प्रबंधन .....	22
सजा .....	27
'द लॉन फ्राइडे' और उसके बाद .....	29
New Fields in Indian Banking Development .....	31
ग्राहक केंद्रिकता एवं कारोबार विकास .....	35
वसूली प्रबंधन .....	39
चंद्रखनी पास ट्रेक .....	41
माँ के साथ हवाई सफर .....	46
ऋण वसूली प्रबंधन .....	47
उसने कहा था : कहानी समीक्षा .....	51
चेतना .....	53
कर्तव्यपथ .....	54
व्यंजन .....	56
फोटो दीर्घा .....	58
सेवानिवृत्ति/ पदोन्नति .....	62

डिजाइन, संपादन तथा प्रकाशन : श्री स्मृति रंजन दाश, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, चन्दरमुखी, नरीमन पॉइंट, मुंबई - 400 001 के लिए तथा उनके द्वारा उचिथ ग्राफिक प्रिंटेर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडिडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

Designed, Edited and Published by Shri Smruti Ranjan Dash for Central Bank of India, Chandermukhi, Narimanpoint, Mumbai - 400 001

Designed and Printed by him at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd. 65, Ideal Industrial Estate, Mathuradas Mills Compound, Senapati Bapat Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013.



## प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी. राव का संदेश



प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

नववर्ष 2023 की हार्दिक शुभकामनाएं ,

वित्त वर्ष 2022-23 के समाप्त होने में अब अधिक समय शेष नहीं है. पिछली तीन तिमाहियों में हमारा कामकाज तुलनात्मक रूप से बेहतर रहा है किन्तु हमारे व्यवसाय में और वृद्धि आवश्यक है. हमें अपने समस्त लक्ष्य बड़े मार्जिन से प्राप्त करने होंगे साथ ही बैंकिंग उद्योग की वृद्धि दर से अधिक वृद्धि दर दर्शानी होगी.

आज की प्रतिस्पर्धात्मक बैंकिंग में कासा जमाओं का विशेष स्थान है. बचत खाता एवं चालू खाता दोनों ही कम लागत की जमाएं हैं. कम लागत की जमा अधिक होने पर बैंक की लाभप्रदता बढ़ जाती है. इसलिए हमें कासा जमाओं (बचत / चालू खाते) को बढ़ाने के लिए सघन प्रयास करने होंगे. इन जमाओं को बढ़ाने के लिए हमें विशेष अभियान चलाने चाहिए. हमें आवासीय क्षेत्रों, स्कूलों, कॉलेजों एवं बाजारों में अभियान चलाकर कासा जमाओं में वृद्धि करनी चाहिए. हमें अपने ग्राहकों को डिजिटल सेवाओं का लाभ उठाने के लिए निरंतर प्रेरित करते रहना चाहिए. हमारा बैंक एक डिजिटल सेवी बैंक बन चुका है और हमारी डिजिटल ग्राहक सेवा भी हमारे ग्राहकों को प्रभावित कर रही है.

हमें अपने ग्राहकों को डिजिटल बैंकिंग का उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए. उन्हें डिजिटल पेमेंट,

डिजिटल धनांतरण (मनी ट्रांसफर) करने तथा गिफ्ट कार्ड, डेबिट कार्ड लेने को प्रोत्साहित करें. हमें अपने ग्राहकों को एटीएम मशीन, सेल्फ सर्विस पासबुक प्रिंटिंग आदि का उपयोग करने के लिये भी प्रेरित करना चाहिए .

हमारा प्रयास सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान करना होना चाहिए. हमें अपने कार्य एवं व्यवहार से ग्राहक को संतुष्ट करना चाहिए. हमारे द्वारा ग्राहक को शिकायत करने का कोई अवसर नहीं दिया जाना चाहिए. ग्राहक से शिकायत मिलने की स्थिति में तत्काल कार्यवाही करके उसे समाप्त करना चाहिए.

विगत दिनों आप सभी ने ऋण वसूली में सराहनीय कार्य किया है लेकिन हमारा एनपीए अभी भी बहुत अधिक है. हमें अपने प्रयास और बढ़ाकर एनपीए को न्यूनतम स्तर पर लाना होगा. ऋण खातों में स्लीपेज रोकना होगा. एनपीए खातों को अपग्रेड करना होगा. इसके अतिरिक्त हमारा ध्यान राइट ऑफ खातों में भी अधिक से अधिक वसूली करने की ओर होना चाहिए. हमारा लक्ष्य वसूली अधिकतम, एनपीए न्यूनतम होना चाहिए .

हार्दिक शुभकामनाएं

(एम.वी. राव)  
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी



## कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश



प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों तथा त्यौहारों की हार्दिक शुभकामनाएं,

सभी प्रकार के व्यवसायों की तरह बैंकिंग भी एक विकासोन्मुख उद्योग है. वर्तमान समय में विश्व में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं. बैंकिंग भी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है.

वर्तमान दौर में व्यक्तियों की आवश्यकताएं निरंतर बदल रही हैं. उद्योग व्यापार का स्वरूप बदल रहा है. इसी क्रम में उनकी आवश्यकताएं भी बदल रही हैं. बैंकिंग उद्योग नागरिकों एवं उद्योग व्यापार की आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी योजनाएं बना रहा है. आज सभी बैंकिंग संस्थाएं नियमित रूप से नई-नई योजनाओं को प्रारंभ कर रही हैं.

इंटरनेट बैंकिंग एवं मोबाईल बैंकिंग के माध्यम से बैंकिंग ग्राहकों को बहुत उपयोगी सुविधाएं प्रदान की गई हैं. इस श्रृंखला में हमारा बैंक लगातार नये - नये लाभकारी

उत्पाद ग्राहकों के लिये प्रस्तुत कर रहा है. आज हमारे बैंक के पास समाज के सभी वर्गों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के अनुरूप जमा और ऋण के उत्पाद उपलब्ध हैं. इसके साथ ही हमारी ब्याज दरें भी पूरी तरह प्रतिस्पर्धी हैं. विकास के लिये आवश्यक है कि हम अपने ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा प्रदान करें. शाखा में आने वाले ग्राहक एवं नागरिकों को मित्रतापूर्ण वातावरण की अनुभूति कराएं. उन्हें उनकी पूछताछ का संतोषजनक जवाब दें, उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुसार बैंक की पूरी जानकारी प्रदान करें.

हमारी उत्कृष्ट ग्राहक सेवा ही हमारे लिये विकास का पथ प्रशस्त करेगी.

हार्दिक शुभकामनाएं



(विवेक वाही)

कार्यपालक निदेशक



## कार्यपालक निदेशक श्री राजीव पुरी का संदेश



प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

नववर्ष 2023 आप सभी के लिये शुभ हो,

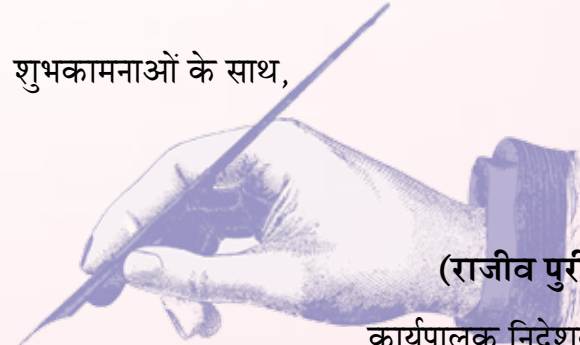
किसी भी उद्योग के अस्तित्व के लिये उसमें निरंतर विकास होता रहना आवश्यक है. प्रत्येक संस्था को विकास के नये- नये क्षेत्र खोजते रहना चाहिए. बैंकिंग उद्योग भी सदैव विकास के नए क्षेत्र खोजता रहा है. बैंकिंग उद्योग में वर्तमान दौर अत्यधिक प्रतिस्पर्धा का दौर है. ध्यान रखिए जो बैंक नवीनतम प्रौद्योगिकी अपनाएगा वो ही प्रतिस्पर्धा में आगे रहेगा. ये भी ध्यान देने की बात है कि उपलब्ध प्रौद्योगिकी एवं संसाधनों का पूर्ण उपयोग करना भी संस्था के व्यवसायिक हितों को पूर्ण करना है.

विकास एक सतत प्रक्रिया है. बैंकिंग की प्रत्येक मद में लक्ष्य के अनुरूप या उससे अधिक की वृद्धि दर होना विकास के प्रति अच्छा संकेत माना जाता है. कई अवसरों पर कुछ मदों में ज्ञात अथवा अज्ञात कारणों से वृद्धि न हो पाने पर इस मद में विकास के लिये नवीन संभावनाओं पर विचार किया जाना श्रेयस्कर होता है.

बैंकिंग का कार्य चाहे जमा का हो अथवा ऋण प्रदान करने का हो या वसूली करने का हो अथवा ग्राहक सेवा का हो सभी कार्यों में विकास किया जाना अपेक्षित होता है. इसके अतिरिक्त हमें अपने परिसर की स्वच्छता पर नियमित रूप से ध्यान देते हुए उसे निरंतर आकर्षक बनाते रहना चाहिए जिससे ग्राहकों को वहां आना अच्छा लगे. बेहतर ग्राहक सेवा हमारे ग्राहकों को हमसे स्थायी संबंध बनाए रखने के लिये प्रेरित करती है, जिससे नये ग्राहक भी बनते हैं.

इस प्रतिस्पर्धात्मक बैंकिंग के दौर में है जब सभी बैंकों की जमा एवं ऋण की ब्याज दरें बहुत अधिक प्रतिस्पर्धी हैं, ऐसे दौर में स्वच्छ एवं आकर्षक परिसर तथा उत्कृष्ट ग्राहक सेवा ही हमारे लिए विकास के नए क्षेत्र खोलेंगे.

शुभकामनाओं के साथ,



(राजीव पुरी)

कार्यपालक निदेशक



## कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्ण का संदेश



प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

नववर्ष 2023 की हार्दिक शुभकामनाएं !

जैसा कि आप सब जानते हैं कि मैंने दिनांक 01.12.2022 को देश के प्रथम स्वदेशी बैंक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में कार्यग्रहण किया है. आप सभी सेन्ट्रलाइट ने जिस गर्मजोशी के साथ मेरा स्वागत किया, मैं उसके प्रति आभारी हूं. मैं इस महान संस्था से जुड़कर स्वयं को बहुत सौभाग्यशाली समझता हूं.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में कार्यरत 31000 से अधिक कर्तव्यनिष्ठ एवं समर्पित सेन्ट्रलाइट अत्यधिक प्रतिभाशाली हैं. वे इस बैंक को इसके पुराने वैभव को लौटाने के लिये प्रतिबद्ध प्रतीत होते हैं.

आज हमारे बैंक का कासा का प्रतिशत बढ़ाना आवश्यक है जिससे हम और अधिक प्रतिस्पर्धी बन सकें. हमारा बैंक तिमाही दर तिमाही अच्छे परिणाम दे रहा है और अपने कर्मचारियों के रूप में कार्य करने की अद्भुत क्षमता हमारे पास उपलब्ध है. मैं पूर्णतः

आश्चस्त हूं कि सभी सेन्ट्रलाइट मिलकर चमत्कारी परिणाम प्रदान कर सकते है तथा बैंक के माध्यम से देश के आर्थिक विकास में अधिकतम संभव योगदान प्रदान कर सकते हैं.

बैंकिंग संस्था के रूप में हमें विकास के नये क्षेत्र निरंतर खोजते रहना आवश्यक है. हमारा बैंक डिजीटल ट्रांसफॉर्मेशन की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है. हमारा उद्देश्य है कि हमारे ग्राहकों द्वारा डिजिटल बैंकिंग का अधिक से अधिक उपयोग किया जाए.

इसी प्रकार हमें वसूली प्रबंधन में भी अधिक से अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है. ऋण खातों में स्लीपेज रोकना, एनपीए खातों में वसूली करना बहुत आवश्यक है.

आपके प्रयासों हेतु शुभकामनाएं



(एम वी मुरली कृष्ण)

कार्यपालक निदेशक



## संपादकीय



नववर्ष 2023 की हार्दिक शुभकामनाएं,

बैंकिंग का वर्तमान दौर ग्राहक उन्मुखी है. ग्राहकों की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के अनुसार बैंक अपनी योजनाएं एवं उत्पाद तैयार करते हैं. समय के साथ-साथ ग्राहकों की आवश्यकताएं बदलती रहती हैं और उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वे बैंक का उसी प्रकार का उत्पाद चाहते हैं. व्यवसायिक बैंक निरंतर अपने ग्राहकों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर विकास के नये क्षेत्र खोजते हैं.

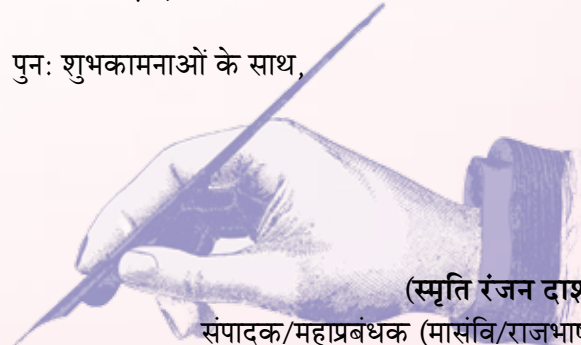
आज का ग्राहक जीवन को भरपूर तरीके से जीना चाहता है. इसके लिये वह गृह ऋण लेकर घर बनाता है. कार ऋण लेकर वाहन की व्यवस्था करता है. शिक्षा ऋण लेकर शिक्षा प्राप्त करता है. यहां तक कि ऋण लेकर घूमना-फिरना भी पसंद करता है. विवाह समारोह इत्यादि के लिये भी वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति ऋण लेकर पूरी करता है. ये सभी बैंकिंग व्यवसाय के नये क्षेत्र सृजित करते हैं.

वर्तमान प्रौद्योगिकी के दौर में सभी बैंक, ग्राहकों की

आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कार्य करते हैं. साथ ही ग्राहक को, उत्कृष्ट सेवा प्रदान कर अपने साथ जोड़कर भी रखना चाहते हैं.

ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा देने के क्रम में डिजिटाइजेशन एक अति महत्वपूर्ण माध्यम है. हमें अपने ग्राहकों को डिजिटल माध्यमों जैसे इंटरनेट बैंकिंग, मोबाईल बैंकिंग, एम पासबुक, सेंट यूपीआई के प्रयोग करने को प्रोत्साहित करते रहना चाहिए. इसके अतिरिक्त एटीएम, सिक्का वितरण मशीन और नकद जमा मशीन (कियोस्क) स्वयं पासबुक प्रिंटिंग सेवा जैसे माध्यमों का प्रयोग करने हेतु प्रेरित करते रहना चाहिए. इससे ग्राहकों का शाखा में आने

पुनः शुभकामनाओं के साथ,



(स्मृति रंजन दाश)

संपादक/महाप्रबंधक (मासंवि/राजभाषा)





## प्रधान मंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों का सूत्रीकरण योजना

(PRADHAN MANTRI FORMALISATION OF MICRO FOOD PROCESSING ENTERPRISES SCHEME)

**प्रस्तावना:** देश में असंगठित खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में लगभग 25 लाख खाद्य प्रसंस्करण उद्यम हैं जो अपंजीकृत और अनौपचारिक हैं। सयंत्र और मशीनरी में केवल 7% हिस्से तथा बकाया ऋण में 3% हिस्से के साथ असंगठित उद्यम रोजगार में 74% का योगदान रखते हैं (जिनमें एक तिहाई महिलाएं हैं)। इनमें से 66% इकाइयां ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं और 80% परिवार आधारित है। इनमें से अधिकांश इकाइयां सूक्ष्म विनिर्माण इकाइयों (माइक्रो मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स) की श्रेणी में आती है। भारत में असंगठित खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जो उनके विकास को सीमित करता है और इनके प्रदर्शन को कमजोर करता है।

### इन चुनौतियों में शामिल है:

1. सीमित कौशल उत्पादन और पेकेजिंग के लिए आधुनिक तकनीक और मशीनरी तक सीमित पहुंच के कारण उत्पादकता और नवीनता में कमी।
2. गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा नियंत्रण प्रणाली की कमी, जिसमें अच्छी स्वच्छता और बुनियादी जागरूकता की कमी शामिल है।
3. ब्रांडिंग और मार्केटिंग कौशल की कमी और आपूर्ति श्रृंखला के साथ एकीकृत करने की अक्षमता।
4. पूंजी की कमी और अपर्याप्त बैंक ऋण।

असंगठित सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों के लिए कौशल प्रशिक्षण, उद्यमशीलता, प्रौद्योगिकी, ऋण और विपणन, मूल्य दर में बेहतर श्रृंखला के लिए राज्य/केंद्र सरकार की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है।

इन सभी बिंदुओं को मद्देनजर रखते हुए सरकार ने प्रधान मंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों का सूत्रीकरण (पीएमएफएमई) योजना आरंभ की है।

**पीएमएफएमई योजना:** यह योजना केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित है जो सूक्ष्म उद्यमों को आनेवाली चुनौतियों को हल करेगी तथा सूक्ष्म उद्यमों का नवीकरण और उन्हें संबल प्रदान करने के लिए समूहों और सहकारी समितियों की क्षमता का दोहन करेगी। यह योजना “आत्मनिर्भर भारत अभियान” तथा “वोकल फॉर लोकल” के एक भाग के तौर पर आरंभ की गई है।

**योजना का उद्देश्य:** योजना का उद्देश्य सूक्ष्म उद्यमों की क्षमता का निर्माण करना है जिससे,

1. मौजूदा सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमियों, एफपीओ, स्वयं सहायता समूहों और सहकारी समितियों की ऋणियों तक पहुंच में वृद्धि हो सके।
2. ब्रांडिंग और विपणन को मजबूत करके संगठित आपूर्ति श्रृंखला के साथ एकीकरण किया जा सके।
3. मौजूदा 2,00,000 उद्यमों को औपचारिक ढांचे में बदलने के लिए समर्थन दिया जा सके।
4. सामान्य सुविधाएं जैसे सामान्य प्रसंस्करण सुविधा, प्रयोगशालाएं, भंडारण, पेकेजिंग, विपणन और इनक्यूबेशन सेवाओं तक पहुंच में वृद्धि की जा सके।
5. खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं, अनुसंधान और प्रशिक्षण को संबल दिया जा सके।
6. व्यावसायिक और तकनीकी सहायता तक उद्यमियों की पहुँच में वृद्धि की जा सके।

**परिचय:** इस योजना में 2020-21 से 2024-25 तक पांच वर्ष के लिए दस हजार करोड़ रूपए व्यय की परिकल्पना की गई है। योजना के तहत होने वाला व्यय केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार के बीच 60:40 के अनुपात में, केंद्र सरकार व उत्तर-पूर्वी और हिमालयीन राज्यों के बीच 90:10 अनुपात में, केंद्र सरकार तथा

### 01 अक्टूबर

1953 : यह दिन इतिहास में आंध्र प्रदेश के स्थापना दिवस के तौर पर दर्ज है।

1847 : एनी बेसेंट का लंदन में जन्म।



विधान मंडल के साथ केंद्रशासित प्रदेशों की बीच 60:40 के अनुपात में साझा किया जाएगा तथा अन्य केंद्रशासित प्रदेशों में पूरा व्यय केंद्र सरकार वहन करेगी।

योजना का कवरेज: योजना के तहत 2,00,000 सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को क्रेडिट लिक्विड सॉल्यूशंस द्वारा सीधे सहायता प्रदान की जाएगी। खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र के विकास के लिए पर्याप्त सहायक बुनियादी ढांचा और संस्थागत संरचना का विकास किया जाएगा।

एक जिला एक उत्पाद (वन डिस्ट्रीक्ट वन प्रोडक्ट) - उत्पादों के विपणन, सामान्य सेवाओं और उत्पादन सामग्री की बड़े पैमाने पर खरीद के लिए "एक जिला एक उत्पाद" दृष्टिकोण को अपनाया गया है। राज्य इस परिप्रेक्ष्य में एक जिले के लिए खाद्य उत्पाद की पहचान करेगा जिसका मुख्य केंद्र शीघ्र खराब होने वाले उत्पादों पर होगा।

ओडीओपी उत्पाद खराब होने वाला कृषि उत्पाद, अनाज आधारित उत्पाद और उस जिले में व्यापक रूप से उत्पादित होने वाला खाद्य उत्पाद हो सकता है जैसे कि आम, आलु, लीची, साबुदाना, टमाटर, संतरा, भुजीया, पेठा, पापड, बाजार आधारित उत्पाद मछली उत्पाद, मुर्गीपालन, मांस के साथ-साथ पशुचारा भी शामिल है। कृषि उपज के लिए समर्थन उनके प्रसंस्करण के साथ-साथ अपव्यय को कम करने, उचित परख, भंडारण और विपणन के लिए होगा।

**कार्यक्रम के घटक:** कार्यक्रम में क्षेत्र की जरूरतों को संबोधित करने वाले चार व्यापक घटक हैं।

1. सूक्ष्म उद्यमों के व्यक्तियों और समूहों को सहायता।
2. ब्रांडिंग और मार्केटिंग सपोर्ट।
3. संस्थानों को मजबूत करने के लिए समर्थन।
4. मजबूत परियोजना प्रबंधन ढांचे की स्थापना।

व्यक्तिगत सूक्ष्म उद्योगों को सहायता: व्यक्तिगत सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को क्रेडिट लिक्विड सॉल्यूशंस, परियोजना लागत का 35% और अधिकतम 10.00 लाख रूपए दिए जाएंगे। लाभार्थी

का योगदान परियोजना लागत का न्यूनतम 10% होना चाहिए, शेष राशि 90% बैंक से ऋण होगा।

**योजना के तहत व्यक्तिगत सूक्ष्म उद्यमों के लिए पात्रता मानदंड:-**

1. कार्यरत मौजूदा सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां।
2. उद्यम अनिगमित होना चाहिए और इसमें काम करने वाले कर्मि 10 से कम होने चाहिए।
3. उद्यम मुख्य तौर पर जिले के "एक जिला एक उत्पाद" में व्यवसाय होना चाहिए। इसमें अन्य सूक्ष्म उद्यमों को भी शामिल किया जा सकता है।
4. आवेदक के पास उद्यम के स्वामित्व का अधिकार होना चाहिए।
5. उद्यम की स्वामित्व की स्थिति मालिकाना (प्रोपाइटी)/ साझेदारी(पार्टनरशिप) फर्म हो सकती है।
6. आवेदक की आयु 18 वर्ष से अधिक होनी चाहिए और आवेदक कम से कम आठवीं पास होना चाहिए।
7. एक परिवार का एक ही व्यक्ति वित्तीय सहायता का पात्र होगा। परिवार में स्वयं, जीवनसाथी और बच्चे शामिल हैं।
8. आवेदक परियोजना लागत का 10% योगदान देने तथा बैंक ऋण लेने के लिए इच्छुक होना चाहिए।
9. भूमि की लागत को परियोजना लागत में शामिल नहीं किया जाएगा।

**व्यक्तिगत सूक्ष्म इकाइयों के लिए चयन प्रक्रिया:-** योजना के तहत लाभ प्राप्त करने के इच्छुक लोगों से इकाइयों के लिए जिला स्तर पर निरंतर आधार पर आवेदन आमंत्रित किए जाएंगे।

रिसोर्स पर्सन (आर.पी.) विभिन्न क्लस्टरों का सर्वेक्षण करेंगे और उन इकाइयों की पहचान करेंगे जो योजना के तहत लाभ प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं। सीधे प्राप्त आवेदनों के लिए, आर.पी. स्थल निरीक्षण करेंगे और उनकी क्षमता का आकलन करेंगे।

आर.पी. दोनों आवेदनों, स्वयं पहचान की गई इकाइयों और सीधे

## 02 अक्टूबर

गांधी जयंती / अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस / 1904 : पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का जन्म।

1955 : मद्रास के पेरम्बूर में इंटिग्रल कोच फैक्टरी ने रेल का पहला डिब्बा बनाया।



प्राप्त संभावित इकाइयों को जिला स्तरीय समिति के समक्ष प्रस्तुत करेगी. जिला स्तरीय समिति आर.पी. द्वारा प्रस्तुत की गई इकाइयों का अध्ययन करेगी और इच्छुक व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया जाएगा.

जिला स्तरीय समिति/स्टेट नोडल एजेंसी द्वारा अनुशंसित यूनिट को आर.पी. बैंक ऋण प्राप्त करने के लिए विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट को आवश्यक दस्तावेजों के साथ ऋण मंजूरी के लिए प्रस्तुत किया जाएगा.

**समूह द्वारा संचालित सूक्ष्म उद्योग:** इस योजना में एफपीओ/एसएचजी और निर्माता सहकारी समितियों द्वारा संचालित सूक्ष्म उद्योग शामिल है.

### 1. किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ)/उत्पादक सहकारी समितियां -

एफपीओ और सहकारी समितियों को निम्नलिखित सहायता प्रदान की जाएगी -

- 1.1 क्रेडिट लिंकेज के साथ 35% की दर से अनुदान.
- 1.2 प्रशिक्षण सहायता.

सहकारी समितियों/एफपीओ के लिए पात्रता मानदंड:-

- अ. समूह को ओडीओपी उत्पाद के प्रसंस्करण में मुख्यतः शामिल होना चाहिए.
- आ. इसका न्यूनतम कारोबार एक करोड़ रूपए का होना चाहिए.
- इ. समूह को उस उत्पाद में व्यवसाय करने का तीन वर्ष का अनुभव होना चाहिए.
- ई. समूह के पास परियोजना लागत का 10% मार्जिन मनी को पूरा करने के लिए पर्याप्त आंतरिक संसाधन या राज्य सरकार से मंजूरी होनी चाहिए.

### 2. स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) - अनेक स्वयं सहायता समूह खाद्य प्रसंस्करण गतिविधियां चला रहे हैं. इस योजना में स्वयं सहायता समूह को निम्नलिखित सहायता प्रदान करने का

प्रस्ताव है.

1. प्रारंभिक पूंजी (सीड केपिटल) - योजना के तहत कार्यशील पूंजी और छोटे उपकरणों की खरीद के लिए एसएचजी के प्रति सदस्य रू.40,000/- की दर से प्रारंभिक पूंजी (सीड केपिटल) दी जाएगी.
2. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एकल इकाई के रूप में व्यक्तिगत एसएचजी सदस्य को 35% की दर से क्रेडिट लिंकड अनुदान, अधिकतम रू.10 लाख राशि प्रदान की जाएगी.
3. पूंजी निवेश के लिए फेडरेशन स्तर पर 35% क्रेडिट लिंकड ग्रांट दी जाएगी, जिसकी अधिकतम सीमा रू.10 लाख है.
4. इसके अलावा राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण तथा हेंडहोल्डिंग दिया जाएगा.

### स्वयं सहायता समूह के लिए पात्रता मानदंड:-

1. स्वयं सहायता समूह को ओडीओपी उत्पाद के प्रसंस्करण में न्यूनतम तीन वर्ष का अनुभव होना चाहिए.
2. स्वयं सहायता समूह परियोजना लागत का 10% मार्जिन मनी और कार्यशील पूंजी के लिए 20% मार्जिन मनी पूरा करने में समर्थ होने चाहिए.

**ब्रांडिंग और मार्केटिंग:** एफपीओ/एसएचजी/सहकारिता समूहों को इस योजना के तहत ब्रांडिंग और मार्केटिंग सहायता प्रदान की जाएगी.

### सहायता के लिए योग्य घटक:

1. विपणन से संबंधित प्रशिक्षण का पूरा खर्च वहन किया जाएगा.
2. विपणन के लिए राष्ट्रीय और क्षेत्रीय खुदरा श्रृंखलाओं के साथ गठजोड़.
3. उत्पाद की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक मानकों को पूरा करना.

### 03 अक्टूबर

1831 : मैसूर पर ब्रिटिश हुकूमत ने कब्जा किया. / 1952 : ब्रिटेन का पहला परमाणु परीक्षण 'हरिकेन' नाम दिया गया.

1984 : भारत की सबसे लंबी दूरी की रेल हिमसागर एक्सप्रेस को कन्याकुमारी से जम्मू तवी के लिए रवाना किया गया.

मार्केटिंग और ब्रांडिंग स्टेट नोडल ऐजेंसी द्वारा तैयार किया जाएगा.

**पात्रता मापदंड:-**

1. उत्पाद “एक जिला एक उत्पाद” (ओडीओपी) से संबंधित होना चाहिए.
2. सहायता के लिए योग्य होने के लिए न्यूनतम टर्नओवर रू.5.00 करोड होना चाहिए.
3. अंतिम उत्पाद वह होना चाहिए जिसे खुदरा पैक में उपभोक्ता को बेचा जा सके.
4. उत्पाद उत्पादकों को बड़े स्तर पर उपलब्ध होना चाहिए.
5. प्रमोटिंग एंटीटी का प्रबंधन और उद्यम क्षमता का आंकलन किया जाएगा.

पीएमएफएमई योजना के अंतर्गत दिए गए ऋण कृषि सहायक सेवाओं में वर्गीकृत किए जाएंगे. इस योजना में बैंक अपना योगदान देकर कृषि के लिए निर्धारित 18% लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे तथा क्षेत्रीय स्तर पर होने वाले उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा एवं योजना के नए अवसरों का सृजन होगा. इसलिए हम सभी को इस योजना का प्रचार-प्रसार करना चाहिए जिससे आत्मनिर्भर भारत और “वोकल फॉर लोकल” की ओर बढ़ रहे कदमों को और संबल मिल सकें.



**राकेश कुमार सैनी**

वरिष्ठ प्रबंधक/संकाय सदस्य  
सर एसपीबीटी महाविद्यालय, मुंबई.



**जयशंकर प्रसाद (30 जनवरी, 1890 - 15 नवंबर, 1937)**

छायावाद के प्रमुख संस्थापक कवियों में जयशंकर प्रसाद जी का नाम आता है. उन्होंने कहानियां, उपन्यास, निबंध, गद्य-गीत आदि विविध विधाओं में लिखा है और ऐतिहासिक तथा पौराणिक प्रसंगों को आधुनिक संदर्भ देकर अनेक रचनाएं की हैं. उनके प्रबंध काव्य ‘कामायनी’ और नाटक ‘चंद्रगुप्त’ को हिंदी साहित्य में विशेष स्थान प्राप्त है. उनका जन्म 30 जनवरी, 1890 और निधन 15 नवंबर, 1937 को हुआ था। उन्होंने 47 वर्षों के छोटे-से जीवनकाल में कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी और आलोचनात्मक निबंध आदि विधाओं में समान रूप से उच्च कोटि की रचनाएं की. आपकी प्रमुख रचनाएं हैं कामायनी (प्रबंध काव्य), कानन कुसुम, झरना, हिर (कविता संग्रह), ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नागयज्ञ (नाटक), कंकाल, तितली, इरावती (उपन्यास), आकाशदीप (कहानी संग्रह).

**04 अक्टूबर**

- 1977 - अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक में हिंदी में दिया गया पहला संबोधन.
- 1884 - रामचन्द्र शुक्ल का जन्म.



# खुदरा बैंकिंग एवं विपणन

**बैंकिंग** एक ऐसा सेवा उद्योग है जहां ग्राहकों की विभिन्न वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। बैंकों का कार्य मात्र जमा संग्रहण ही नहीं बल्कि ऐसी सेवाएं प्रदान करना भी है जो उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं के अनुसार बदलती रहें, लोकप्रिय हों व साथ ही साथ लाभप्रद भी हों।

आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण व कड़ी प्रतिस्पर्धा के चलते बैंकिंग क्षेत्र में कुछ वर्षों में अत्याधिक बदलाव आए हैं। आज की बैंकिंग परम्परागत बैंकिंग से बिल्कुल भिन्न है। इस बदले हुए परिवेश के परिणामस्वरूप व्यक्ति की आवश्यकताओं, जीवन-स्तर व जीवन-शैली को एक नया आयाम मिला है। इन बदलावों के कारण खुदरा बैंकिंग व्यवसाय के युग का प्रारंभ हुआ। साथ ही साथ वित्तीय क्षेत्र में हुए सुधारों से देश में निजी व विदेशी बैंकों का प्रवेश भी हुआ। प्रौद्योगिकी के चलते पारम्परिक बैंकिंग का स्थान पेशेवर एवं हाइटेक बैंकिंग ने ले लिया है। बैंकिंग क्षेत्र में निश्चित रूप से आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं। सार्वजनिक बैंकों के एकाधिकार का स्थान स्पर्धात्मक बैंकिंग ने ले लिया है। अब सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक अपने परम्परागत उत्पादों एवं सेवाओं के भरोसे नहीं रह सकते।

वित्तीय उदारीकरण के उपरांत देश में विशाल मध्यवर्गीय उपभोक्ताओं का उदय हुआ है। साथ ही साथ खुदरा बैंकिंग के दायरे में भी लगातार वृद्धि हुई है। खुदरा बैंकिंग का भविष्य सदैव ही अच्छा रहा है। फिर भी उपभोक्ताओं की बदली जीवन शैली के कारण व उनकी निरंतर बढ़ती आवश्यकताओं के मद्देनजर खुदरा बैंकिंग व्यवसाय में वृद्धि की असीमित संभावनाएं हैं। मौजूदा दौर भारतीय बैंकिंग व्यवस्था के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकी तथा ग्राहकों का व्यवहार बैंकिंग व्यवस्था को सूक्ष्म रूप में प्रभावित कर रहे हैं। इसके साथ-साथ यह भी देखा जा रहा है कि देश की संपन्नता में बढ़ोत्तरी हो रही है, उपभोक्ताओं की जीवन-शैली व जीवन स्तर में परिवर्तन होने से, उनकी क्रय शक्ति में भी वृद्धि हो रही है तथा सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि ने खुदरा वस्तुओं की मांग में बढ़ोत्तरी की है। साथ ही साथ प्रौद्योगिकी

के निरंतर प्रभाव से उपभोक्ताओं के रहन-सहन व व्यवहार में भी अत्याधिक बदलाव आ रहा है। परंपरागत उत्पाद व सेवाएं नवीनतम स्वरूप ग्रहण कर रहे हैं। उपभोक्ताओं की इन बदलती आदतें, जीवन शैली व दृष्टिकोण पर आर्थिक क्षेत्र में आए अभूतपूर्व परिवर्तनों ने खुदरा बैंकिंग के प्रति रुझान की गति को काफी तीव्र कर दिया है। उदारीकरण के कारण विभिन्न प्रकार की उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माताओं के बाज़ार में आने से उपभोक्तावाद को काफी बढ़ावा मिला है। इन निर्माताओं ने अपना उत्पाद अधिक से अधिक क्रय करने हेतु विभिन्न बैंकों से गठबंधन करके उपभोक्ताओं को लुभाया है व कामयाब भी हुए हैं।

विगत कुछ वर्षों से भारतीय बैंकिंग उद्योग में खुदरा ग्राहक वर्ग को अपनी ओर आकर्षित करने की एक होड़ सी चल रही है। ग्राहक को नई तकनीक व नए उत्पादों और औपचारिकता रहित ग्राहक सेवा की सहायता से अपनी ओर आकर्षित करने के लिए बैंक आक्रमक विपणन की रणनीति अपना रहे हैं। गिरती ब्याज दरें, ऋण के साथ मुफ्त सुविधाएं, त्वरित सेवा, इंटरनेट बैंकिंग आदि रणनीति के रूप में अपनाएं जा रहे हैं।

भारत में रिटेल पोर्टफोलियो की समग्र वृद्धि व इसके द्वारा लाभप्रदता बढ़ाने में ग्राहकों की संतुष्टि एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके लिए आवश्यक है कि ग्राहकों से अपने संबंधों को मजबूत बनाया जाए एवं खुदरा बैंकिंग की प्रक्रिया में सुधार लाया जाए जिससे ग्राहकों के लिए हमारी सेवाएं त्वरित, त्रुटि रहित और सुविधाजनक हों। बेहतर खुदरा उत्पादों के साथ हमारे ग्राहकों को प्राप्त संतुष्टि से उनकी भावी खरीद में वृद्धि होगी व रिटेल उत्पादों की बारंबार खरीद की प्रेरणा भी मिलेगी और इससे हमारी रिटेल उत्पादों की स्वीकार्यता भी बढ़ेगी तथा उसे आगे बढ़ाने में सहायता प्राप्त होगी।

## विपणन का महत्व :

बैंकिंग व्यवसाय में विपणन का एक व्यापक अर्थ है। विपणन, व्यवसाय की एक वह पद्धति है जिसमें पूरा ध्यान ग्राहक पर केंद्रित होता है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें ग्राहकों की आवश्यकताओं की

## 05 अक्टूबर

1793 - फ्रांसीसी क्रांति के दौरान फ्रांस में ईसाई धर्म विस्थापित हुआ।

1796 - स्पेन ने इंग्लैंड के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।

1805 - भारत में ब्रिटिश राज के दूसरे गवर्नर जनरल व कमांडर इन चीफ लार्ड कार्नवालिस का गाजीपुर में निधन।

पहचान करके, उनको उपलब्ध करवाना व संतुष्टि प्रदान करना है. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विपणन के अर्थ भी बदल गए हैं. पूर्व में विपणन का अर्थ उपभोक्ता के पास पहुंच कर सेवा अथवा वस्तु प्रदान करना था. बाज़ारोन्मुख अर्थव्यवस्था में बाज़ार की मांग के अनुरूप उत्पाद तैयार करना, कुशलतापूर्वक उस उत्पाद को प्रस्तुत करना एवं उपभाग की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना विपणन के अंतर्गत आता है.

कुछ दशक पूर्व तक बैंकों ने अपनी विभिन्न ऋण योजनाओं व सेवाओं के विपणन हेतु कोई विशेष प्रभावी व योजनाबद्ध प्रयास नहीं किए थे. परंतु वर्तमान हालात में विपणन एक आवश्यकता ही नहीं बल्कि अनिवार्यता बन गई है. बैंकिंग व्यवसाय में दिन प्रतिदिन परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं. निजीकरण, उदारीकरण व स्पर्धात्मक वातावरण के चलते बैंकों को विपणन करते समय अपने सभी प्रतियोगियों द्वारा बाज़ार में उतारी गई नई स्कीमों के संबंध में संपूर्ण जानकारी हासिल कर उत्पादों को ग्राहकोन्मुख बनाकर बाज़ार में लाना पड़ रहा है.

बैंकिंग उद्योग द्वारा मुहैया करवाई जाने वाली खुदरा योजनाएं लगभग एक जैसी ही हैं परंतु उनको अलग-अलग नामों से उपलब्ध करवाया जा रहा है. यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इस प्रतिस्पर्धात्मक बाज़ार में स्पर्धा तो मात्र उपलब्ध कराई जाने वाली योजनाओं की गुणवत्ता में है न कि योजनाओं या उत्पादों में. आज का उपभोक्ता अब एक स्थानीय बाज़ार का स्थिर या स्थाई उपभोक्ता न रह कर पूरे बैंकिंग उद्योग का उपभोक्ता बन गया है. ऐसी परिस्थिति में बाज़ार में अपना अस्तित्व बनाए रखने हेतु नए उपभोक्ताओं की तलाश करना व उनके साथ संबंध स्थापित करके उत्पाद व सेवाएं उपलब्ध करवाना समय की मांग बन गई है. नवीन विपणन नीतियों में उपभोक्ता की मनोस्थिति जानना व उनकी अपेक्षाओं को पूरा करना अतिआवश्यक हो गया है.

खुदरा बैंकिंग के उत्पादों की मांग को प्रभावित करने वाले कई तत्व हैं जैसे : जनसंख्या आधार, आयु-वर्ग, उपभोक्ता की पसंद व आदतें, साक्षरता, जीवन स्तर व जीवन शैली. उपभोक्ता बाज़ार में सफलता प्राप्त करने के लिए इन सभी तत्वों को ध्यान में रखकर उच्च स्तरीय अनुसंधान की आवश्यकता है. ताकि भावी ग्राहकों की पसंद-नापसंद के अनुरूप अपने उत्पाद तैयार किए जा सकें. इसके साथ-साथ एक प्रभावी विपणन नीति की भी आवश्यकता

है अन्यथा उत्पाद चाहे जितना भी अच्छा हो, उचित विपणन के अभाव में सफलता की उम्मीद नहीं की जा सकती. आम तौर पर यह देखा गया है कि बैंकों द्वारा अधिक प्रयास, मात्र उत्पादों पर ही दिया जाता है न कि विपणन पर. अतः बैंकों को चाहिए कि वह खुदरा बाज़ार को प्रभावित करने वाले उपरोक्त तत्वों का सही ढंग से अनुसंधान करके उनका विश्लेषण करें और ग्राहकों की रूची का पता लगा कर उसके अनुरूप ही खुदरा उत्पादों को उपलब्ध करवाएं. इसके साथ-साथ विपणन नीति का सही ढंग से क्रियान्वयन करके अपने उत्पादों के लिए विक्रय पश्चात् सेवा प्रदान करवाएं.

खुदरा बैंकिंग की बढ़ती लोकप्रियता तथा जीवन स्तर को लगातार ऊंचा उठाने की चाहत ने इस क्षेत्र में धोखाधड़ी की संभावना को भी पैदा किया है. पिछले कुछ वर्षों से बैंकिंग उद्योग में खुदरा ग्राहक वर्ग को अधिक से अधिक आकर्षित करने की कड़ी प्रतिस्पर्धा चल रही है. भारतीय बैंक, नए खुदरा उत्पादों, नई योजनाओं, नई तकनीक तथा औपचारिकता रहित सेवा के द्वारा ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करने में लगे हुए हैं जिसके लिए वह व्यापक व आक्रमक विपणन नीति का सहारा ले रहे हैं. अतः बैंकों को इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि वे सभी भावी ग्राहकों / उपभोक्ताओं की सही पहचान करके, उचित दस्तावेज प्राप्त करके व नियमानुसार ही कार्य करें.

बैंकिंग क्षेत्र में खुदरा बैंकिंग वर्तमान समय की मांग है. खुदरा बैंकिंग का एक अत्यंत ही सुनहरा अतीत रहा है और भविष्य भी अति उज्ज्वल है. वर्तमान दौर में यह बैंकों की लाभप्रदता बढ़ाने में प्रभावी घटक साबित हुआ है. अतः बैंकर्स को चाहिए कि वह इस क्षेत्र पर विशेष ध्यान देना जारी रखें. उपभोक्ताओं की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आवश्यकताओं के मद्देनजर खुदरा व्यवसाय में वृद्धि की असीम संभावनाएं हैं जिसको सभी बैंकों को चुनना चाहिए.



**अनिल कुमार बंसल**

सहायक महाप्रबंधक - विधि (सेवानिवृत्त)

### 06 अक्टूबर

1862 - भारतीय दंड संहिता कानून पारित हुआ

1987 - फिजी एक गणराज्य घोषित हुआ.



## बैंकिंग विकास के लिए नए क्षेत्र

**आ**ज के समय में आप सब जानते हैं की निरंतर आगे बढ़ने के लिए हमें अपने प्रतिद्वंदी से लगातार प्रतिस्पर्धा करनी होती है और हम जिस फील्ड (बैंकिंग सैक्टर) से हैं वहाँ गला काट कॉम्पिटिशन है इसलिए हमें लगातार अपने प्रॉडक्ट का प्रचार-प्रसार करना होता है, मार्केटिंग ग्राहको के संबंध बनाने ओर संतुष्ट करने की व्यवसायिक प्रक्रिया है, ज्यादातर लोग विज्ञापन और विज्ञापन पत्र को मार्केटिंग समझ लेते हैं जबकि ये मार्केटिंग के प्रकार है, मार्केटिंग का सही अर्थ यह है की उत्पाद की जानकारी से लक्षित बाजार में ग्राहको को पूर्ण संतोष पहुंचाना है।

**मार्केटिंग में 4p's का बहुत महत्व है:-**

- 1. उत्पाद (Product):-** आपको क्या बेचना है ये जानने की जगह, आपको ये जानना चाहिए की आपके कस्टमर की क्या जरूरतें हैं फिर अपने प्रॉडक्ट को कस्टमर की जरूरतों के हिसाब से बेचिए, अगर आपका प्रॉडक्ट नया है तो आपको लोगों को बताना होगा की ये आपको जरूरी क्यों है जैसे की इस कोरोना काल में कोविड-19 स्कीम लांच हुई तो हमें ग्राहको को बताना होगा की ये प्रॉडक्ट आपके लिए लॉच हुआ है और बंद पड़े व्यवसाय में फिर से जान डालने के लिए हम आपके साथ हैं। लॉक डाउन के समय डिजिटल बैंकिंग का उपयोग ग्राहकों को बताना की घर में रह कर भी पैसे एक जगह से दूसरे जगह भेजना कितना आसान है, काउंटर पर बैठे हर कर्मचारी को बैंक उत्पादों की पूरी जानकारी होनी चाहिए तभी हम अपने ग्राहक को संतुष्ट कर पाएंगे।
- 2. मूल्य (Price):-** मूल्य का मतलब उत्पाद की कीमत से है। हम किसी उत्पाद को कितने में बेचेंगे, मूल्य का उत्पाद की सफलता में अहम योगदान है। अगर उत्पाद कम मूल्य और अच्छी गुणवत्ता के साथ मिलता है तो लोग उसे ज्यादा पसंद करते हैं, बैंकिंग में हम इसे आरओआई से लिंक कर सकते हैं अगर हमारा इंटरैस्ट रेट डिपॉजिट में जादा होगा ओर लोन में कम होगा तो हम अपने प्रॉडक्ट को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचा सकते हैं।

**3. जगह (Place):-** जगह से तात्पर्य कस्टमर कहाँ से प्रॉडक्ट को खरीदेंगे, सही प्रॉडक्ट को सही जगह बेचना ही उत्तम मार्केटिंग का गुण माना जाता है जैसे की एक बैंक कर्मि होते हुए आप स्कूल में जाते हैं तो आपको वहाँ एजुकेशन लोन के बारे में बताना होगा, डिजिटल बैंकिंग के बारे में बताना होगा, ना की बिज़नस लोन, मोटोर्गेज लोन, ग्राहको की सुविधा अनुसार आज के इस आधुनिक युग में हम अपने उत्पादों को विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से भी लोगों तक पहुंचा रहे हैं इसे भी मार्केटिंग का उत्तम श्रोत माना गया है।

**4. विज्ञापन (Promotion):-** मार्केटिंग के इस चौथे P के अंतर्गत बिक्री, प्रचार, जनसम्पर्क जैसी कई चीजें शामिल है, आपके प्रॉडक्ट को खरीदने के लिए लोगों को पहले उसे जानना जरूरी है, उसके बारे में एक पॉजिटिव सोच जरूरी है, टीवी, मैगजीन, न्यूज़ पेपर या रेडियो पर परंपरागत तरीकों से प्रमोशन कर सकते हैं। साथ ही सोशल मीडिया प्लेटफार्म का भी उपयोग कर सकते हैं, हमें अपने प्रॉडक्ट का ज्यादा से ज्यादा प्रचार प्रसार करना होगा तभी हम अपनी स्कीम को जादा से जादा लोगों तक पहुंचा सकते हैं ओर अपने प्रॉडक्ट को बेच सकते हैं।

साथियों हमें हर पल अपने बैंक को आगे बढ़ाने के लिए और उसे हमेशा प्रॉफिट में लाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए, अपने उत्पादों की, अपनी सेवाओं की मार्केटिंग हमेशा करना चाहिए। ये जरूरी नहीं कि जब हम उस विशेष फील्ड में हो तभी मार्केटिंग करें। हम जिस संस्था से जुड़े हुये हैं वो अपने आप में ब्रांड है ओर इस ब्रांड से जुडने के बाद आप भी एक ब्रांड आइकॉन हो गए हैं इसलिए जहां भी जाएँ जिससे भी मिलें अपने प्रॉडक्ट की, अपनी सेवा की जानकारी अवश्य लोगों तक पहुंचाए। अपनी संस्था का गुणगान हमेशा करते रहना चाहिए।



**जयदेव पीपरा**  
विपणन प्रबन्धक,  
क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

07 अक्टूबर

1952 - चंडीगढ़ पंजाब की राजधानी बनी.

## भारतीय बैंकिंग का इतिहास

माना जाता है कि वैदिक युग की शुरुआत से ही बैंकिंग भारतीय समाज का हिस्सा है; केवल धन उधार से बैंकिंग में परिवर्तन महान हिंदू न्यायविद मनु से पहले हुआ होगा, जिन्होंने अपने काम का एक बड़ा हिस्सा “जमा” और “अग्रिम” के लिए समर्पित किया था और दोनों पर ब्याज की गणना के लिए नियम भी तैयार किए थे. मुगल काल के दौरान स्वदेशी बैंकरों (अमीर व्यक्ति या परिवार) ने व्यवसाय को पैसा उधार देकर विदेशी व्यापार और वाणिज्य में मदद की.

बैंकों को किसी भी अर्थव्यवस्था के स्तंभ के रूप में माना जाता है. 1991 के मध्य में विदेशी मुद्रा भंडार में कमी से लेकर 2011 में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने तक, भारत ने एक लंबा सफर तय किया है. बैंकों ने इस यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है.

लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ बैंकिंग प्रणाली और प्रबंधन में बड़े बदलाव देखे गए हैं. भारत में बैंकिंग में कई बड़े सुधार हुए हैं. ब्रिटिश काल से अपनी रचना के बाद यह एक लंबा सफर तय कर चुका है. पुरानी प्रणालियों से कई परिवर्तनों के बाद वर्तमान बैंकिंग प्रणाली लागू हुई है.

बैंकिंग क्षेत्र के विकास को तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है:-

- चरण I: प्रारंभिक चरण जो 1770 से 1969 तक चला.
- चरण II: राष्ट्रीयकरण चरण जो 1969 से 1991 तक चला.
- चरण III: उदारीकरण या बैंकिंग क्षेत्र सुधार चरण जो 1991 में शुरू हुआ और आज तक फल-फूल रहा है.

भारत का पहला बैंक “बैंक ऑफ हिंदुस्तान” था, जिसे 1770 में स्थापित किया गया था और तत्कालीन भारतीय राजधानी कलकत्ता में स्थित था. हालांकि, यह बैंक काम करने में विफल रहा और 1832 में उसका परिचालन बंद कर दिया.

बैंक ऑफ हिंदुस्तान के रास्ते पर चलते हुए, भारत में कई अन्य बैंक स्थापित किए गए. वो थे:-

- जनरल बैंक ऑफ इंडिया (1786-1791)
- अवध वाणिज्यिक बैंक (1881-1958)
- बैंक ऑफ बंगाल (1809)
- बैंक ऑफ बॉम्बे (1840)
- बैंक ऑफ मद्रास (1843)

भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान, ईस्ट इंडिया कंपनी ने तीन बैंकों की स्थापना की थी: बैंक ऑफ बंगाल, बैंक ऑफ बॉम्बे और बैंक ऑफ मद्रास और उन्हें प्रेसिडेंटियल बैंक कहा जाता था. इन तीनों बैंकों को बाद में 1921 में एक एकल बैंक में विलय कर दिया गया था, जो “इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया” कहलाने लगा. इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया को बाद में 1955 में राष्ट्रीयकृत किया गया था और इसका नाम भारतीय स्टेट बैंक रखा गया था, जो वर्तमान में सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक है.

इस पहले चरण में संयुक्त स्टॉक बैंकिंग का इतिहास धीमी वृद्धि और आवधिक विफलताओं से भरा हुआ था. 1913 से 1948 की अवधि के दौरान एक हजार एक सौ बैंक, ज्यादातर छोटे बैंक विफल रहे.

**सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया:** 1911 में स्थापित, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया पहला भारतीय वाणिज्यिक बैंक था जो पूरी तरह से भारतीयों के स्वामित्व और प्रबंधन में था. बैंक की स्थापना बैंक के संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला ने की थी. सर फिरोज शाह मेहता इस पूर्णतः ‘स्वदेशी बैंक’ के पहले अध्यक्ष थे. वास्तव में, सर सोराबजी पोचखानावाला द्वारा महसूस किए गए गर्व की सीमा इतनी थी कि उन्होंने सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया को “राष्ट्र की संपत्ति और देश की संपत्ति” के रूप में घोषित किया था.

### 08 अक्टूबर

1932 - भारतीय वायुसेना का गठन.

1998 - भारत 'फ्लाइंग सेफ्टी फ़ाउंडेशन' का सदस्य बना.



देश में लगातार बैंक विफलताओं से चिंतित भारत सरकार ने बैंकिंग कंपनी अधिनियम, 1949 अधिनियमित किया। 1965 के संशोधन अधिनियम (1965 का अधिनियम संख्या 23) के अनुसार अधिनियम का शीर्षक “बैंकिंग विनियमन अधिनियम 1949” के रूप में बदल दिया गया था। यह अधिनियम भारत में वाणिज्यिक बैंकों के कामकाज और गतिविधियों को सुव्यवस्थित करने के लिए सरकार द्वारा उठाया गया पहला नियामक कदम था। देश के केंद्रीय बैंकिंग प्राधिकरण के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक को बैंकिंग पर्यवेक्षण के लिए व्यापक शक्तियां प्रदान की गई थीं।

1947 में देश की आजादी के समय, भारत में बैंकिंग क्षेत्र अपेक्षाकृत छोटा और बेहद कमजोर था। बैंक काफी हद तक शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित थे, जो मुख्य रूप से कृषि उपज से निपटने वाले व्यापारिक क्षेत्र को ऋण देते थे। बड़ी संख्या में वाणिज्यिक बैंक थे, लेकिन ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध नहीं थीं। ऐसी सेवाओं को अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि, छोटे उद्योगों, पेशेवरों और स्व-नियोजित उद्यमियों, कारीगरों, खुदरा व्यापारियों आदि में विस्तारित नहीं किया गया था।

**चरण II: राष्ट्रीयकरण चरण जो 1969 से 1991 :** जिस समय भारत को आजादी मिली, उस समय देश के सभी प्रमुख बैंकों का नेतृत्व निजी तौर पर किया जा रहा था जो चिंता का कारण था क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित लोग अभी भी वित्तीय सहायता के लिए साहूकारों पर निर्भर थे। इस समस्या को हल करने के उद्देश्य से, तत्कालीन सरकार ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने का निर्णय लिया। इन बैंकों को बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 के तहत राष्ट्रीयकृत किया गया था। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) सहित कुल 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। वर्ष 1980 में, अन्य 6 बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया, जिससे यह संख्या 20 बैंकों तक पहुंच गई।

सरकार द्वारा बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने का निर्णय लेने के विभिन्न कारण थे-

1. प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को सक्रिय करने के लिए: बैंक तेजी से ढह रहे थे - 1947 और 1955 के बीच 361 बैंक विफल हो

गए। ग्राहकों ने अपनी जमा राशि खो दी और उन्हें पुनः प्राप्त करने का कोई मौका नहीं था।

2. एक उपेक्षित कृषि क्षेत्र: बैंकों ने बड़े उद्योगों और व्यवसायों का पक्ष लिया और ग्रामीण क्षेत्र की उपेक्षा की। राष्ट्रीयकरण कृषि क्षेत्र का समर्थन करने के संकल्प के साथ आया था।
3. शाखाओं का विस्तार: राष्ट्रीयकरण ने पूरे देश में बैंकों के अधिकतम कवरेज को सुनिश्चित करने के लिए नई शाखाओं को खोलने की सुविधा प्रदान की।
4. बचत का जुटान: बैंकों का राष्ट्रीयकरण लोगों को बैंकों तक अधिक पहुंच प्रदान करेगा और उन्हें बचत करने के लिए प्रोत्साहित करेगा, जिससे नकदी की कमी वाली अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त राजस्व डाला जा सकेगा।
5. आर्थिक और राजनीतिक कारक: 1962 और 1965 में दो युद्धों ने अर्थव्यवस्था पर जबरदस्त बोझ डाल दिया था। भारतीय बैंकों के राष्ट्रीयकरण से जमा राशि में वृद्धि के माध्यम से अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।

भारतीय बैंकों के राष्ट्रीयकरण का भारत की बैंकिंग प्रणाली पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा-

- बढ़ी हुई बचत: नई शाखाएं खुलने से बचत में तेजी से वृद्धि हुई। जैसे 1970 के दशक में राष्ट्रीय आय बढ़ी, सकल घरेलू बचत भी लगभग दोगुनी हो गई।
- बेहतर दक्षता: अतिरिक्त जवाबदेही के साथ बैंकों की दक्षता में सुधार हुआ। इससे जनता का विश्वास भी बढ़ा।
- लघु उद्योगों (एसएसआई) को बढ़ावा मिला, जिसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था में आनुपातिक सुधार हुआ।
- बेहतर आउटरीच: बैंक अब केवल महानगरीय क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं थे। शाखाएं देश के दूरस्थ कोनों में खोली गईं।
- सार्वजनिक जमा में वृद्धि: बैंकों की बढ़ती पहुंच ने छोटे उद्योगों, कृषि और निर्यात क्षेत्र को बढ़ने में मदद की। इस वृद्धि के साथ सार्वजनिक जमा में आनुपातिक वृद्धि हुई।

### 09 अक्टूबर

1876 - पहली बार टेलीफोन पर आउट वायर के जरिए दो तरफा बातचीत हुई थी।

1962 - अफ्रीकी देश युगांडा गणतंत्र बना।

- हरित क्रांति को बढ़ावा देना: हरित क्रांति, सरकार के एजेंडे में सबसे बड़ी प्राथमिकता वाले मदों में से एक, को नए राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा कृषि क्षेत्र को प्रदान किए गए समर्थन के लिए बढ़ावा मिला.

1970 के दशक में भारत सरकार को यह महसूस हुआ कि कई ऐसे समूह हैं जो अभी भी बैंकिंग प्रणाली का हिस्सा नहीं हैं, इन समूहों को शामिल करने के लिए 1982 और 1990 के बीच, भारत में वित्तीय सेवाओं के विकास के अनुरूप विशेष कार्यों के साथ बैंकिंग संस्थानों का निर्माण किया जाने लगा .

- नाबार्ड (1982) - कृषि गतिविधियों का समर्थन करने के लिए
- एक्विजम (1982) - निर्यात और आयात को बढ़ावा देने के लिए
- राष्ट्रीय आवास बोर्ड - आवास परियोजनाओं का वित्तपोषण करने के लिए
- सिडबी - लघु उद्योगों को वित्त पोषित करने के लिए

**चरण III: उदारिकरण या बैंकिंग क्षेत्र सुधार चरण :** दिसंबर 1991 में नरसिंहम समिति की पहली रिपोर्ट जारी होने के साथ अर्थव्यवस्था के खुलने के तुरंत बाद भारत के बैंकिंग क्षेत्र का उदारिकरण शुरू हो गया. तत्कालीन वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने 14 अगस्त 1991 को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के 13 वें गवर्नर एम नरसिंहम की अध्यक्षता में समिति नियुक्त की. नरसिंहम समिति ने नवंबर 1991 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की और रिपोर्ट 17 दिसंबर, 1991 को संसद के समक्ष रखी गई.

1998 में सरकार ने श्री नरसिंहम की अध्यक्षता में एक और समिति नियुक्त की. इसे बैंकिंग क्षेत्र समिति के रूप में जाना जाता है. बैठक में बैंकिंग सुधार की प्रगति की समीक्षा करने और भारत की वित्तीय प्रणाली को और मजबूत करने के लिए एक कार्यक्रम तैयार करने के लिए कहा गया. समिति ने पूंजी पर्याप्तता, बैंक विलय, बैंक कानून आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया. इसने अप्रैल 1998 में सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की .

नरसिंहम समिति ने विभिन्न सुधारों की सिफारिश की जिनमें से भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अब तक निम्न सुधारों को लागू किया गया है-

- ब्याज दरों और विनिमय दरों से संबंधित समग्र मौद्रिक नीति मुद्दे हैं, एसएलआर और सीआरआर अनुपात में कमी, पुनर्वित्त सुविधाओं में संशोधन, मौद्रिक नियंत्रण की वैकल्पिक प्रणाली का विकास लागू किया गया है.
- बैंक को निर्धारित मानदंडों तक पहुंचने में सक्षम बनाने के लिए और अधिक पूंजी लगाकर बैंकों के पुनर्पूँजीकरण का एक कार्यक्रम शुरू किया गया है. सबसे महत्वपूर्ण है बैंक ऑफ इंटरनेशनल सेटलमेंट्स (बीआईएस) पूंजी पर्याप्तता मानदंडों (सीएएन) या जिसे पूंजी से जोखिम संपत्ति अनुपात (सीआरएआर) के रूप में भी जाना जाता है, का अनुपालन करने की दिशा में कदम है.
- समिति की सिफारिश के अनुसार, आरबीआई ने बैंकिंग परिचालन को सुव्यवस्थित करने और इसे अधिक पारदर्शी बनाने के प्रयास में वित्तीय पर्यवेक्षण बोर्ड (बीएफएस) की स्थापना की है.
- आरबीआई ने बैंकों को अधिक स्वायत्तता देने के लिए कंसोर्टियम लेंडिंग व्यवस्था, वाणिज्यिक पत्र, जमा प्रमाणपत्र (सीडी) और उधार मानदंडों में बदलाव की भी घोषणा की है.
- छह महीने के भीतर वसूली मामलों के शीघ्र निर्णय के लिए ऋण वसूली न्यायाधिकरणों (DRT) की स्थापना.
- ब्याज दरों का उदारिकरण बैंकिंग क्षेत्र के सुधारों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है. ब्याज दरों को मुक्त किया जा रहा है और बैंकों को किसी भी हद तक सीडी स्वीकार करने की स्वतंत्रता दी गई है.
- एक राजकोष पक्ष, बैंकों पर प्रतिबंध कम कर दिया गया है. इससे पहले, बैंकों को प्रतिभूतियों में व्यापार करने की बहुत सीमित स्वतंत्रता रही है. इससे बैंकों को परिसंपत्ति-देयता बेमेल को ठीक करने के लिए अधिक लचीलापन दिया गया है.
- जहां तक विदेशी मुद्रा जोखिमों के प्रबंधन का संबंध है, संपूर्ण विनिमय दर जोखिम बैंकों में स्थानांतरित कर दिया गया है. इससे पहले, विदेशी मुद्रा जमा पर, आरबीआई ने विनिमय

### 10 अक्टूबर

1868 - क्यूबा ने स्पेन से स्वतंत्रता पाने के लिए विद्रोह किया.

1910 - वाराणसी में मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में प्रथम अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया था/ फिजी ने स्वतंत्रता हासिल की. / 1991 - भारत ने विश्व कैरम प्रतियोगिता का टीम खिताब जीता.



जोखिम माना.

- अक्टूबर 1997 के बाद से, विदेशी बाजारों से बैंक उधार को उदार बनाया गया है. बैंकों को अपनी टियर 1 पूंजी का अधिकतम 15 प्रतिशत तक उधार लेने की अनुमति है.

**निष्कर्ष :** भारतीय बैंकिंग का भविष्य दुर्गम चुनौतियों के बीच असीमित अवसरों के एक अद्वितीय मिश्रण का प्रतिनिधित्व करता है. एक तरफ हम वैश्वीकरण की तीव्र प्रक्रिया द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए परिदृश्य को देखते हैं जो वर्तमान में आकार ले रहा है, जो दुनिया में राष्ट्रों के समुदाय को एक साथ लाता है, भौगोलिक सीमाओं को पार करते हुए, व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में, और यहां तक कि व्यक्तियों के रोजगार के अवसर भी. ये सभी भारतीय बैंकिंग के लिए नए उभरते अवसरों को इंगित करते हैं.

पिछले कुछ वर्षों में, भारतीय बैंकों ने अपनी बढ़ती अर्थव्यवस्था

को खिलाने के लिए देश के निराशाजनक वित्तीय परिदृश्य को बदल दिया है. आज भी, इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारतीय बैंकिंग प्रणाली ही देश की अर्थव्यवस्था को बचाए रखती है. इसका एक प्रमुख उदाहरण 2016 में करेंसी नोटों का विमुद्रीकरण है. मौजूदा मुद्रा नोटों को रातोंरात ध्वस्त कर दिया गया, जिससे देश अराजकता में फंस गया. बैंकों ने देश भर के लोगों को निष्क्रिय बैंक नोटों को बदलने की अनुमति देकर अर्थव्यवस्था को झटके से उबरने में मदद की. जैसा कि भारत में बैंकिंग उद्योग का विकास जारी है, वैसे-वैसे वित्तीय विकास के लिए भूखे राष्ट्र को मजबूत समर्थन प्रदान करने की इसकी क्षमता भी बढ़ जाती है.

**आशुतोष रघुवंशी**

प्रबंधक - विधि  
क्षेत्रीय कार्यालय, त्रिची



## मोहन राकेश (8 जनवरी, 1925 - 3 दिसम्बर, 1972)



हिंदी के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न नाट्यलेखक और उपन्यासक मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी, 1925 को हुआ था। वे 'नई कहानी' आंदोलन के प्रमुख स्तंभ हैं। 'मलबे का मालिक' उनकी बहुचर्चित कहानी है। वे कथाकार के अतिरिक्त नाटककार के रूप में भी अत्याधिक प्रसिद्ध हैं। कुछ वर्षों तक उन्होंने हिंदी की पत्रिका 'सारिका' का भी संपादन किया। 'आषाढ का एक दिन' नाट्य रचना के लिए और 'आधे-अधूरे' के रचनाकार के नाते उन्हें संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 'अंधेरे बंद कमरे' उनका हिंदी का एक महत्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है, जिसका अंग्रेजी और रूसी भाषा में भी अनुवाद हुआ। 3 दिसम्बर, 1972 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

उनकी प्रमुख रचनाएं हैं : आषाढ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे (नाटक), अंधेरे बंद कमरे, अंतराल, न आने वाला कल (उपन्यास), क्वार्टर तथा अन्य कहानियां आदि।

### 11 अक्टूबर

2005 - तीसरे अंतरिक्ष पर्यटक ग्रेगोरी ओल्सन पृथ्वी पर लौटे.

### 12 अक्टूबर

1860 - ब्रिटेन और फ्रांस की सेना ने चीन की राजधानी बीजिंग पर कब्जा जमाया.

## काव्यकुंज

### कर्ण

दुर्योधन के कुकर्मों से भरी,  
राधेय कर्ण, तुम्हारी परछाई  
दुनिया झुकती है, फिर भी  
जो मित्रता आपने निभाई.

आपका कर्तव्य है विशेष  
वचन और कृतज्ञता निभाना  
हे दानशूर, आपका दातृत्व है  
जन्मजात कुंडल सहजता से छोड़ना.

रात के अंधेरे में, ए चाँद  
तुम ही तो बनते चिराग  
शौर्य, पराक्रम से उजले तुम,  
क्यूं न हो थोड़े काले दाग.

अमावस की धूमिलता से  
न डर जाता कभी चंद्रमा  
हो खड़ा प्रत्यक्ष मृत्यू,  
तुमने न खोई, अंतःचेतना

सूर्य पुत्र हो तुम, फिर भी  
भाग्य में लिखा था अंधेरा  
सत्व तत्व, वचन जो निभाए  
कर्म से छा गया उजियारा.

जीत गए तुम, अमर हो तुम  
जो भी आया मृत्यू के साथ पराजय  
प्रणाम हो, हे वीर हमारा  
हे शौर्य प्रतीक, हे मृत्यूंजय.



वसुंधरा घाणेकर  
मुख्य खजांची, मॉडैलाग्राम शाखा



### भगवान की कृपा

मैंने ताकत मांगी, और भगवान ने मुझे मजबूत बनाने के लिए  
कठिनाइयाँ दीं ।

मैंने बुद्धि मांगी, और भगवान ने मुझे समस्याओं को हल करने के  
लिए दिया ।

मैंने समृद्धि मांगी, और भगवान ने मुझे काम करने के लिए ताकत  
और दिमाग दिया ।

मैंने साहस माँगा, और परमेश्वर ने मुझे खतरों पर विजय पाने के  
लिए दिया ।

मैंने प्यार माँगा, और भगवान ने मुझे परेशान लोगों को मदद करने  
के लिए दिया.

मैंने एहसान माँगा, और भगवान ने मुझे अवसर दिए ।

मैंने जो भी चाहा वो कुछ भी नहीं मिला फिर भी वो सब कुछ  
मिला जिसकी मुझे जरूरत थी ।

मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया गया है ।



गौरव कुमार जैन  
सहायक महाप्रबंधक  
कॉर्पोरेट वित्त शाखा, फोर्ट, मुंबई

### 13 अक्टूबर

2000 - दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति किम दाई जुंग को शांति को नोबेल पुरस्कार.

2011- दफ़्तरों में इस्तेमाल होने वाले हिंदी के कठिन शब्दों की जगह उर्दू, फ़ारसी, सामान्य हिंदी और अंग्रेज़ी के शब्दों का उपयोग करने के निर्देश दिए थे. गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की सचिव वीणा उपाध्याय ने इस सिलसिले में सभी मंत्रालयों और विभागों को दिशा-निर्देश जारी किए थे.

## अपूर्णता

मैं नदी सी कलकल कर,  
तुम में आ मिलती हूँ।  
पर  
इसलिए नहीं, कि तुम मुझसे मेरी पहचान पूछो  
बेशक  
तुम सागर हो, अथाह हो  
पर  
मेरे अस्तित्व के बिना निरर्थक हो,  
तुममें और मुझमें फर्क, बस इतना है,  
कि तुम अथाह होकर भी भावनाओं से उदासीन हो,  
और मैं उदासीन होकर भी भावनाओं से अथाह हूँ।  
हां जरूरी नहीं है मेरा, तुमसे से मिलना,  
केवल इस अर्थ में मिलना कि  
मेरे मिलने से तुम पूर्ण हो जाते हो  
तो  
फिर तुम कैसे कह सकते हो कि  
तुम पूर्ण हो अथाह हो??  
तुम सदैव अपूर्ण हो, इस अर्थ में कि  
मेरे मिलने से ही तुम्हारी पूर्णता है।  
पर मेरे लिए ये अहंकार  
नहीं है कि मेरे बिना तुम अधूरे हो  
हां मेरे लिए ये पूर्णता वह एहसास है,  
जिसे तुममें पनपना अभी बाकी है

## निःशब्द

निःशब्द क्यों हूँ मैं!  
शब्दों पर ध्यान दूँ तो भावनाएं कुंठित हो जाती हैं  
और  
भावनाओं को शब्द दूँ तो शब्द कम पड़ जाते हैं,  
और  
इस दुविधा में निःशब्द रह जाती हूँ मैं।  
बहुत आसान है कागजों पर भावनाओं को बिखेर देना  
पर मुश्किल है कागजों से भावनाओं को दिल में समेटना  
चेतना के साथ की गई शब्दों के चुनाव से,  
मर्म;  
कहीं रह सा जाता है कागजों पर,  
दिलों तक नहीं पहुंच पाता।  
और  
इसी गहनता में निःशब्द रह जाती हूँ मैं,  
अंतर्मन के शोर को शब्द दे पाऊँ, वह शब्द गढ़ नहीं पाती हूँ  
और  
इसी शब्दहीनता में निःशब्द रह जाती हूँ मैं।  
सवालों के जटिलताओं में बहुत दूर तक जवाब दूँडती हूँ,  
और  
जवाबों के रिक्तियों से निःशब्द रह जाती हूँ मैं

रिंकू साव

सहायक प्रबंधक  
क्षेत्रीय कार्यालय बरपेटा



### 14 अक्टूबर

1882 - शिमला में पंजाब विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। / 1933 - जर्मनी ने मित्र राष्ट्रों के समूह से बाहर आने की घोषणा की। / 1956 - डॉ. भीमराव आम्बेडकर ने अपने 3,85,000 अनुयायियों के साथ कोचांद्रा में बौद्ध धर्म स्वीकार किया और अपने समर्थकों को 22 बौद्ध प्रतिज्ञाओं का अनुसरण करने की सलाह दी।

## वशूली प्रबंधन

1. विजय माल्या और नीरव मोदी के मामलों के बीच एक निराशाजनक समानता है. दोनों ने भारतीय बैंकों को 22,000 करोड़ रुपये से अधिक का चूना लगाया और देश छोड़कर भाग गए. यदि इस मुद्दे पर गहराई से विचार करें, तो पाएंगे कि 22,000 करोड़ रुपये की यह परिसंपत्ति बैंकों की कुल गैर-निष्पादित संपत्ति का एक छोटा सा हिस्सा है, वास्तविक रूप में यह कई लाख करोड़ रुपये के आंकड़ों में है.
2. इन एनपीए का एक बहुत बड़ा हिस्सा कॉर्पोरेट जगत की फर्मों को प्रदान किया गया है. यहाँ यह स्पष्ट कर देना अत्यंत आवश्यक है कि खुदरा उधारकर्ताओं द्वारा किए गए डिफ़ॉल्टर कि संख्या इन बड़ी शेयरधारक कंपनियों और उद्योग जगत के बड़े-बड़े घरानों कि तुलना में बहुत कम है.
3. इससे यह स्पष्ट है कि बैंकिंग सिस्टम का डिफ़ॉल्टर द्वारा शोषण किया जा रहा है. ये बेईमानी उधारकर्ता या तो बैंक की प्रणाली में विद्यमान अक्षमता का शोषण करते हैं या फिर व्यवस्था को धोखा देने के लिए बैंक अधिकारियों के साथ मिलकर इस काम को अंजाम देते हैं.
4. पिछले कुछ समय से चर्चा का विषय बनी ये गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियां अथवा एनपीए क्या है? इनके कारण देश की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ता है? साथ ही इनसे संबद्ध अन्य पक्षों के विषय में इस लेख के अंतर्गत संक्षेप में चर्चा की गई है.

### क्या है गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्ति?

1. गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियों से तात्पर्य ऐसे ऋण से है, जिसका लौटना संदिग्ध है.
2. बैंक अपने ग्राहकों को जो ऋण देता है वह उसे अपने खाते में संपत्ति के रूप में दर्ज करता है, परंतु यदि किसी कारणवश बैंक को यह आशंका होती है कि ग्राहक यह ऋण नहीं लौटा पाएगा, तो ऐसी संपत्ति को ही गैर-निष्पादनकारी संपत्तियाँ कहा जाता है.
3. यह किसी भी बैंक की वित्तीय अवस्था को मापने का पैमाना

है. यदि इनमें वृद्धि होती है, तो यह बैंक के लिए चिंता का विषय बन जाता है.

4. गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियां किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए बोज़ होती हैं. ये देश कि बैंकिंग व्यवस्था को रुग्ण बनाती है. गौरतलब है कि पिछले कुछ वर्षों से बैड लोन और बैड एसेट (खराब परिसंपत्ति) में बेतहाशा वृद्धि हुई है. विदित है कि गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियाँ, बैड लोन और बैड एसेट से ही मिलकर बनती हैं.
5. बैड लोन से बैंकों के लाभांश में कमी आती है, फलस्वरूप बैंक के लिए ऋण देना मुश्किल हो जाता है. जब बैंकों के लिए ऋण देना मुश्किल हो जाता है, तो फिर निवेश में कमी आने लगती है और जब निवेश में कमी आने लगे तो अर्थव्यवस्था कि वृद्धि दर पर प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिलता है.
6. यदि किसी बैंक ने किसी संस्था को कुछ राशि ऋण के तौर पर दी, जब बैंक ने ऋण दिया था तब तो परिस्थितियां ऐसी थी कि संस्था द्वारा ऋण राशि को चुकाया जाना आसान लग रहा था. लेकिन बाद में प्रतिकूल हालातों में संस्था ऋण चुकाने में असमर्थ हो गई.
7. यदि बैंक उसे वित्तीय संकटों से उबारने के उद्देश्य से और ऋण देता है तो इस बात का डर लगातार बना रहता है कि कहीं बाद में दिया गया ऋण भी न डूब जाए. इस प्रकार से एनपीए किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए बिगड़ल बैल के जैसा होता है.
8. स्पष्ट है कि एनपीए को पूरी तरह से खत्म करना संभव नहीं है. लेकिन दो ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें संरचनात्मक सुधार करके निश्चित रूप से इस स्थिति में सुधार लाया जा सकता है. पहल है पीएसबी का प्रबंधन करके और दूसरा जांच एजेंसी द्वारा बैंक धोखाधड़ी के मामलों को संभालने से संबंधित है.

### एनपीए का प्रबंधन कैसे किया जाए?

1. यदि लेनदारों द्वारा तय समय पर ऋण नहीं चुकाया जाता है,

### 15 अक्टूबर

1935 - टाटा एयरलाइन (जो कालांतर में एयर इंडिया बन गया) की पहली उड़ान.

1949 - त्रिपुरा राज्य को भारत में सम्मिलित किया गया.

तो बैंक ऋण के बदले गिरवी रखी गई संपत्ति को जब्त कर सकता है और फिर उस संपत्ति को बेच सकता है।

2. एनपीए कि गंभीर होती समस्या के समाधान के लिए भारतीय रिसर्व बैंक ने सामरिक ऋण पुनर्गठन योजना शुरू कि थी।
3. एसडीआर के तहत, यदि कोई कंपनी या संस्था ऋण नहीं चुका पा रही है, तो उस डिफ़ॉल्टर कंपनी के प्रबंधन में बैंक बड़ी भूमिका निभा सकता है।
4. यहाँ तक कि एसडीआर योजना के तहत बैंक, कंपनी के प्रमोटरों को भी बादल सकते हैं। बैंक, बैड लोन का पुनर्गठन भी कर सकते हैं, जिससे कि लेनदारों का उधार चुकाना थोड़ा आसान हो जाए। बैंक, गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियों को डिस्काउंट पर परिसंपत्ति पुनर्गठन कंपनियों को बेचकर भी स्वयं का ऋण चुकता कर सकते हैं।

### एनपीए के प्रबंधन में आने वाली दिक्कतें

1. परिसंपत्तियों के जब्ती के माध्यम से स्वयं का ऋण चुकता करना बैंक के लिए प्रायः फायदेमंद नहीं होता, क्योंकि जब्त कि गई परिसंपत्तियों को प्रायः कम दाम पर बेचना पड़ता है, जो कि दिये गए ऋण की तुलना में बहुत ही कम होती है।
2. गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियों के पुनर्गठन में दो समस्याएँ आती हैं। पहली, हो सकता है बैंक के प्रबन्धक अवैध तरीके से कुछ कंपनियों की गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियों का मूल्य बहुत ही कम कर दें। ताकि वे अवैध लाभ कमा सकें।
3. दूसरी समस्या यह है कि यदि गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियों को डिस्काउंट दर पर बेच जात है, तो सीधे इसका प्रतिकूल प्रभाव बैंकों के लाभांश पर देखने को मिलेगा।

### बैड बैंक क्या है?

1. एनपीए के प्रबंधन हेतु, इस लेख में बैड बैंक की अवधारणा का जिक्र किया गया है। यहाँ इस अवधारणा का आधार जाने बिना एनपीए के विषय में बात करना मुद्दे से भटकने जैसा है। आइये पहले बैड बैंक को समझते है।
2. यह एक आर्थिक अवधारणा है, जिसके अंतर्गत आर्थिक संकट के समय घाटे में चल रहे बैंकों द्वारा अपनी देयताओं को एक नए बैंक को स्थानांतरित कर दिया जाता है।

3. ये बैड बैंक कर्ज में फंसी बैंकों की राशि को खरीद लेगा और उससे निपटने का काम भी इसी बैंक का होगा।
4. जब किसी बैंक की गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियाँ सीमा से अधिक हो जाती है, तब राज्य के आश्वासन पर एक ऐसे बैंक का निर्माण किया जाता है, जो मुख्य बैंक की देयताओं को एक निश्चित समय के लिए धारण कर लेता है।

### बैड बैंक का सिद्धान्त

1. बैड बैंक, एआरसी यानी परिसंपत्ति पुनर्गठन कंपनियों की तरह काम करेगा। बैड बैंक एक ऐसा बैंक होगा, जो दूसरे बैंकों के डूबते कर्ज को खरीदेगा।
2. ज्ञातव्य है कि बैड बैंक का नाम पब्लिक सैक्टर एसेट रीहेबिलिसेन एजेंसी यानी पीएआरए होगा और यह प्रयोग जर्मनी, स्वीडन, फ्रांस, जैसे देशों में सफल रहा है। दरअसल, बैंकों (खासकर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों) की गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियाँ तेजी से बढ़ी हैं।
3. बैड बैंक के आने से दूसरे बैंकों से डूबते कर्ज को वसूलने का दबाव हट जाएगा। दूसरे बैंक नए ऋण देने पर ध्यान केन्द्रित कर पाएंगे। बैंकों को अपनी डूबते कर्ज बैड बैंक को बेचने की सुविधा मिलेगी।
4. डिफ़ॉल्टर कंपनियों की संपत्ति बेचने के काम में तेजी आएगी। बैंक अधिकारी परिसंपत्तियों की जब्ती की जगह बैंकिंग गतिविधियों को सुचारु ढंग से चला पाएंगे।

### बैड बैंक से संबंधित समस्याएँ

1. बैड बैंक की स्थापना में सबसे बड़ी समस्या बैंक में हिस्सेदारी को लेकर है। यह जानना दिलचस्प है कि समस्या निजी और सार्वजनिक दोनों ही क्षेत्रों के अधिकतम भागीदारी से है।
2. यदि बैड बैंक में सरकार की हिस्सेदारी अधिक हो तो बैंकों की गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियाँ इतनी अधिक हो गई हैं कि बैड बैंक के माध्यम से इनकी खरीद पर सरकार को उल्लेखनीय व्यय करना पड़ सकता है।
3. साथ ही, एक सरकारी बैड बैंक को उन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ेगा जिसका सार्वजनिक क्षेत्र के बैंके गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियों के मूल्य को लेकर हो सकती है।

### 16 अक्टूबर

1905 - लार्ड कर्जन द्वारा बंगाल का प्रथम विभाजन.

1959 - राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद की स्थापना.

2012 - सौर मंडल के बाहर एक नये ग्रह 'अल्फा सेंचुरी बीबी' का पता चला.



निजी क्षेत्र का बैड बैंक अपने लाभ को ध्यान में रखते हुये गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियों का मूल्य तय करेगा।

4. यदि यह मूल्य बहुत अधिक हुआ, तो बैड बैंक का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा और यदि यह मूल्य बहुत ही कम हो गया, तो बैंकों को उनकी ऋण देयता के अनुपात में राशि नहीं मिल पाएगी।

### इस समस्या का समाधान क्या हो सकता है?

आर्थिक विशेषज्ञों द्वारा इस समस्या के समाधान हेतु निम्नलिखित पक्षों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है-

1. सर्वप्रथम, शीर्ष अधिकारियों की नियुक्ति और चयन व्यवस्था में बदलाव किए जाने की आवश्यकता है। इसके अंतर्गत कार्यकारी निर्देशकों, बोर्ड के सदस्यों से लेकर अध्यक्ष तक सबके संदर्भ में बदलाव किए जाने की आवश्यकता है।
2. इस परिवर्तन का आधार यह है कि शीर्ष स्तर पर मौजूद कोई भी व्यक्ति एक संगठन को बना भी सकता है और उसे तोड़ भी सकता है। शीर्ष प्रबंधन की गुणवत्ता पीएसबी की मुख्य समस्याओं में से एक है। इसका सबसे अहम कारण यह है कि चयन प्रक्रिया में राजनीतिक हस्तक्षेप बहुत अधिक होता है, जिसके चलते एक निष्पक्ष चुनाव का विकल्प नहीं रह जाता है।
3. ऐसे में होता यह है कि राजनीतिक दबाव की स्थिति में ऐसे अधिकारी बिना किसी उचित क्रेडिट मूल्यांकन के ही अग्रिम ऋण को मंजूरी दे देते हैं। जाहिर सी बात है ऐसे बहुत से ऋण आगे चलकर एनपीए बन जाते हैं। हाल की बहुत सी घटनाओं में यह बात सामने आई है। स्पष्ट रूप से व्यावहारिक रूप से बैंकों में कोई जवाबदेही प्रणाली मौजूद नहीं है, जो एनपीए की समस्या को बढ़ावा देने में एक भूमिका निभाती है।

### वरिष्ठ कर्मचारियों को आवश्यक ट्रेनिंग उपलब्ध कराना

1. दूसरे कदम के तौर पर वरिष्ठ बैंक कर्मचारियों के लिए मूल्यांकन परियोजना के तहत, आवश्यक प्रशिक्षण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। नियमित बैंकिंग परिचालन कि अपेक्षा वित्तीय परियोजनाओं में विभिन्न तरह के कौशल कि आवश्यकता होती है। विदित हो कि आईसीआईसीआई और आईडीबीआई जैसे विकास वित्तीय संस्थानों में दृढ़ परियोजना

मूल्यांकन विभाग होते थे। बड़े-बड़े अंतर्राष्ट्रीय बैंकों में प्रत्येक उद्योग के लिए एक विशेष सेटअप होता है। जहां कर्मचारियों को लंबी अवधि के रुझानों और परियोजना की व्यवहार्यता का आकलन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

2. इसकी तुलना में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पास कौशल विकसित करने हेतु ऐसा कोई संस्थागत तंत्र होता ही नहीं है, स्पष्ट रूप से इससे दोनों प्रकार के वित्तीय संस्थानों की कार्यप्रणाली और प्रबंधन में अंतर स्पष्ट होता है। यही अंतर एनपीए जैसी बड़ी समस्याओं को आधार भी प्रदान करता है।
3. यहाँ पर अधिकांश वित्त पोषण बैलेंस शीट के माध्यम से होता है जिसकी अपनी समस्याएँ होती हैं। कुछ मामलों में यह देखा गया कि ऐसे शाखा प्रबन्धक या अधिकारी, जिनका करियर शाखा स्तर पर ही आधारित या निर्भर होता है, वे बगैर किसी विशिष्ट जांच-पड़ताल के बड़े ऋण को पास कर देते हैं। भले ही कितनी ही ईमानदारी और नेक नियति से काम का प्रबंधन किया जाए लेकिन आवश्यक कौशल के अभाव में ऋण को एनपीए में परिवर्तित होने से नहीं रोका जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि बैंकिंग व्यवस्था के प्रत्येक स्तर पर नियमित प्रशिक्षण कि व्यवस्था की जानी चाहिए।

### सतर्कता को सुदृढ़ बनाना

1. तीसरा कदम सतर्कता विभागों को सुदृढ़ करने का होना चाहिए। वर्तमान समय में पीएसबी में कोई प्रभावी सतर्कता तंत्र मौजूद नहीं है।
2. सतर्कता विभाग द्वारा केवल छोटे-छोटे मामलों के संदर्भ में कार्यवाही की जाती है, जहां कई मध्य-स्तर या जूनियर अधिकारियों को छोटी प्रक्रियात्मक चूक के लिए दंडित किया जाता है।
3. लेकिन, इसके इतर भले ही शीर्ष अधिकारियों के स्तर पर कितनी बड़ी चूक क्यों न हुई हो, सतर्कता विभाग द्वारा उनके संबंध में शायद ही कभी कोई रिपोर्ट दर्ज की जाती है।
4. स्पष्ट रूप से सतर्कता विभाग को सुदृढ़ किए जाने की दिशा में कार्य किया जाना चाहिए, ताकि प्रबंधन के स्तर पर होने वाली

### 17 अक्टूबर

1979 - मदर टेरेसा को शांति के लिये नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

### 18 अक्टूबर

1980 - पहली हिमालय कार रैली को बम्बई (मुंबई) के ब्रेबोर्न स्टेडियम से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।





चूक को समय रहते सुधार जा सके और किसी बड़ी परेशानी से बचा जा सके.

### समयबद्ध जांच की व्यवस्था की जानी चाहिए-

1. इस संबंध में चौथा कदम समयबद्ध जांच की व्यवस्था का होना चाहिए. बड़े स्तर पर एनपीए के कुछ मामले ऐसे भी जो सार्वजनिक डोमेन में हैं या जहां जान-बूझकर चूक किए जाने के प्रमाण मौजूद हैं, ऐसे मामलों को केंद्रीय जांच ब्यूरो को सौंप देना चाहिए, ताकि निष्पक्ष एवं समयबद्ध जांच की जा सके.
2. कई मामलों में ऐसा भी होता है, जहां बैंकों द्वारा कार्यवाही किए जाने में इतना अधिक समय लग जाता है कि या तो तब तक कई गवाह सेवानिवृत्त हो चुके होते हैं या फिर उनकी मृत्यु हो जाती है अथवा उस पूरे मामले को ही भुला दिया जाता है.
3. यहाँ सबसे अधिक जरूरी है कि यह अनिवार्य कर देना चाहिए कि कोई भी मामला दो साल के भीतर समाप्त हो जाना चाहिए. असाधारण (अधिक जटिल मामलों) स्थितियों में, इस समय-सीमा को तीन साल तक बढ़ाया जा सकता है.

### जवाब देही को बढ़ाना

1. पाचवा, किसी भी पीएसबी का मालिकाना हक सरकार के पास होता है और इसके प्रबंधन में भी सरकार की भूमिका बहुत अहम होती है. आम तौर पर, बैंक बोर्ड की मीटिंग में सरकार का प्रतिनिधित्व वित्त मंत्रालय के नौकरशाहों द्वारा किया जाता है.
2. यह कोई अनिवार्य घटना नहीं है कि इन अधिकारियों के पास बैंकिंग व्यवस्था से संबंधित अनुभव या ज्ञान होना आवश्यक हो. ऐसे में इनके द्वारा लिए जाने वाले निर्णय और की जाने वाली कार्यवाही की जवाबदेही का प्रश्न अहम हो जाता है.
3. इसमें कोई दो राय नहीं है कि ये अधिकारी अद्भुत व्यक्तित्व के स्वामी हों अथवा दूसरे क्षेत्रों में अनुभव असाधारण रहा हो लेकिन, जब तक ये बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के विषय में प्राथमिक सबक सीखते हैं, तब तक या तो इनकी सेवा समाप्ति का समय हो जाता है या फिर इनका स्थानांतरण हो जाता है.

### प्रतिभूति हित प्रवर्तन एवं ऋणों की वसूली के कानून एवं विविध प्रावधान (संशोधन) कानून, 2016

1. इन कानून के तहत, बैंकों को ऋण अदायगी नहीं किए जाने पर गिरवी रखी गई संपत्ति को कब्जे में लेने का अधिकार दिया गया है.
2. खेती की जमीन को इस कानून के दायरे से बाहर रखा गया है. शिक्षा ऋण की अदायगी में हुई चूक को बट्टे खाते में नहीं डाला जाएगा तथा इसकी वसूली में सहानुभूति का दृष्टिकोण, अपनाया जाएगा.
3. उपरोक्त कानून के जरिये चार मौजूद कानूनों-प्रतिभूतिकरण एवं वित्तीय संपत्तियों के पुनर्गठन एवं प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम 2002 (सरफेसी कानून), ऋण वसूली न्यायाधिकरण 1993, भारतीय स्टम्प शुल्क अधिनियम, 1899 और डिपोजीटरी अधिनियम 1996 के कुछ प्रावधानों में संशोधन किए गए हैं, ताकि ऋण वसूली की व्यवस्था को और कारगर बनाया जा सके.

### अन्य महत्वपूर्ण उपाय क्या हो सकते हैं?

1. स्पष्ट रूप से सिस्टम को बदलने की जरूरत है. इसका एक तरीका यह हो सकता है कि मंत्रालय के अंतर्गत अधिकारियों को नियुक्त करने और उन्हें बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं में प्रशिक्षण प्रदान करने का एक व्यवस्थित तरीका होना चाहिए.
2. इसके अतिरिक्त बैंकिंग व्यवस्था के तहत, पेशेवरों को शामिल किए जाने पर बल दिया जाना चाहिए, ताकि बैंकिंग कार्यप्रणाली में आवश्यक विशेषज्ञता को निहित किया जा सके.
3. अंत में नियामक के रूप में भारतीय रिज़र्व बैंक को प्रमुख भूमिका निभानी होगी. स्पष्ट रूप से यह किसी भी धोखाधड़ी की घटना के तुरंत बाद कुछ निश्चित उपायों की घोषणा करके अपनी नियामकीय ज़िम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकता है.
4. जब कभी जमाकर्ताओं के पैसे की सुरक्षा की बात आती है, तो आरबीआई के पास बैंक बोर्ड को बदलने संबंधी पर्याप्त शक्तियां मौजूद हैं. अतः इस समस्या के संदर्भ में आरबीआई की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है.

### 19 अक्टूबर

1950 - मदर टेरेसा ने कलकत्ता (भारत) में मिशनरी ऑफ़ चैरिटीज की स्थापना की.

1970 - भारत में निर्मित पहला मिग-21 विमान भारतीय वायु सेना में शामिल किया गया.

### सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए आगे की राह

1. भारत को दीर्घावधि में सार्वजनिक बैंकों को निजीकरण कर देना चाहिए. हालांकि, यह कदम आसान नहीं होगा. जैसा कि हम सभी जानते हैं एक विशाल निजी बैंकिंग प्रणाली होने की पूर्व शर्त यह है कि बैंकिंग नियमन में राज्य की सक्षमता है.
2. इस संदर्भ में देश की वर्तमान स्थिति और आवश्यकताओं को मद्देनजर रखते हुये तीन बिन्दुओं पर विशेष रूप से ध्यान देने की जरूरत है.
3. सर्वप्रथम, जहां सार्वजनिक बैंकों के पास इक्विटी पूंजी की किल्लत है वहीं उन्हें सरकार का समर्थन भी हासिल है. जिसके परिणामस्वरूप उनके पास कारोबार की कमी नहीं है.
4. ग्राहक सार्वजनिक बैंकों पर सरकार पर उनके विश्वास की मन माफिक भरोसा करते हैं. इन भरोसे के दम पर ही ग्राहकों से मिलने वाले सस्ते जमा के तौर पर बैंकों को भारी मात्रा में सब्सिडी प्राप्त होती है.
5. दूसरा, निजी बैंकों की अपेक्षा सार्वजनिक बैंकों की संगठनात्मक क्षमताएँ काफी भिन्न होती हैं. उदाहरण के तौर पर भारतीय स्टेट बैंक का संचालन काफी बेहतर तरीके से होता है, यही कारण है कि वह निजी क्षेत्र के बैंकों से भी बेहतर कार्य करता है. वहीं दूसरी ओर बहुत से ऐसे भी बैंक हैं, जिनकी प्रबंधन प्रणाली बेहद जीर्ण है.
6. तीसरी, सार्वजनिक बैंकों की तरफ से कंपनियों को दिये गए ऋण के बकाया पर काफी ध्यान दिया जा रहा है, लेकिन ये आंकड़ा को पुराने कर्ज के भुगतान और नए कर्ज के आवंटन के चक्र से निर्धारित किए जा रहे हैं. स्पष्ट रूप से इस संबंध में प्रभावी कार्यवाही किए जाने की आवश्यकता है.
7. सरकारी एजेंसियों सीबीआई, सीवीवी और सीएजी की कार्य प्रक्रियाओं में भी महत्वपूर्ण बदलाव किए जाने चाहिए ताकि वर्तमान आवश्यकताओं के संदर्भ में सार्वजनिक बैंकों की कार्यप्रणाली एवं प्रबंधन व्यवस्था को और अधिक कारगर बनाया जा सके.
8. निम्न क्षमता वाले सार्वजनिक बैंकों के संदर्भ में यह व्यवस्था की जानी चाहिए कि वह अपने बकाया कर्ज को खुली नीलामी के

जरिये बेच सके.

9. इसके लिए परिसंपत्ति पुनर्गठन कंपनियों (एआरसी) के विशेष दर्जे को खत्म करना बेहद जरूरी है, ऐसा इसलिए ताकि कोई भी वित्तीय निवेशक इन परिसंपत्तियों कि खरीद के लिए समान स्तर पर बोली लगा सके.
10. इसके अतिरिक्त, निजी इक्विटी फंड और ऋणग्रस्त परिसंपत्ति फंडों का एक बड़ा पूल तैयार किया जाना चाहिए, ताकि इन बॉन्ड या बकाया कर्जों कि खरीद में प्रतिस्पर्धा का माहोल तैयार किया जा सके. इससे सार्वजनिक बैंकों की मूल्य वसूली और अधिक बेहतर हो सकेगी.
11. अब सवाल यह उठता है कि उन कंपनियों के संदर्भ में बैंकों की क्या नीति होनी चाहिए जिनके द्वारा कर्ज भुगतान में किसी प्रकार की कोई चूक नहीं की गई है? इसके काम के लिए बैंकों द्वारा कंपनियों के खाते संबंधी आंकड़ों के आधार पर नियम बनाए हुये उन्हें कर्जदारों की सशक्ति एवं अशक्त श्रेणी में बांटा जाना चाहिए.

**निष्कर्ष :** भारत की बैंकिंग प्रणाली ऐसी चुनौती भरी पृष्ठभूमि में अपेक्षाकृत लंबे समय से कार्य कर रही है, जिसके कारण सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की आस्ति गुणवत्ता, पूंजी पर्याप्तता तथा लाभ पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है. इनके मद्देनजर सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में वैश्विक जोखिम मानदंडों के अनुरूप उनकी पूंजी जरूरतों को पूरा करने और क्रेडिट ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए पूंजी लगा रही है. लेकिन एनपीए का स्तर 7 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो जाने के कारण चिंता होना स्वाभाविक है, क्योंकि इनकी बड़ी राशि किसी काम की नहीं है. यह भी स्पष्ट है की एनपीए को कम करने का उपाय उसके मर्ज में छिपा है. बैंकों में व्याप्त अंदरूनी तथा इन खामियों का इलाज, बैंक के कार्यकलापों में बेवजह दखलंदाजी पर रोक, मानव संसाधन में बढ़ोतरी आदि की मदद से बढ़ते एनपीए पर निश्चित रूप से काबू पाया जा सकता है.

**अजीत कुमार वर्मा**  
वरिष्ठ प्रबंधक (विधि)  
क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर



### 20 अक्टूबर

1774 - कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) भारत की राजधानी बनी.

1962 - चीन ने भारत पर हमला किया और अरुणाचल प्रदेश के रास्ते भारत के अंदर तक प्रवेश की कोशिश की.



# राजा

कन्याकुमारी जिले में समुंद्र के किनारे एक छोटे से गाँव में वसुमति अपने परिवार के साथ रहती थी. वसुमति के पिता नरेश छोटी मोटी नौकरी करते थे. घर के पास ही वाले स्कूल में वसुमति पढ़ने जाती थी.

वसुमति के पिता को एक बुरी आदत थी. वे हर रोज़ शराब पीकर घर लौटा करते थे. अक्सर अपने दोस्त शंकर को भी घर लाया करते थे. देर रात तक दोनों मिलकर शराब पीते, कभी- कभी शंकर वहीं ठहर जाता. इस बात पर वसुमति के माँ - बाप अक्सर झगड़ा करते थे, पर उसके पिता के स्वभाव में कोई सुधार नहीं आया.

एक शाम जब वसुमति स्कूल से लौटी तो माँ घर पर नहीं थी. वह पूरे घर और आस-पड़ोस में माँ को ढूँढती रही, लेकिन माँ कहीं नज़र नहीं आई. रात हो चुकी थी और उसके पिता भी वापस लौटे और वो भी माँ को ढूँढने निकल गए. पड़ोस के लोग घर में इकट्ठा हुए, किसी ने सलाह दी - 'थाने में शिकायत दर्ज करो.', पर पिताजी खामोश रहे.

सुबह अखबार वाला लड़का सोनू तेज़ी से साइकल चलाते हुए आया. सोनू हाँफता हुआ बोला- 'मैंने सुबह - शहर में - यमुना दीदी को देखा - साथ में शंकर भी था. 'पिताजी एक दम स्तब्ध रह गए. वसुमति को कुछ समझ नहीं आ रहा था. पड़ोस की औरतें आपस में कुछ बोलकर हंसने लगी, फिर वसुमति के सर पर हाथ फेरकर सब अपने अपने घर चली गयीं.

नरेश एक दम खामोश पत्थर सा बैठा था. तीन चार दिन काम पर भी नहीं गया. धीरे धीरे नरेश काम पर जाने लगा और वसुमति भी स्कूल जाने लगी. स्कूल में दूसरे बच्चे वसुमति को चिढ़ाने लगे- 'तेरी माँ कहाँ है ? 'ये सुन वसुमति रो पड़ती. दिन गुज़रते गुज़रते वसुमति को यह एहसास हो गया कि उसकी माँ कभी लौट

कर नहीं आएगी.

दो साल ऐसे बीत गए. एक शाम जब वसुमति स्कूल से लौटी, तो घर में एक अजनबी औरत थी. पिता ने वसुमति को पास बुलाया और मुस्कुराकर बोले - 'अब ये ही तुम्हारी माँ है, ये तुम्हारा ख्याल रखेंगी'.

नई माँ शुरू शुरू में तो वसुमति का ख्याल रखती थी. जब उनका खुद का बेटा हुआ, तो उनके बर्ताव में बदलाव आने लगा. अब तो वह वसुमति से घर का सारा काम करवाने लगी. उसका स्कूल जाना भी बंद करवा दिया. वसुमति तो सही में घर की नौकरानी ही बन गई थी. बात बात पर सौतेली माँ वसुमति को डाँटती थी. शाम को जब पिताजी काम से लौटते तो उनसे भी वसुमति की शिकायत करती. यह सुनकर पिताजी उसे अक्सर मारा करते थे.

रविवार का दिन था. पिताजी ने वसुमति को अपने पास बुलाया. फिर बोले - 'हम एक लंबे सफर पर जा रहे हैं, अपने कपड़े वगैरह ले लो. 'वसुमति की खुशी की सीमा न थी. वह जल्दी से तैयार हो गई. घर से निकलते वक्त उसने पूछा - 'छोटी माँ और मुझे को भी ले चलते हैं'. पर पिताजी खामोश रहे.

घर से बहुत दूर कन्याकुमारी जिले के प्रांत प्रदेश में वे पहुंचे. वहाँ एक अनाथ आश्रम में पिताजी ने उसे दाखिल करवा दिया. वसुमति बहुत रोई, बहुत विनती की, पर पिताजी उसे वहाँ छोड़कर चले गए. वसुमति अब एक बात समझ चुकी थी - 'माँ - बाप के जिंदा रहते हुए वह बारह साल की उम्र में अनाथ बन गई.'

अनाथालय में सब कुछ घंटी की आवाज़ पर चलता था, सुबह उठने के लिए घंटी, खाना खाने के लिए घंटी, सोने के लिए घंटी, आदि. वहाँ कई तरह के बच्चे थे, हर दिन खूब झगड़े होते थे. पहनने के लिए कपड़े और खाना सब मिलता था लेकिन वसुमति

## 21 अक्टूबर

1934 - नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने आज़ाद हिंद फ़ौज की स्थापना सिंगापुर में की.

1945 - फ्रांस में महिलाओं को पहली बार वोट करने का अधिकार मिला.

दुखी थी. उसे हमेशा घर की याद आती थी. पिताजी कभी उससे मिलने तक नहीं आए. वह अनाथालय के पिंजरे में बंद जीवन से तंग आ चुकी थी.

तेरह साल की उम्र में एक रात वसुमति अनाथालय की ऊँची दीवार लांघकर बाहर निकली. बिना रुके वह दौड़ी - रेलवे स्टेशन की ओर. उसके पास ना पैसे थे, और ना ही कोई लक्ष्य. वहाँ खड़ी एक ट्रेन पर वह चढ़ गई और एक कोने में सिमटकर बैठ गई.

जब सूरज की पहली किरण निकली, वसुमति एक स्टेशन पर उतर गई. स्टेशन से निकलकर वह चलने लगी. चलते चलते वह काफी थक चुकी थी. भूख भी लग रही थी. वह एक चर्च के सामने रुक गई, वहाँ चर्च के आँगन में एक बुजुर्ग पादरी टहल रहे थे. वसुमति उनके पास पहुंची और अपने जीवन का सारा वृत्तांत उन्हे रोकर सुनाया. फिर उनसे विनती करने लगी - 'कृपया मुझे कोई काम दे दीजिए, मैं कोई भी काम करने को तैयार हूँ.' पादरी ने उसे गौर से देखा. वह शकल से तो सिर्फ ग्यारह साल की लगती थी.

चर्च के आँगन में एक औरत झाड़ू लगा रही थी. पादरी ने उसे इशारा कर बुलाया -

'जेनिफर, इस बच्ची को अपने साथ रख लो'. वसुमति को जेनिफर अपने घर ले गई. उसका एक छोटा सा घर था. उसका बेटा ऑटो-रिक्शा चलाता था. वहाँ उसका बेटा, बहु और दो साल का पोता भी था. वसुमति जेनिफर के कमरे में ठहरी. जेनिफर ने उसे समझाया - 'अभी तुम बहुत छोटी हो. जब सयानी हो जाओगी तो मैं तुम्हें काम पर लगा दूँगी. इसे अपना ही घर समझो.'

जेनिफर का घर तो उसे जन्नत लगा. सुबह-सुबह जेनिफर तीन-चार घरों में नौकरानी का काम करने निकल पड़ती. उसका बेटा भी गाड़ी लेकर निकल जाता. दिन भर वसुमति बहु के साथ घर के काम में हाथ बँटाती और शाम को जेनिफर के पोते के साथ खेलती थी. उस परिवार में रहकर जीवन में पहली बार वसुमति को प्यार मिला.

रविवार के दिन जेनिफर काम पर नहीं जाती थी. दोपहर को वह खाट पर लेटी आराम कर रही थी. हफ्ते भर के काम से उसके पैर सूझ गए थे. वसुमति उसके पैर दबा रही थी. बाहर किसी भिखारी की आवाज आई. उसे देने के लिए जेनिफर ने वसुमति के हाथ में एक रुपये का सिक्का थमा दिया. वसुमति उठकर दरवाजा खोली और भिखारिन को सिक्का देने लगी. 'वसु' ! भिखारिन चीख पड़ी. वसुमति ने उसे ध्यान से देखा. फटी साड़ी, बिखरे बाल और फीका चेहरा, पर अगले ही क्षण में वसुमति ने अपनी माँ को पहचान लिया.

यमुना ने उस पर घटी सारी बातें बेटी को सुनाई. शंकर उसे छोड़कर चला गया था. उसके बाद वह घर लौटी तो वसुमति के पिता ने उसे गुस्से में घर से निकाल दिया. अब वह कहीं की न रही. यमुना आँखें पोंछते हुए बोली - 'अब तो मुझे तू मिल गई, चल मेरे साथ. वसुमति की आँखों में नफरत की आग जल रही थी. वह झट से दरवाजा बंद कर अंदर चली गयी.

जेनिफर ने पूछा - 'अरे, ये क्या, भिखारिन को सिक्का नहीं दिया?', वसुमति ने धीमी व दृढ़ स्वर में जवाब दिया - 'वह तो कोई पागल औरत थी.' फिर वह जेनिफर के पैर दबाने लगी.

यमुना लड़खड़ाते पैर से वहाँ से निकली. उस बड़े शहर के फुटपाथ पर बैठकर फूट - फूट कर रोने लगी. उसके मन में बीती घटनाएँ साफ नज़र आ रही थी. शंकर के साथ घर छोड़कर भागना, फिर शंकर का तिरस्कार और पति का क्रोध. लेकिन सबसे बड़ी सजा तो उसकी बेटी ने उसको दिया था - बेटी के नफरत की आग में मानो वह भस्म हो गई थी.



**एनी जोणी**

सहायक प्रबंधक, इडप्पल्ली शाखा  
क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि

## 22 अक्टूबर

1962 - भारत की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना 'भाखड़ा नांगल' राष्ट्र को समर्पित की गई.

2008 - इसरो ने भारत के पहले चंद्रयान मिशन चंद्रयान-1 का प्रक्षेपण किया. इस मिशन से चंद्रमा पर पानी के होने का पता लगा.

2016- भारत ने कबड्डी विश्व कप जीता.



## ‘द लॉन्ग फ्राइडे’ और उसके बाद

“तेरे माथे पे ये आँचल बहुत ही ख़ूब है लेकिन  
तू इस आँचल से इक परचम बना लेती तो अच्छा था.”

- असरार-उल-हक मजाज़

**क्या** हो अगर संसार की सारी औरतें एक दिन के लिए छुट्टी ले लें तो ? क्या हो अगर केवल एक दिन के लिए सभी काम पुरुषों को करना पड़े ? यूरोप के एक देश आइसलैंड में एक बार कुछ ऐसा ही हुआ. शुक्रवार, 24 अक्टूबर 1975 दो लाख बीस हज़ार की आबादी वाला देश आइसलैंड ने यह अनुभव किया. वर्ष 1975 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने महिला वर्ष के रूप में घोषित किया. आइसलैंड के तत्कालीन पाँच सबसे बड़े महिला संगठनों ने यह तय किया कि 24 अक्टूबर को सारी औरतें हड़ताल पर चली जाएँगी. नारीवादी आंदोलन रेड स्टॉकिंग्स ने सबसे पहले हड़ताल का विचार प्रस्तावित किया. सुबह औरतें/लड़कियाँ अचानक गायब हो गईं; घर, बाज़ार, दफ्तर, कारखाने वो कहीं नहीं थी. उन्होंने उस दिन खाना नहीं पकाया, कपड़ा नहीं धोया, सफ़ाई नहीं की. अपने-अपने दूधमुहे बच्चों को दूध पिलाकर हड़ताल पर निकल गईं. ताकि उनके हमवतन पुरुषों को उनकी अहमियत समझ आये, उनके श्रम का भी सम्मान हो. उन्हें समान श्रम के लिए समान वेतन मिले, समान सम्मान मिले और समान अवसर मिले. इस एक दिन की हड़ताल ने शाम तक मर्दों को निहल कर दिया. सारे होटलों से तैयार खाना समाप्त हो गया. दफ्तर अपने-अपने पिता के साथ आए बच्चों से भर गए थे, उन बच्चों से उद्धम न मचाने की मिन्नतें की जा रही थी, उन्हें शान्त रखने के लिए उत्कोच दिए जा रहे थे. सभी कार्यस्थल या तो बंद पड़े थे या उनमें क्षमता से कई गुना कम काम हो रहा था. पूरे देश में अव्यवस्था सी फैल गई. पूरा देश उस एक दिन के लिए अपंग हो गया था. इस दिन को आइसलैंड और महिला संघर्षों के इतिहास में ‘द लॉन्ग फ्राइडे’ के नाम से जाना जाता है.

आइसलैंड की राजधानी रेक्याविक के मुख्य चौक पर पच्चीस

हज़ार औरतें इकट्ठा हुईं. सवा दो लाख से भी कम आबादी वाले देश में यह तादाद अप्रत्याशित थी. पूरे देश में कुल मिलाकर बीस जुलूस निकाले गए. सबका एक ही ध्येय महिला-श्रम को सम्मान मिले और वो भी पुरुषों के समान मिले. राजधानी रेक्याविक की ऐतिहासिक रैली में सबसे पहले एक गृहिणी ने भाषण दिया, उसके बाद दो सांसदों ने और फिर महिला संगठनों से जुड़ी दो महिलाओं ने. अंतिम भाषण स्कूलों और अस्पतालों में साफ़-सफ़ाई इत्यादि का काम करने वाली महिलाओं के संगठन की मुखिया एदलहेडर ब्यार्नफ्रेड्सडोटीर ने दिया. इससे पहले एदलहेडर ने कभी कोई भाषण नहीं दिया था, लेकिन उनकी बातों की ईमानदारी ने वहाँ मौजूद सभी को भाव-विह्वल कर दिया और अगले चुनाव में वह सांसद बनीं.

इस घटना के परिणाम दूरगामी भी रहे और निकटस्थ भी. इसके बाद जल्द ही सकारात्मक बदलाव देखने को मिला जब अगले वर्ष 1976 में आइसलैंड ने लैंगिक समानता अधिनियम लाया जिसके तहत स्कूलों और कार्यस्थलों पर औरत-आदमी के बीच लैंगिक भेदभाव को कानूनी रूप से खत्म कर दिया गया. इस घटना के पाँच साल बाद यानि 1980 में एक तलाकशुदा महिला विग्डिस फिनबोदोतिर तीन पुरुष प्रत्याशियों को हराते हुए, आइसलैंड की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनीं. विश्व इतिहास में लोकतांत्रिक ढंग से चुनी गई किसी भी देश की पहली महिला प्रमुख. अपने कार्यशैली से वह इस कदर जनप्रिय हुई कि अगले तीन में से दो चुनावों में उन्हें निर्विरोध राष्ट्रपति चुना गया. वह इस पद पर सोलह वर्षों तक रही.

आइसलैंड में महिलाओं पर केंद्रित पहला संगठन 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बना था. 1869 में, ग्रामीण इलाकों में एक महिला संघ समूह का गठन किया गया और महिलाओं की एकता पर ध्यान केंद्रित किया गया. समूह द्वारा उल्लेखित कोई विशिष्ट राजनीतिक लक्ष्य तो नहीं था, हालांकि समूह के गठन ने आइसलैंडिक संस्कृति में एक जागृति पैदा की और अन्य आंदोलनों का जन्म हुआ. 1874

### 23 अक्टूबर

1998 - जापान ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अपने पहले बैंक का राष्ट्रीयकरण किया.

1943 - नेता जी सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज की ‘झांसी की रानी ब्रिगेड’ की सिंगापुर में स्थापना की.

में, रेक्याविक में एक महिला कॉलेज का गठन किया गया था, जिसे विदेशों से महिला आंदोलनों द्वारा वित्त पोषित किया गया था. यह कॉलेज अभी भी चल रहा है. आइसलैंडिक महिला संघ, 1894 में रिक्जेविक में पहली पूर्ण राजनीतिक महिला अधिकार संगठन की स्थापना की गई थी. समूह ने समर्थन में बैठके आयोजित कीं, संसद की पैरवी की, याचिकाएँ वितरित कीं और महिलाओं के लिए वोट प्राप्त करने के लिए जोरदार प्रयास किया. उनके गठन के एक साल बाद, समूह 2000 से अधिक हस्ताक्षरकर्ताओं की संसदीय याचिका का दावा करने की स्थिति में थी. 1907 में, समूह ने 11,000 से अधिक हस्ताक्षरकर्ताओं की एक याचिका दायर की, जिस पर देश के महिला-पुरुष दोनों ने हस्ताक्षर किए. 1911 में, महिलाओं को सार्वजनिक अनुदान, सार्वजनिक कार्यालय और शिक्षा तक समान पहुंच प्राप्त हुई.

15 जून 1915 को, 40 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं ने राष्ट्रीय चुनावों में मतदान का अधिकार प्राप्त किया. 1917 में, महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिए गए. 1920 में, महिलाओं के लिए मतदान योग्यता की उम्र की बाधा को पूरी तरह से हटा दिया गया. 1915 से लेकर 1975 तक वहाँ की संसद में कुल नौ महिलाओं को चुन कर आने का मौका मिल सका. 1 फरवरी 2009 को, अपने देश की सबसे लंबे समय तक सांसद जोहाना सिगुरार्डोटिर आइसलैंड के पहले प्रधानमंत्री और दुनिया के पहले खुले तौर पर समलैंगिक प्रधानमंत्री बनी. आज वहाँ देश की संसद में 47.6 प्रतिशत सांसद महिलाएँ हैं. आइसलैंड में सार्वजनिक स्तनपान को पूरी तरह से सामान्य माना जाता है, इसका सबसे अच्छा उदाहरण उन्नुर ब्रा कोनराउददोतिर हैं जिन्होंने 2016 में संसद के दौरान अपने बच्चे को स्तनपान कराया था, जिसने अंतरराष्ट्रीय सुर्खियां बटोरी थीं.

‘द लॉन्ग फ्राइडे’ का महत्व व प्रभाव आइसलैंड तक सीमित नहीं है. यह घटना आज भी विश्वभर में महिलाओं को संगठित होकर संघर्ष करने के लिए प्रेरित कर रही है. आइसलैंडिक महिलाओं की हड़ताल ने अन्य देशों में भी महिलाओं की सामूहिक कार्रवाई को प्रेरित किया है. हाल ही में, 2016 में पोलैंड में महिलाओं

ने गर्भपात को आपराधिक बनाने के प्रस्ताव का विरोध किया और उन मामलों में भी इसे प्रतिबंधित कर दिया जहां गर्भावस्था को जारी रखने के लिए एक महिला का जीवन खतरे में होगा. प्रस्तावित विधायी प्रतिबंधों के जवाब में, प्रसिद्ध पोलिश अभिनेत्री और निर्देशक क्रिस्टीना जैन्डा ने आइसलैंडिक महिला हड़ताल की सफलताओं पर ध्यान आकर्षित करते हुए एक लेख ऑनलाइन पोस्ट किया. उन्होंने पोलिश नागरिकों से इस बात पर ध्यान देने का आह्वान किया कि 1975 में आइसलैंडिक महिलाओं ने क्या हासिल किया था और सुझाव दिया कि पोलिश महिलाएँ एक समान सामान्य हड़ताल का आयोजन करें. जांडा के पोस्ट ने एक सोशल मीडिया अभियान का नेतृत्व किया जो वायरल हो गया और सैकड़ों हजारों महिलाओं और पुरुषों को महिलाओं की राष्ट्रीय हड़ताल में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया. 3 अक्टूबर 2016 को, जैसा कि चालीस साल पहले आइसलैंड में हुआ था, हजारों पोलिश महिलाओं ने काम पर जाने से इनकार कर दिया और देश भर में रैलियां आयोजित की गईं. आइसलैंडिक मॉडल में एक नई विरोध पद्धति को जोड़ते हुए, पूरे पोलैंड में महिलाओं और पुरुषों ने उस दिन सभी काले कपड़े पहने, जिसके कारण हड़ताल को “ब्लैक मंडे” के रूप में जाना गया. तीन दिवस बाद पोलिश संसद ने हड़ताल को सफल बताते हुए प्रस्तावित विधायी परिवर्तन को खारिज कर दिया.

वर्तमान में आइसलैंड पिछले कई सालों से जेंडर आधारित समानता के इंडेक्स में दुनिया में पहले नंबर पर है. हालांकि तमाम सुधारों के बावजूद सामाजिक बराबरी और भेदभाव रहित समाज के निर्माण के लिए आइसलैंड को अभी और लंबी यात्रा तय करनी है विशेषकर एल.जी.बी.टी.क्यू.ए.आई (LGBTQAI) समुदाय के लिए.

अच्युदानन्द झा

सहायक प्रबंधक (राजभाषा)  
क्षेत्रीय कार्यालय, त्रिची



### 24 अक्टूबर

1577 - चौथे सिख गुरु रामदास ने अमृतसर शहर की स्थापना की.

1984 - कोलकाता में एस्प्लेनेड और भवानीपुर के बीच पहली मेट्रो ट्रेन (भूमिगत ट्रेन) शुरू.



# New Fields in Indian Banking Development

Indian economic environment is witnessing path breaking reform measures. The financial sector, of which the banking industry is the largest player, has also been undergoing a metamorphic change.

## THE INDIAN BANKING SECTOR

The history of Indian banking can be divided into three main phases-

1. **Phase I (1786- 1969)** - Initial phase of banking in India when many small banks were set up.
2. **Phase II (1969- 1991)** - Nationalization, regularization and growth.
3. **Phase III (1991 onwards)** - Liberalization and its aftermath.

Today the banking industry is stronger and capable of withstanding the pressures of competition. While internationally accepted prudential norms have been adopted, with higher disclosures and transparency, Indian banking industry is gradually moving towards adopting the best practices in accounting, corporate governance and risk management.

Over the long term, banks will need to pursue new sources of value beyond product, industry, or business model boundaries. The new economic order that will likely emerge over the next few years will require bank leaders to forge ahead with conviction and remain true to their purpose as guardians and facilitators of capital flows. Banks should be bold and stay ahead of the curve, proactively shape emerging forces, and envision the possibilities beyond the current fog of uncertainties.

Here are some of the upcoming new approaches in existing banking sector-

### 1) **Retail banking: Envisioning new ways to serve and engage with customers**

In the near term, retail banks will have to deal with

higher rates, inflation, and lower growth. Net interest income should grow at many banks globally, although housing market stress could temper earnings.

Retail banking customers are also expecting more from their banks. In particular, they are clamoring for a superior cross-channel experience and hands-on guidance during challenging times. These heightened demands will require banks to go beyond a product lens and create customer experiences that are data-driven, consistent across channels, and complete with personalized advice.

In the long term, banks should develop inventive new applications for ESG, embedded finance, and digital assets. These efforts should prioritize empowering customers with initiatives targeting racial equity, decarbonization, and data security.

### 2) **Consumer payments: Unlocking deeper financial relationships beyond transaction flows**

In the short term, the macroeconomic picture for 2023 portends mixed fortunes for consumer payment players. Higher rates should boost bank's net interest margins for card portfolios, but persistent inflation, depletion of savings, and a potential economic slowdown could weigh on consumer's appetite for spending.

Moreover, digital payments should accelerate and transform the payments experience on multiple fronts. Yet, where money goes, so could fraud. Digital identity is expected to evolve as a counterbalancing force to mitigate fraud risks in the long run. Meanwhile, the way money is created, stored, valued, and exchanged via digital currencies could have profound implications for consumer payments in the long term.

Issuers, card networks, acquirers, and fintechs across the value chain need to demonstrate an

## 25 अक्टूबर

1962: भारत ने अपना पहला स्वदेशी टैंक विकसित किया जिसे नाम दिया गया- विजयंत.

1951 - भारत में पहले आम चुनाव की शुरुआत हुई.

unwavering commitment to elevate their roles and become the top-of-mind choice among consumers and merchants.

### 3) **Wealth management: Creating a new recipe for greater success**

The wealth management industry is at an inflection point. Market dynamics are being shaped by multiple forces, in addition to macroeconomic conditions. Other trends, such as the democratization of advice and demographic shifts, including generational wealth transfer, are also upending established business models and existing ways of serving customers. Customers are increasingly expecting holistic advice, prompting a shift from a product focus to client-centricity. These changes, however, are coming at a time when the industry is in relatively good health.

Wealth managers need to be bold in reshaping their business models and building a franchise that's defensible, scalable, and cost-efficient. For instance, delivering holistic advice, especially to mass affluent clients across the bank, is an efficient and effective way for wealth managers to win greater wallet and mind share. Further, product optimization strategies are becoming increasingly important to win the war for assets.

### 4) **Commercial banking: Designing a new service model bolstered with insights and digital tools**

Inflation, higher rates, persistent supply chain shocks, and a potential recession portend a more stressful environment for corporates. While commercial bank net interest income should improve as central banks raise rates, banks may also be forced to raise rates on deposit products to retain clients seeking higher interest-earning opportunities.

Despite a loyal client base, commercial banks will likely face fierce competition to win a greater share of corporate client's wallets. They are demanding bespoke digital, data-rich solutions, and tailored advice. These will likely require banks to excel at a new client service model.

Meanwhile, the fight against climate change presents a massive opportunity for banks to mobilize finance to aid corporate clients' transition to net-zero carbon emissions.

### 5) **Transaction banking: Shaping the future of global money flows**

Transaction banking businesses are standing firm despite recent market uncertainties. For many banks, these divisions have been a steady source of revenues and profits. In the near term, however, macroeconomic uncertainties and geopolitical risks are expected to test their resilience. But there are some bright spots, including migration to the new ISO 200:22 standards that should help banks with richer data to achieve their digital aspirations.

In the long term, banks would have to contend with new fragmentation risks to their revenue pools and operating model. Meanwhile, the relatively slow pace of digitization can diminish future potential.

Transaction banks should focus on building a modern, efficient, scalable technology platform to provide a holistic, real-time view of client transactions, and enable insights and innovation to serve clients better.

### 6) **Investment banking: Weathering the storms with patience and ingenuity**

Investment banking businesses will likely face a unique set of challenges in 2023. In the near term, banking institutions will likely be preoccupied with how best to react to macroeconomic conditions, including divergent interest rate trajectories across the globe. Volatility across asset markets may bode well for the Fixed Income Clearing Corporation (FICC) and equities divisions. Yet, the same market unpredictability could create headwinds for prospective deal-making and underwriting and also stress capital and liquidity buffers. These dynamics are in sharp contrast to the last two years, when investment banking divisions posted record profits.

Investment banks should preserve their role

## 26 अक्टूबर

1934 - महात्मा गांधी के संरक्षण में अखिल भारतीय ग्रामीण उद्योग संघ की स्थापना.

1969 - चांद पर कदम रखने वाले पहले अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन मुंबई आये.





as capital market intermediaries in the wake of deglobalization, the rush toward a green economy, and the rise of private capital. As client demands evolve, they should also bolster customer experience by enabling front-to-back modernization. Accelerating digitization will remain key to unlocking future sources of value. Banks should also be agile and decisive in responding to the new talent dynamics and rising cost pressures. These challenges will likely test most investment banks' patience and ingenuity.

### 7) **Market infrastructure: Carving a new identity by creating differentiated sources of value**

Market infrastructure providers are increasingly being asked to provide more than the best execution, low latency, and competitive costs. Buy-side and sell-side customers now demand a bundle of services across the trading life cycle to simplify their workflows and give them a competitive edge.

The most urgent priorities for large exchanges include bringing new technologies to scale, such as cloud-enabled micro services, market data tools and analytics, and digitized trading processes. In the near term, they should work to differentiate their offerings from specialist providers through mergers and acquisitions or by developing new capabilities internally. They also need to address heightened calls for fee transparency from global regulators and prepare for the transition to a faster securities settlement cycle.

Exchanges should also seize medium- to long-term opportunities in carbon trading, crypto markets, and the mass tokenization of financial assets.

### **CHANGES COMING TO THE BANKING INDUSTRY**

Very few industries have the long history and stability the banking industry has enjoyed. Banks depend on the firm trust of their customers, and as a result, change usually takes a long time. However, in recent years, members of the banking sector have realized that evolution is necessary if they are to remain relevant in a global economy.

Following are some changes to the banking industry we expect to see in the next few years-

#### 1. **Leveraging Fintechs for a Better Customer Experience**

By working with fintechs, banks can offer their customers value-added solutions that fall outside their areas of expertise, and the appetite for such collaboration should continue increasing.

#### 2. **More Technology-Driven Consolidation**

Over the last decade, the number of banks in the U.S. has declined, but there's a lot more consolidation to come as many banks are "stuck in the middle."

#### 3. **The Advent of Digital Lending**

As digital infrastructure becomes more robust and more consumers become comfortable with online transactions, the banking industry will inevitably have to move lending services, whether business-to-consumer or business-to-business, online.

#### 4. **The Rise of Neobanking**

Expect to see the rise of mobile-based direct banks over the next five years. Neobanks are already attracting millions of customers nationwide, suggesting a consumer-preference shift from traditional, branch-based physical banking to the convenience of digital-only solutions.

#### 5. **Automated and Personalized Customer Experiences**

Banks have realized automating processes will help free up human capital to perform value-added activities, which will result in faster execution, more efficiencies and personalization of consumer experiences.

#### 6. **Block chain and Decentralized Solutions Replacing Most Banks**

The biggest change to the banking industry is being caused by blockchain-based solutions, which enable nearly instant peer-to-peer transfer of money.

27 अक्टूबर

1947 - जम्मू कश्मीर के राजा हरि सिंह ने भारत में जम्मू कश्मीर के विलय को स्वीकार कर लिया.

28 अक्टूबर

1886 - 'स्टैच्यु ऑफ लिबर्टी' का औपचारिक अनावरण.

1918 - चेकोस्लोवाकिया स्वतंत्र हुआ.

## 7. New Income from Open Banking and Data-As-A-Service

Relatively low-rate environments and commodification are squeezing traditional bank revenues. Expect dramatic business model rewrites with open banking, which creates two-sided markets like Apple's App Store to earn revenues from both consumers and developers.

## 8. Mid-Market Banks Becoming an Endangered Species

Similar to Amazon's impact on retail, the top five banks are setting the tone for what banking services customers expect. Regional banks are struggling to keep up—particularly with AI and machine learning—in terms of budget and human capital. The competitive advantage of scale is creating a growing chasm that will likely result in mid-market mergers as a means to leverage assets and talent.

## 9. The Democratization of Consumer Finance

Secure, mobile-forward solutions will continue to enable rapid, real-time “anywhere, anytime” answers to consumer needs and wants.

## 10. Better Regulation

Traditional banks will focus on taking deposits and lending for productive purposes and leave other financial services to innovative new fintech and digital organizations.

## 11. The Re-emergence Of 'Relationship Banking'

In addition to seeing some of the regulations resulting from the recession of the early 2000s being rolled back, we'll continue to see a proliferation of community banks and other smaller institutions, as opposed to the merger mania and larger banks that came on the heels of that trying economic time.

**FUTURE OUTLOOK :** We don't have 'customers' anymore. We have people engaged in the community who want to use different services. So the bank has to pivot from developing everything internally to being a curator of apps, APIs and analytics from marketplaces that gives the best overall customer experience because

a customer doesn't want to go to 200 different start-up companies and try and put that together himself, He'd much rather have a trusted branch to do that for him.

## PREDICTIONS-THE ROAD AHEAD

- The future state of Indian banking lies in the modernisation of CBS.
- Introduction of new, better and agile technologies is carving out new path of growth and optimization.
- Banking will be more lifestyle oriented and banks will look to extend their core systems to kick start growth.
- AI, Machine learning and deep learning will be employed as decision making tool.
- Block chain technology will enable revisiting of processes, procedure and internal controls to create and effective and robust sustainable structure.
- Gradual transition to transaction based lending based on cash flows of the borrower as against asset based lending for the large borrowers will emerge with lesser reliance on cash credit system as a credit delivery mechanism.
- Green and sustainable banking with an endeavour to allocate resources towards avenues that lead to environment, social and governance objectives, in line with international standards.
- Emergence of a more deep and robust corporate bond market with wider participation in line with greater requirement of alternate funding options.

**CONCLUSION :** By having focused effective governance, quickly adapting to the changing scenarios, efficient use of new techniques to assist in all aspects of banking policies and operations, we can expect a robust, stable and sustainable future road ahead for the banking industry.

**Neha Agrawal**  
Senior Manager-IT  
Government Business



## 29 अक्टूबर

2012- ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों में हिंदी और अन्य प्रमुख एशियाई भाषाएं पढ़ाने का निर्णय लिया गया.

1851 - बंगाल में ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन की स्थापना.



# ग्राहक केंद्रिकता एवं कारोबार विकास

**ग्राहक केंद्रिकता एवं कारोबार विकास-** ग्राहक केंद्रिकता एवं कारोबार विकास में ग्राहक केंद्रित का अर्थ यह है कि ग्राहक केंद्रिकता एक संगठन में लोगों की ग्राहकों की स्थितियों, धारणाओं और अपेक्षाओं को समझने की क्षमता है। ग्राहक केंद्रिकता की मांग है कि ग्राहक संतुष्टि, वफादारी और वकालत बनाने के लिए उत्पादों, सेवाओं और अनुभवों को वितरित करने से संबंधित सभी निर्णयों का केंद्र बिंदु ग्राहक है।

**व्यवसाय वृद्धि के लिए 3 'सी' -**

- ए) ग्राहक सेवा
- बी) ग्राहक संतुष्टि
- सी) ग्राहक प्रसन्नचित

अगर हमारी ग्राहक सेवा बेहतर होगी तो व्यवसाय में वृद्धि होगी एवं ग्राहकों को बेहतर सेवाएँ देने से ग्राहक संतुष्ट रहेंगे. एक संतुष्ट ग्राहक शाखा को अन्य व्यवसाय लाने में भी मदद करता है. वह अपने पास-पड़ोस में बैंक की बेहतर ग्राहक सेवाओं के बारे में बताता है.

जब हम ग्राहकों को ऐसी सेवाएं प्रदान करते हैं जिसमें ग्राहकों को अपनी अपेक्षा से अच्छी ग्राहक सेवाएं बैंक द्वारा दी जाती हैं इसे ही हम कस्टमर डिलीवरी (प्रसन्नित ग्राहक) कहते हैं. जब एक बार आपने ग्राहक को इस प्रकार की सेवाएं दी तो वह अपने संपर्क में आने वाले लोगों को बैंक द्वारा दी जा रही सेवाओं के बारे में बताता है. इस प्रकार एक संतुष्ट ग्राहक बैंक को व्यवसाय वृद्धि में सहयोग प्रदान करता है. अतः ग्राहक सेवा को हमें देखना होगा कि शाखा में हमारे काउंटर्स पर ग्राहक सेवा का क्या स्तर है.

**कुछ प्रमुख ग्राहक सेवा कौशल निम्नवत है:-**

- 1) धैर्य 2) सावधानी 3) स्पष्ट रूप से संवाद करने की क्षमता 4) उत्पादों का ज्ञान 5) सकारात्मक भाषा का उपयोग करने की क्षमता 6) अभिनय कौशल 7) समय प्रबंधन कौशल 8) ग्राहकों को पढ़ने की क्षमता.

**शाखाओं में ग्राहक 2 प्रकार के होते हैं -**

- 1) मौजूदा ग्राहक 2) नए ग्राहक

प्रत्येक ग्राहक की अलग-अलग जरूरतें और मानसिकता होती है. जिनमें ग्राहकों से संवाद करते समय उनसे निम्नवत प्रतिक्रियाएं मिलती हैं.

- 1) मुझे वह अभी चाहिए 2) मुझे यह पसंद नहीं है 3) मुझे ज्यादा अच्छी तरह पता है 4) मैं बाद में करूंगा.

मतलब हर ग्राहक की अपेक्षा का अलग स्तर होता है, तो हमको यह जानना होगा कि ग्राहक की मूल अपेक्षाएं क्या हैं.

**ग्राहक की मूल अपेक्षाएं -**

1. ध्यान देने की जरूरत है
2. समय में सेवा की जरूरत है
3. सम्मान की जरूरत है
4. स्वच्छ वातावरण
5. कर्मचारी अच्छे कपड़े पहने और अच्छा व्यवहार करें

यह आवश्यक नहीं है कि इसका तुरंत समाधान देना है. अगर यह स्टाफ की क्षमता से परे है लेकिन ग्राहक की समस्या को स्वीकार करना और आश्वासन देना कि समस्या का निश्चित समय पर समाधान किया जायेगा. इस तरह का आश्वासन देना बहुत महत्वपूर्ण है.

## 30 अक्टूबर

1945 - भारत संयुक्त राष्ट्र में शामिल हुआ./ 1956 - भारत का पहला पांच सितारा होटल 'अशोक' खुला.

1960 - ब्रिटेन में पहली बार सफलतापूर्वक किडनी ट्रांसप्लांट की गई.

हम एक बार जब इस प्रकार की मानक सेवाओं को हासिल कर लेते हैं तो अंतिम चरण कस्टमर डिज़ाईट (प्रसन्नित ग्राहक) आता है।

बैंक के ग्राहक केंद्रिकता एवं कारोबार विकास की वृद्धि एवं ग्राहकों को शाखा से जोड़ने के लिए विभिन्न माध्यम हैं जिससे बैंक की व्यवसाय वृद्धि के लिए ग्राहकों को शाखा से जोड़ने के लिए हमें लगातार प्रयास करके कार्य-योजना बनानी होगी जिससे ग्राहक केंद्रिकता एवं कारोबार विकास में सफलता होगी।

1. **प्रोडक्टों का सभी काउंटर्स पर क्रॉस-सेलिंग करना** - क्रॉस-सेलिंग के माध्यम से जहां ग्राहक कोई एक अमुख सेवा हमसे लेता है एवं साथ में हम अन्य उत्पादों, प्रोडक्टों को भी ग्राहक को बेचते हैं और बेचने का प्रयास करते हैं। क्योंकि हमारे पास मानव-संसाधन सीमित है। जिस कारण हम क्रॉस-सेलिंग के माध्यम से विभिन्न प्रोडक्टों को एक ही काउंटर से बेचते हैं या प्रयास करते हैं। इससे हमारे व्यवसाय में वृद्धि होती है।
2. **लीफलेट्स, हैण्डआउट्स के माध्यम से ग्राहकों को संदेश देना** - बैंक की मुख्य स्कीमों एवं उत्पादों के संक्षिप्त में हैण्डआउट्स, लीफलेट्स तैयार कर उनको काउंटर्स पर कार्यरत स्टाफ सदस्यों से ग्राहकों को दैनिक आधार पर हैण्डआउट्स, लीफलेट्स देने होंगे जिससे उन ग्राहकों को हमारे बैंक के विभिन्न प्रोडक्टों की जानकारी हो, क्योंकि अधिकांशतः काउंटर्स पर कार्यरत स्टाफ ग्राहकों से व्यवसाय वृद्धि हेतु इस तरह के प्रोडक्टों के बारे में चर्चा नहीं करते हैं। हम इस तरह से हैण्डआउट्स, लीफलेट्स के माध्यम से ग्राहकों को अपने विभिन्न प्रोडक्टों को बेचकर व्यवसाय वृद्धि कर सकते हैं।
3. **आस-पास संगठन एवं ऐसोशिएशन से संपर्क** - शाखा के आस-पास जो भी संगठन एवं ऐसोशिएशन है उनसे संपर्क करके बैंक के विभिन्न प्रोडक्टों को उनको उपलब्ध कराकर उनसे व्यवसाय वृद्धि की जा सकती है।

4. **प्रौद्योगिकी के साथ ग्राहकों से व्यक्तिगत रूप से जुड़ना** - हम वॉटसऐप ब्रॉडकास्ट के माध्यम से शाखा के महत्वपूर्ण ग्राहकों को विभिन्न नए प्रोडक्टों जैसे डिजिटल स्कीम, लुभावने प्रोडक्टों की जानकारी शाखा में बैठकर ही प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्रदान कर सकते हैं जिससे ग्राहकों के साथ हमारे मधुर संबंध भी बनते हैं एवं हमारी व्यवसाय वृद्धि भी होती है।
5. **पुराने ग्राहकों को पुनः बैंक से जोड़ना** - हमें पुराने ग्राहकों से पुनः पहल करके उन ग्राहकों को पुनः जोड़ना होगा ताकि ऐसे ग्राहक जो पहले हमसे जुड़े थे लेकिन किन्ही कारणों से या तो हमसे लेन-देन नहीं कर रहे हैं या कर रहे हैं तो बहुत ही कम। ऐसे ग्राहकों को जोड़ने से जहां हमारी व्यवसाय वृद्धि भी होगी और हमारे बैंक की ब्रांड वेल्यू भी अच्छी ग्राहक सेवा देने के कारण बढ़ेगी।
6. **विशेष डेस्क के माध्यम से व्यवसाय को बढ़ाना** - बैंक द्वारा समय-समय पर विभिन्न प्रकार के कैम्पों/शिविरों का आयोजन करने हेतु शाखाओं को निर्देश प्राप्त होते हैं जिनमें कासा अभियान, डिजी-पे, बीमा लॉगिन डे, रिटेल मान्सून जैकपॉट आदि विभिन्न अभियानों को चलाकर व्यवसाय बढ़ाने हेतु कहा जाता है। ऐसे कैम्पों/शिविरों के समय हमें विशेष डेस्क के माध्यम से स्टाफ को अलग से बैठाना होगा जो कि सिर्फ और सिर्फ इन्हीं प्रोडक्टों को कैनवास करे और इस तरह के कैम्पों/शिविरों को सफल बनाने के साथ-साथ इन प्रोडक्टों के माध्यम से व्यवसाय बढ़ाया जा सके।
7. **बैंक रहित क्षेत्रों का अन्वेषण करना** - शाखा के आस-पास का जो क्षेत्र है, उसमें भ्रमण कर यह पता लगाना होगा कि कौन से क्षेत्रों में बैंकिंग गतिविधियां अभी तक नहीं पहुंच पाई है या उन क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे क्षेत्रों में बिजनेस करस्पोंडेन्ट की नियुक्ति करवाकर उस क्षेत्र में 'ग्राहक सेवा केन्द्र' की स्थापना कर व्यवसाय में वृद्धि की जा सकती है।

### 31 अक्टूबर

1966 - भारत के मशहूर तैराक मिहिर सेन ने पनामा नहर को तैरकर पार किया।

1875 - सरदार वल्लभ भाई पटेल - भारत के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी एवं स्वतन्त्र भारत के प्रथम गृह मंत्री का जन्म।



बिजनेस करस्पोडेन्ट के साथ-साथ हम बिजनेस फैसिलिटेटर की भी नियुक्ति कर सकते हैं जो कि स्थानीय जनता से भली-भांति परिचित होता है। बिजनेस फैसिलिटेटर आसानी से हमारे बैंक के विभिन्न उत्पादों को स्थानीय जनता को बेच पाता है जिससे हमारी व्यवसाय वृद्धि ऐसे बैंक रहित क्षेत्रों से आती है जहां हमारी पहले पहुंच नहीं थी।

8. **स्थानीय शिक्षण संस्थानों में बैंकिंग और संबंधित विषयों पर व्याख्यान** - स्थानीय स्कूलों/कॉलेजों में समय-समय पर बैंकिंग और विभिन्न संबंधित विषयों पर वहां जाकर वहां के विद्यार्थियों, स्कूल/कॉलेज के स्टाफ को बैंक की विभिन्न प्रकार की योजनाओं एवं जानकारी से अवगत कराने से जहां एक ओर विद्यार्थियों में जागरूकता भी बढ़ती है एवं बैंक भी अपने विभिन्न प्रोडक्टों की जानकारी देकर भविष्य में मिलने वाले व्यवसाय को भी अपने पक्ष में कर व्यवसाय को बढ़ाता है।
9. **बिल्डरों, ऑटो डीलरों के साथ गठजोड़** - स्थानीय बिल्डरों, ऑटो डीलरों के साथ गठजोड़ हेतु उनके प्रस्ताव हम स्वयं बिल्डरों एवं ऑटो डीलरों के यहां जाकर लाए तो हमारे भी संबंध बिल्डरों एवं डीलरों से बने रहते हैं तथा जब इनके गठजोड़ के प्रस्ताव क्षेत्रीय कार्यालय और आंचलिक कार्यालय द्वारा स्वीकृत हो जाते हैं तो बिल्डरों, ऑटो डीलरों के ऋण प्रस्ताव हमारी शाखा को मिलने लगते हैं बशर्ते कि हमारा उनसे नियमित संपर्क रहे।
10. **बहुउद्देशीय शिविरों का आयोजन** - शाखा स्तर पर हमें विभिन्न शिविरों - क्रेडिट कैम्प, रिकवरी कैम्प आदि जैसे शिविरों में क्षेत्रीय/आंचलिक कार्यालय से क्षेत्रीय प्रबंधक/आंचलिक प्रबंधक को आमंत्रित कर साथ में स्थानीय अधिकारियों जिनमें मुख्य कार्यपालन अधिकारी/जिला पंचायत/जनपद पंचायत, तहसीलदार/नायब-तहसीलदार कलेक्टर/अपर कलेक्टर को भी आमंत्रित कर इस तरह के कैम्पों को सफल बनाकर अधिक से अधिक व्यवसाय अर्जित

किया जा सकता है। बशर्ते कि कैम्प से पहले हम ग्राहकों तक इस तरह के कैम्पों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रचार-प्रसार कर पाये तभी यह सार्थक पहल होगी।

11. **सामाजिक/धार्मिक आयोजनों में भाग लेना एवं ऑर्गनाइज करना** - क्षेत्रीय/आंचलिक कार्यालयों को ग्रामीण प्रचार-प्रसार हेतु आबंटित राशि में से अपने शाखा क्षेत्र में होने वाले विभिन्न क्रिया-कलापों, प्रतिस्पर्धाओं, कार्यक्रमों हेतु उच्च कार्यालयों से स्वीकृति पश्चात भाग लेना। इन कार्यक्रमों में बैंक का प्रतिनिधित्व करने से हमारे बैंक का प्रचार-प्रसार होता है एवं हम इन कार्यक्रमों के माध्यम से स्थानीय लोगों तक अपनी पहुंच बना पाते हैं जिससे व्यवसाय वृद्धि में सहयोग प्राप्त होता है।
12. **मेलों और प्रदर्शनियों में जाकर व्यवसाय का अन्वेषण करना** - शाखा के आस-पास समय-समय पर होने वाले विभिन्न मेलों और प्रदर्शनी बूथ के माध्यम से हम ग्राहकों को अपने विभिन्न प्रोडक्टों को उन तक पहुंचा सकते हैं। जिनकी स्थानीय लोगों को जानकारी नहीं होती है ऐसे प्रोडक्टों को हम मेलों और प्रदर्शनी बूथ के माध्यम से प्रदान कर सकते हैं।
13. **दरवाजे से दरवाजे तक अभियान के माध्यम से ग्राहकों को जोड़ना** - यदि हम कोविड-19 के समय को छोड़ दे तो डोर टू डोर अभियान आज भी ग्राहकों को बैंक से जोड़ने का एक सर्वश्रेष्ठ विकल्प है क्योंकि यहां जब हम घर-घर, दरवाजे-दरवाजे पर ग्राहकों के पास पहुंचते हैं तो ग्राहक भी बैंक के स्टाफ को देखकर अभिभूत होता है एवं हमारे विभिन्न उत्पादों से जुड़ने हेतु सकारात्मकता दिखाता है।
14. **डोर-स्टेप बैंकिंग सेवाएं प्रदान करना** - इस डोर-स्टेप बैंकिंग सेवा के तहत हम ग्राहक को उसके घर पर ही विभिन्न सेवाएं जैसे बैंक खाते में पैसे जमा करना, पैसे निकालना, चेक जमा करना आदि सेवाएं हम खुद चलकर ग्राहकों को उनके घर ही उपलब्ध कराते हैं। वरिष्ठ नागरिक जो शाखा में नहीं

### 01 नवंबर

1858 - भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटेन के शासक के पास चला गया तथा गवर्नर-जनरल की जगह अब वायसराय की नियुक्ति की जाने लगी। / 1881 - कलकत्ता में ट्राम सेवा स्यालदाह तथा अर्मेनिया घाट के बीच शुरू हुई।  
1950 - भारत में पहला भाप इंजन चितरंजन रेल कारखाने में बनाया गया। / 1973 - मैसूर का नाम बदलकर कर्नाटक किया गया।

आ सकते हैं उनको विभिन्न प्रकार की सेवाएं अर्थात् वित्तीय एवं गैर-वित्तीय सेवाएं प्रदान कर सकते हैं।

इसमें जहां एक ओर बैंक को सेवा-शुल्क के रूप में राशि मिलेगी जिससे हमारे बैंक का लाभ बढ़ेगा. साथ ही साथ, हमारी व्यवसाय वृद्धि भी होगी.

**15. मल्टी-स्टोरेज बिल्डिंग एवं वाणिज्यिक परिसरों में स्टैण्डीज/केएनओपी के साथ कैम्प लगाना-** हम सप्ताह में विभिन्न मल्टी-स्टोरेज बिल्डिंगों एवं वाणिज्यिक परिसरों में बैंक की स्टैण्डीज/केएनओपी लगाकर वहां के परिसरों में रहनेवाले लोगों के लिए बैंकिंग सुविधाओं के बारे में अवगत कराकर उनको हम अपने बैंक से जोड़ सकते हैं एवं हम अपने प्रोडक्टों को बेचकर बैंक के व्यवसाय को बढ़ा सकते हैं.

**16. विभिन्न अन्य पक्ष के साथ गठजोड़ होने पर उनका शाखा में कैम्प लगाना -** हमारे बैंक का विभिन्न कंपनियों/संस्थानों जिनमें बजाज एलियांज, टाटा एआईजी एवं भारतीय जीवन बीमा निगम से थर्ड पार्टी प्रोडक्ट्स का गठजोड़ है.

हम इन कंपनियों के एजेन्टों/कर्मचारियों को शाखा में आमंत्रित कर उनका एक कैम्प लगा सकते हैं. इन कंपनियों के एजेन्ट/कर्मचारी शाखा में आने वाले ग्राहकों को इन प्रोडक्टों के बारे

में ज्यादा अच्छे से बता पायेंगे और हमारा थर्ड पार्टी गठजोड़ होने से यह व्यवसाय बढ़ेगा जिससे बैंक के अन्य आय में वृद्धि होगी और बैंक का लाभ भी बढ़ेगा.

**17. ग्राहक बैठकों का समय-समय पर आयोजन -** शाखा में ग्राहक बैठकों का एक निश्चित समय अंतराल पर आयोजन करते रहना चाहिए. जिससे हम ग्राहकों से जुड़े रहते हैं तथा उनसे हमें व्यवसाय वृद्धि में भी सहयोग प्राप्त होता है.

ऐसी बैठकों में ग्राहक जहां हमारे द्वारा दी गई सेवाओं की गुणवत्ता के बारे में हमें अवगत कराते हैं. अच्छी सेवाओं की ग्राहक प्रशंसा भी करते हैं एवं जो उनकी तरफ से इस बैठक में सुझाव आते हैं, शिकायतें आती हैं. हमारे लिए उनकी ये प्रतिक्रियाएं हमारी ग्राहक सेवाओं को ओर बेहतर बनाने में सफल होने के साथ-साथ हम दिन प्रति-दिन व्यवसाय वृद्धि करते हैं एवं ग्राहक केंद्रिकता एवं कारोबार विकास को सफल बनाते हैं.

**घनश्याम दास अहिरवार**

संकाय सदस्य.  
एसपीबीटीसी, मुंबई



हिंदी एक जानदार भाषा है; वह जितनी बढ़ेगी देश को उतना ही लाभ होगा.

- पंडित जवाहरलाल नेहरू

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है.

- मैथिलीशरण गुप्त

**2 नवंबर**

1834 - एटलस नाम का जहाज भारतीय मजदूरों को लेकर मॉरिशस पहुंचा था जिसे वहां अप्रवासी दिवस के रूप में मनाया जाता है.

**3 नवंबर**

1943 क्रिस्टोफर कोलम्बस ने डोमिनिका द्वीप की खोज की.



## वसूली प्रबंधन

**आ**ज की अर्थव्यवस्था में बैंकिंग क्षेत्र अपनी अहम भूमिका निभाता है। जब बैंक अपने ग्राहकों से कर्ज की वसूली नहीं कर पाते तो वह राशि नॉन परफॉर्मिंग एसेट्स यानि एनपीए में चली जाती है। आज बैंकों में जिस तरह एनपीए यानि गैर निष्पादक आस्तियाँ तेजी से बढ़ रही हैं, बैंकिंग जगत के लिए यह चिंता का विषय है। इसी एनपीए में बढ़ोतरी के कारण सरकार ने बैंकों पर आर.बी.आई. द्वारा पीसीए लागू करने का संकेत दिया हुआ है। आज चाहे सरकारी बैंक हो या प्राइवेट बैंक सभी एनपीए हेतु उचित प्रबंधन कर रहे हैं। बढ़ते हुए एनपीए को वश में रखने एवं कम करने हेतु वसूली प्रबंधन करना अत्यंत जरूरी है।

बैंक का मुख्य कार्य है जमा संग्रहण करना एवं ऋण प्रदान करना। इसी जमा संग्रहण में से विभिन्न क्षेत्रों में ऋण प्रदान करना। बैंक जो ऋण प्रदान करते हैं उसकी जमा राशि जमाकर्ताओं की होती है। बैंक का यह उत्तरदायित्व है कि जमाकर्ताओं की राशि सुरक्षित रखे। हमें अपने बैंक से ऋण वितरण करने से पहले बहुत सावधानियाँ रखनी चाहिए। ऋण देना काफी सरल है लेकिन उस ऋण का भुगतान होना उतना ही कठिन है। बैंक में ऋण हेतु कई योजनाएँ हैं जैसे- आवास ऋण, एजुकेशन ऋण, कृषि ऋण, वाहन ऋण इत्यादि। ऋण देने से पहले उधारकर्ता की पहचान से लेकर उसकी सम्पत्तियों का विवरण, उसके आय का स्रोत आदि की जाँच की जाती है।

उधारकर्ता के खाते को एनपीए में परिवर्तित होने के पूर्व विभिन्न एसएमए के पैरामीटर (0 से 2 तक) में रखा जाता है। जब उधारकर्ता का खाता एसएमए शून्य में रहता है तब से ही सही तौर पर प्रबंधन कर हमें वसूली कर लेना चाहिए। यह हम अभी से

फॉलो अप करेंगे तो वह खाता एसएमए 3 में कभी भी परिवर्तित नहीं होगा। इसलिए हमें सही वक्त से फॉलो अप करना जरूरी है। किसी भी व्यक्ति या कंपनी को ऋण देते समय बैंक को सजग रहना चाहिए। उधारकर्ताओं के दस्तावेज की सही जाँच करनी चाहिए। अगर खाता एनपीए हो गया है तो वसूली की प्रक्रिया समय से करनी चाहिए। उधारकर्ता के ऋण दस्तावेजों की भी एक समय सीमा होती है। इस समय सीमा के अंतर्गत वसूली आरंभ नहीं की गई तो वसूली प्रभावित हो सकती है।

वसूली प्रबंधन हेतु बैंक ने विशेष तौर पर एक अभियान चलाया था जिसका नाम था “मिशन रिकवरी”। इस अभियान के तहत शाखाओं के उन उधारकर्ताओं की सूची बनाई गई जो रिकवरी के दायरे में आते हैं। इस मिशन के तहत शाखाओं को स्टाफ सदस्यों के साथ मिलकर वसूली करने के लिए रणनीति तैयार करने हेतु कहा गया। जिसमें उधारकर्ताओं को पहले पत्र भेजा गया। उधारकर्ताओं के ऋण दस्तावेजों को देखा गया जिसमें उनके फोन नंबर तथा पते एवं गारंटी देने वाले की जानकारी है। दिए गए पते पर जाकर व्यक्तिगत रूप से उधारकर्ताओं को मिलना तथा उस पते पर यदि उधारकर्ता नहीं मिले तो आस पास के लोगों से पूछताछ करके पता लगाना। मिशन वसूली के योजना के तहत बैंक द्वारा उधारकर्ता को वसूली की अंतिम रकम का एक ऑफर लेटर देना ताकि छूट के फायदे से पुराना चला आ रहा ऋण खाता बंद हो सके। वसूली अभियान के अवधि के दौरान उधारकर्ताओं से संपर्क बनाए रखना चाहिए ताकि समय-समय पर उधारकर्ता अपने ऋण खाते में पैसे जमा कर सकें।

मिशन रिकवरी अभियान के तहत अच्छे परिणाम आने शुरू हुए।

### 4 नवंबर

2008- चन्द्रमा के लिए भारत का पहला मानवरहित अंतरिक्षयान चन्द्रयान-1 चन्द्रमा के अंतरिक्ष कक्ष में पहुँचा।

2008- बराक ओबामा अफ्रीकी मूल के पहले अमेरिकी राष्ट्रपति बने।

लोगों ने अपने ऋण खाते बंद किए. उधारकर्ताओं को कोर्ट मुकदमे की चिंता नहीं रही. स्टाफ सदस्य ऋण खाता धारकों के घर जाकर उनसे रुबरु होते थे. इस अभियान के बारे में जानकारी देते थे. इस अभियान के तहत ओटीसी (विशेष एकल समझौता) की भी जानकारी देते. परिणामस्वरूप ग्राहकों में जागरुकता आई एवं वे अपने एनपीए खातों को बंद करने का प्रयास करने लगे. शाखाओं द्वारा वसूली हेतु वसूली कैम्प भी आयोजित किए गए.

अगर खाता एनपीए हो गया है तब निम्न वसूली प्रक्रिया को अपना सकते हैं.

- 1) लोक अदालत के लिए पहल करना- यह एक न्यायिक प्रक्रिया है. जिसमें छूट के साथ त्वरित समाधान कर खाते को बंद किया जाता है.
- 2) डीआरटी में रिकवरी सूट फाइल करना- डीआरटी के पास प्रतिभूतिकरण अधिनियम के तहत उनके द्वारा की गई कार्रवाई के लिए उधारकर्ता या बंधक द्वारा सुरक्षित लेनदारों के खिलाफ दायर आवेदनों पर निर्णय लेने की शक्ति है. इसकी प्रक्रिया बहुत लंबी है जिसके परिणामस्वरूप लंबित मामलों की संख्या अधिक है.
- 3) सरफेसी में रिकवरी सूट फाइल करना - सरफेसी यानि securitization and Reconstruction of Financial

Assets and Enforcement of Security Interest Act (SARFAESI). इस प्रक्रिया में न्यायिक हस्तक्षेप से बचा जा सकता है.

- 4) इंसोल्वेंसी एंड बैंककरप्सी 2016 - बैंक में ऋण वसूली प्रक्रिया में होने वाली बाधाओं को दूर करने हेतु इंसोल्वेंसी एंड बैंककरप्सी कोड बिल पेश किया गया जो 2016 में लागू हुआ.
- 5) वसूली प्रमाणपत्र जारी करना
- 6) समझौता यानि ओ.टी.एस. (एक बार समाधान योजना) इत्यादि.

जिस प्रकार हर समस्या अपने आप में एक समाधान रखती है उसी प्रकार एनपीए की समस्या का भी समाधान है. आवश्यकता है कि हर कर्मचारी को एनपीए कम करने हेतु अपना पूर्ण सहयोग देना चाहिए.



**वीरेंद्र कुमार**  
मुख्य प्रबंधक,  
मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय

अरुण यह मधुमय देश हमारा।  
जहाँ पहुँच अनजान क्षितीज को मिलता एक सहारा।  
(‘चन्द्रगुप्त’) - प्रसाद

### 5 नवंबर

2013 - भारत ने अपने पहले मंगल ग्रह परिक्रमा अभियान (एमओएम) के लिए ध्रुवीय रॉकेट को 5 नवम्बर, 2013 को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से सफलतापूर्वक प्रक्षेपित करके इतिहास रच दिया.



# चंद्रखनी पास ट्रेक

मई 2018 में संदकफू गुरदम, पश्चिम बंगाल में किए गये एक सुंदर ट्रेक के बाद, 'निसर्ग मित्र ट्रेकर्स ग्रुप' के हमारे नियमित ट्रेकिंग सदस्यों के दोस्तों ने फैसला किया कि इस साल यानी 2019 में, वाईएचआई, (यूथ हॉस्टल एसोसिएशन) द्वारा आयोजित 12190 फीट की ऊंचाई पर एक बहुत ही खूबसूरत चंद्रखनी पास नाम का ट्रेक करेंगे. दरअसल हम सारपास ट्रेक करने जा रहे थे लेकिन चूंकि सभी सीटें पहले से भर चुकी थीं, इसलिए हमने चंद्रखनी पास ट्रेक करने का फैसला किया. लेकिन बाद में यूथ हॉस्टल ने सारपास 2 नाम से दुसरा ट्रेक घोषित किया, लेकिन तब तक हमारे चंद्रखनी पास ट्रेक की पूरी बुकिंग हो चुकी थी.

हमारे ग्रुप के सभी साथियों से फोन पर चर्चा के बाद ग्रुप बनाया गया. 15 लोग तैयार हो गए, उनमें से कुछ निजी कारणों से नहीं गए और 10 लोग अभियान पर जाने के लिए तैयार हो गए, जिनमें मैं, त्रिवेणी, गायत्री, संगीता, अरुंधति, अरुंधति के पुत्र संकल्प, महेंद्र, राजेश और उनकी पत्नी रेखा शामिल थे. 14 मई से 22 मई 2019 तक यूथ हॉस्टल के साथ 9 दिन का चंद्रखनी पास ट्रेक का बुकिंग हुआ. मुंबई दिल्ली और वापसी की रेलवे बुकिंग हो गई और आगे दिल्ली से मनाली बस बुकिंग कन्फर्म हो गई. एमबीबीएस/एमएस डॉक्टर द्वारा मेडिकल टेस्ट कराने और सर्टिफिकेट लेने के बाद, अपने साथ ले जाने वाली चीजों की सूची, ट्रेक के लिए छोटी और बड़ी खरीदारी, फोन पर चर्चा करते-करते हो गई, इसके लिए चंद्रखनी पास 2019 नाम से एक व्हाट्सएप्प ग्रुप बनाया गया. 2019 में वाईएचआई अपने 48 साल की सफलता पूर्वक सेवा पूरी करने जा रही थी.

प्रत्येक हिमालयन ट्रेक से पहले, हम सहाद्री के लिए कम से कम एक प्रैक्टिस (सराव) ट्रेक करते हैं, जो ट्रेकर्स के लिए जरूरी होता है, और हमने इस बार भी ऐसा किया. योजना के अनुसार हम मुंबई से दिल्ली के लिए रवाना हुए. दिल्ली से अगला सफर बस से होना था. हमारा बेस कैम्प 15 माईल नाम से कुल्लू शहर में स्थित था. हमने रात भर बस से यात्रा की और सुबह हम बल्लूज कैम्पे बस

स्टॉप पर उतरे जो कुल्लू से लगभग 20 किलोमीटर दूर है. सफर की थकान तो महसूस हो रही थी लेकिन उत्साह उससे कहीं गुना ज्यादा था.

15 माईल्स बेस कैम्प से दिल्ली, चंडीगढ़, पंजाब, हरियाणा जैसी कई बसें रोजाना आती-जाती हैं. यहां से सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन अंबाला है, यानी चंडीगढ़ के पास. निकटतम हवाई अड्डा भुंतर है. सुबह आठ साढ़े आठ बजे बेस कैम्प पहुंचे, सेब के बाग, खुली जगह में बहुत सारे टेंट, दूर-दूर तक फैली बर्फीली पहाड़ियां, ठंडी सर्द हवा और हिमाचल की सुबह का हरा-भरा नजारा, सारा माहौल लाजवाब. सब थकान दूर करनेवाला अनुभव था. रजिस्टर में नाम दर्ज किए गए और हमारा सामान हमें दिए गए टेंट में हमने अपनी-अपनी जगह पे रखा. ठंडे पानी से स्नान हुआ. फ्रेश होने के बाद गरमागरम चाय और नाश्ता हमारा इंतजार कर रहा था, उसका आनंद उठाया.

हम दुसरे दिन अभ्यास के लिए जाने वाले थे, लेकिन चूंकि आज हम बहुत जल्दी आ गये थे, कैम्प लीडर ने अभ्यास और अभिविन्यास एवं अन्य सभी निर्देशों के बाद कल जाने वाले बैच के साथ हमें भेजने का फैसला किया. चंद्रखनी पास 12190 फीट की ऊंचाई पर है और शिवालिक रेंज के सबसे खूबसूरत ट्रेक में से एक है. हमें ओरिएंटेशन में बताया गया कि ट्रेकिंग ग्रेड मध्यम है और हमारा ट्रेक रोजाना लगभग 04 से 06 घंटे का है. हम कल सुबह निकलने वाले थे इसलिये उसी रात हमने सामान को विभाजित कर दिया और इसे वाईएचआई द्वारा हमें दिए गये सैक में पैक कर दिया और शेष सभी सामान को लॉकर में रख दिया.

एक जल्था शाम को ट्रेक पूरा करके आया था. उनके लिए कैम्प फायर नाम से एक प्रशंसा समारोह आयोजित किया जाता है. इसमें उनके अनुभव हमने सुने. इसमें हर कोई अपने अंदर के प्रतिभाओं को दिखाने की कोशिश करता है. बहुत मज़ा आता है. ऊन ग्रुप से हमें पता चला ऊपर बहुत वर्षा हो रही है. कई लोगों के कपड़े

## 6 नवंबर

- 1943 - दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जापान ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को अंडमान और निकोबार द्वीप समूह सौंपे.
- 2000 - ज्योति बसु ने लगातार 23 वर्षों तक पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री रहने के बाद पद छोड़ा. / 1860 - अब्राहम लिंकन अमेरिका के सोलहवें राष्ट्रपति चुने गए. / 2000 - ज्योति बसु ने लगातार 23 वर्षों तक पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री रहने के बाद पद छोड़ा.

कीचड़ से भरे दिखाई दे रहे थे. बेस केम्प में भी थोड़ी- थोड़ी निरंतर बारीश हो रही थी और थंड भी बढ़ गई थी.

आज हम पहले हायर केम्प के लिए रवाना होने वाले थे. तालियों और अभिवादन के बीच हमें वाईएचएआई के पारंपरिक रूप से हरे झंडे से विदाई दी गई. हमें ले जाने वाली बस चांसरी गांव में 6591 फीट पर छोड़ आयी. हमने अपना बैग पीठ पर चढ़ाया और गाइड के पीछे चलने लगे. आज हम 7930 फीट के पहले ऊंचे कैम्प सोला टंकी पहुंचने वाले थे. सब रास्ता पूरा चढ़ाई वाला था. लेकिन सीढ़ियों से बनी कच्ची पगडंडी थीं. सुबह का वातावरण खुशनुमा होने के कारण चढ़ाई करना मजेदार अनुभव था. घने जंगल और ठंडी हवा के कारण कोई दिक्कत नहीं हो रही थी. हमारा लंच पॉइंट बिजली महादेव था. लगभग 4 किमी की दूरी तय करने के बाद अपनी गति के अनुसार 2 से 3 घंटे में 7913 फीट पर पहुंच गये. सुंदर बिजली महादेव मंदिर और आसपास, समतल घास के मैदान, दूर से चमकती बर्फ से ढकी चोटियां, एक सुंदर पिक्चर प्रेम थी. चलने की सारी थकान दूर हो गयी. पराठें और स्वादिष्ट आचार हमें लंच पैक के रूप में दिया गया. थोड़ा आराम करने के बाद ढेर सारी फोटोग्राफी, मोबाइल और दो आँखों में प्रकृति को समेटे, पीठ पर सैक लेकर हम आगे बढ़ गए. गाइड ने कहा कि अब आगे का रास्ता सीधा है और घने जंगल से होकर जाएगा इसलिए हम तेजी से जा सकते हैं. आज हमारा पहला पड़ाव 7930 फीट पर 'सोला टैंक' नामक था. हम दो घंटे के अंदर ही वहां पहुंचने वाले थे. सचमे रास्ता बहुत अच्छा था. घने जंगल, ऊंचे देवदार के पेड़ और नीचे मनमोहक कुल्लू घाटी. बेहद खूबसूरत नजारा था. कैम्पसाइट बहुत शांत और स्वच्छ थी. कैम्प लीडर ने वेलकम ड्रिंक के साथ हमारा उत्साहपूर्वक स्वागत किया.

हमें दिए गए टेंट में सामान रखने और कपड़े बदलने के बाद हम एक बार फिर फोटो सेशन, चैट और नए परिचितों में मशगूल हो गए. चाय-नाश्ते के बाद ठंड होने के बावजूद कोई भी टेंट में नहीं जाना चाहता था. गाने और खेल में हर कोई खो गया. इतना कि लीडर सर को सीटी बजाकर खाना खाने की याद दिलानी पड़ी. सभी ने अपने अपने घर पर फोन किया और थोड़ी बातचीत की. खाना खाने के आधे घंटे बाद यानी सात बजे के बाद हम अपने अपने टेंट में स्लीपिंग बैग ओढ़कर आपस में धिरे स्वरमे बातें करते

करते सो गये.

सुबह जल्द निंद खुली, ब्रश किया और फ्रेश होकर चाय पी. फिर बैग भरकर नाश्ता करने के बाद पैकड लंच अपने साथ लेकर कैम्प लीडर को धन्यवाद देकर आगे बढ़ें. हमारा आज दुसरा पड़ाव था. माउंटिनाग (9187 फीट) यह कैम्प साईट भी कल के जैसी ही थी, 7 किलोमीटर की चढ़ाई-उतरना, कभी एक पांव का रास्ता तो कभी सुंदर पगडंडी बड़ा मजा आ रहा था. हमारे दोनों गाइड बहुत अच्छे नौजवान थे. वह मुश्किल जगहों पर सबकी मदद करते थे. थोड़ी देर बाद हम ब्रिंगटा-टॉप (7273 फीट) पहुँचे. हमारा लंच पॉइंट एक खुले घास के मैदान में था. हमें वहाँ से हिमालय के बर्फाले शिखर माथे बहुत करीब से दिखाई दे रहे थे.

दोपहर का भोजन करने और थोड़ा आराम करने के बाद हम चलने लगे और 3 बजे तक माउंटिनाग पहुँच गए. यहां हमारी कैम्प लीडर एक थाने की सरकारी महिला अफसर थीं. उनसे मराठी में बातचीत हुई. हमेशा की तरह शर्बत, थोड़ी देर के बाद गरमागरम चाय-नाश्ता और उसके बाद गरमा गरम सूप से भरा एक बड़ा मग और फिर गरमा-गरम खाना छोले-पूरी-खीर-चावल- सलाद. यहा लागातार बारिश हो रही थी. हर तरफ कीचड़ था. कोई भी टेंट से बाहर भी नहीं निकलना चाहता था. बारीश की वजह से भरपूर ठंड थी. लेकिन खाने के लिए बाहर जाना ही पड़ता है. टेंट में खाना वर्जित है. रात के खाने के बाद, एक घंटे तक बातें करने के बाद, मैंने अपना बैग पैक किया और सो गयी. हमारे कैम्प साईट पर नाग देवता का एक छोटा मंदिर था.

आज का तीसरा ऊंचा कैम्प उबला थाच (9793 फीट) था. चाय और नाश्ते के बाद और हमारे तैयार होने के बाद मैडम ने हमें विदा किया, उनका धन्यवाद करते हुए हम अपने अगले कैम्प के लिए निकल गए. हमें पहले बताया गया था कि हमें रोजाना 7 से 8 कि. मी. यानी 6 से 7 घंटे चलना होगा. अब एक ओर से ब्यास घाटी और दूसरी ओर से पार्वती घाटी दिखाई दे रही थी. हर जगह हरी घास के खेत थे और स्थानीय लोग उनके चरवाहों को चरा रही थीं. यहां के लोग पहाड़ियों में अपना जीवन व्यतीत करने से पतले और सादगी से भरे होते हैं. आज का कैम्प पिछले कैम्पों से बेहतर था. शामको जैसे आसमां नीचे उतर आया था. मानो आसमान में

## 7 नवंबर

1876 - बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने बंगाल के कांतल पाडा नामक गाँव में वन्दे मातरम् गीत की रचना की.

1951 - जार्डन में संविधान पारित किया गया.



रंगों का इंद्रधनुष इधर उधर भागते हुये दिखाई दे रहा था. बादल, ठंडी हवा बहुत सुंदर वातावरण था. घर की बहुत याद आ रही थी. मोबाइल फोन का रेंज नहीं था. इस कैम्प के लीडर दिल्ली में सरकारी सुरक्षा विभाग से थे और सख्त लग रहे थे. लेकिन कभी-कभी कैम्प में आये यंग कंपनी पर अंकुश लगाने के लिए ऐसा उनको रहना पड़ता है. सर ने हमारा वेलकम सत्र बहुत अच्छे से लिया, उनका महाभारत, रामायण का बहुत गहरा अभ्यास था. रात को अच्छा भोजन हुआ, कड़कड़ाती ठंड में पेट में गर्म भोजन के बाद कुछ देर बाद आंखें अपने आप बंद होने लगीं. सुबह हमेशा की तरह गरम गरम चाय, भटूरे-आलू की पतली सब्जी और अचार खाकर कैप लीडर सर को धन्यवाद देते हुए हम आगे के ट्रेक के लिए निकल पड़े.

आज हमारा चौथा उच्च पड़ाव दोहरा नाला जो 10692 फीट पर था. 8 किमी की दूरी का मतलब 6 से 7 घंटे पैदल चलना था. रास्ता बहुत कठिन था और घने जंगल से होकर गुजरता था. हम एक के बाद एक चलते गए और एक खुली जगह पर आ गए जो हमारा लंच स्टॉप था. पैकड लंच किया और थोड़ा किया. हर लंच पॉइंट पर आपको स्थानीय लोगों द्वारा बनाया गया ऑमलेट, मैगी मिल जाता है, इसे बहुत से लोग खाते हैं, इस वजह से वहां के लोग भी कुछ पैसे कमाते हैं. दोहरा नाला कैम्पसाइट एक छोटी नदी के तट पर बनाया गया था. वाशरूम के लिए एक बड़े पत्थर के ऊपर से कूदकर नदी पार करनी पड़ती थी. नदी का बर्फीला पानी हाथ में लेने में दिक्कत हो रही थी. इस कैम्प के लीडर गुजरात से थे और पिछले 'केदारकांता' ट्रेक के दौरान एक ट्रेक पर हमसे मिले थे. उन्हें दोबारा देखकर बहुत अच्छा लगा. रात के खाने में इतने उंचाई पर उन्होंने हमें गुलाबजामुन खिलाकर बहुत ही प्यारा सरप्राइज दिया. उस दिन एक लड़की का बर्थडे था, सभी ने मिलकर उसे बहुत अच्छे से सेलिब्रेट किया. उस दिन रात सात बजे के बाद बर्फबारी शुरू हुई और तापमान शून्य से भी नीचे चला गया. बहुत ही ठंड थी. लेकिन वाईएचएआई द्वारा हमें दिया गया स्लीपिंग बैग बहोत गर्म था. इसलिए सभी अच्छे से निंद ले पाये. लेकिन मेरा एक सामान्य अनुभव है, समिट के पहले एक रात मुझे ठीक से नींद नहीं आती, कल का दिन क्या होगा, जिसके लिए मैं इतनी दूर से आई हूँ? क्या यह टास्क मेरे द्वारा पूरा किया जाएगा, मुझे खुद

पर विश्वास जरूर है लेकिन इसके अलावा और भी चीजें हैं, जैसे लगातार बदलने वाला हिमालय का वातावरण.

जब मैं सुबह उठी तो टेंट के बाहर दो ढाई फीट बर्फ जमा हुई थी. नदी का पानी बहुत ठंडा था. गरमा गरम चाय आज टेंट में ही दी गई. नाश्ते के बाद पैक लंच साथ ले लिया. कैप लीडर साहब को धन्यवाद देने के बाद आज हम शिखर समिट के लिए निकले. सर ने पहले ही बताया था कि रात भर की बर्फबारी के कारण बहुत फिसलन होगी इसलिए सावधान रहें. शुरुआत में हमने नदी की उपर जमे हुए बर्फ पर धिरे धिरे चलना शुरू किया. आज का ट्रेक 14 कि.मी. का था. और आठ घंटे से जादा चलना था. जिसमें कठिन चढ़ाई और फिर कठिन उतरन थी. इसलिए सुबह हम जल्दी निकल पड़े. पैर बर्फ पर खूब फिसल रहे थे. लेकिन साथ चलनेवाले नौजवान और गाइड सबकी बहुत मदद करते थे. चार घंटे के बाद हम अपने शिखर पर पहुँचे, एक बड़े पहाड़ की एक बहुत ही सुंदर तस्वीर, जिसके चारों ओर एक समतल सतह और चारों ओर बर्फ, गहरी घाटियाँ और आगे बर्फ की ऊँची चोटियाँ. वहा मोबाईल को रेंज थी तो सभी ने वहीं से घर पर वीडियो कॉल की. कॉफी और कुछ पेटपूजा के बाद हम तुरंत आगे बढ़े. पैर नहीं निकल रहा था. फोटो सेशन खत्म होने का नाम नहीं ले रहा था, लेकिन गाइड जल्दी जल्दी करने लगा. अब काफी कठिन उतराई और लंबी दूरी तय करनी थी. भले ही हम भारी मन से निकल पड़े, लेकिन हिमालय में कहीं भी बहुत देर तक रुकना खतरनाक साबित होता है, निसर्ग अपना रूप कब बदलेगा पता नहीं. तेज हवाएं, बर्फबारी कभी भी हो सकती है. अभी नीचे खोल खाई और एक एक आदमी चल सकता है एसी परिस्थिती थी.

अब पूरा उतरना था. हमारा 5वां ऊंचा कैम्प नया टापरू (9970 फीट) होगा और वहां पहुंचने का रास्ता चंद्रखनी पास होकर जा रहा था. हम सब एक के बाद एक चलने लगे और एक ऐसी जगह आ पहुँचे जहाँ तक नज़र जा सकती थी बर्फ से लदे पहाड़ थे. सामने से दूसरे एक ट्रेक से आ रही एक टीम भी दिखाई दे रही थी. मैं, गायत्री और त्रिवेणी तीनों ने उस आइस स्लाइड को एक साथ करने का फैसला किया. ऐसी स्लाइड हमने देवतिब्बा ट्रेक के दौरान की थी. लेकिन यह स्लाइड बहुत ही बड़ी थी. लेकिन बहुत मजा आया. गाइड ने ऊपर से एक छोटा सा धक्का दिया जिससे

## 8 नवंबर

2008- भारत का पहला मानव रहित अंतरिक्ष मिशन चन्द्रयान-1 चन्द्रमा की कक्षा में पहुँचा. / 2016- भारत सरकार ने बड़े नोटों को विमुद्रीकरण किया जिसमें 500 और 1000 रुपये के नोटों को अवैध घोषित किया.

हम 200 फीट से भी ज्यादा अंतर स्लाईड करके आये. सबने खूब मस्ती की. वहाँ रुके बिना गाइड ने हमें चलते रहने को कहा क्योंकि आज बहुत चलना था. अब पैर बर्फ पर बहुत फिसल रहे थे. एक छोटा सा रास्ता था जिस पर एक बार में एक व्यक्ति चल सकता था. हम सब अपने शूज का पिछला भाग बर्फ में फसाते हुए एक गहरी घाटी में चल रहे थे जो नीचे खाई दिखाई दे रही थी, एक हाथ में स्टीक, पीठ पर सैक. गाइड आगे का रास्ता तैयार कर रहा था. उसने नीचे से अपने एक और साथी को बुलाया था. वह बर्फ खोदकर खांचे भी बना रहा था. हमें अभी बहुत भूख लगी थी. भूख की वजह से चक्कर जैसा लगने लगा. थोड़ा ठहर के एक दो बिस्कीट खाकर पानी पिया और फिर चलने लगे. काफी देर के बाद अच्छी जगह देखकर हम एक जगह रुके, पैक किया हुआ लंच जो हम साथ लाए थे, खा लिया और थोड़ी देर आराम करने बाद धीरे-धीरे चल दिए क्योंकि हमें काफी दूर जाना था. अभी शूज में पांव दर्द करने लगे थे.

आज हमारा हिमालय का अंतिम पड़ाव था. अब पूरी उतराई और सीधे घने जंगल के बीच से चलना था. हम शाम करीब 4 बजे नया टापू कैम्पसाइट पहुंचे. वेलकम ड्रिंक के बाद, चाय और गर्म नाश्ते के साथ फ्रेश हो गये. यहां स्थानीय लोगों का आज कुछ धार्मिक कार्यक्रम था. वे बड़े बड़े बर्तन में खाना बना रहे थे. वो लोग खूब मस्ती कर रहे थे. हमारा समिट बिना कूछ प्रॉब्लेम पूरा हुआ इसलिये हम सब अच्छे मूड में थे. हम कल यहां से रवाना होकर बेस कैम्प पहुंचने वाले थे. हमारा कैम्प लीडर एक जवान लड़का था जो भारतीय सेना में काम कर रहा था. सभी लोग बात करने के लिए टेंट के बाहर जमा हो गए. काफी गपशप के बाद खाना खाकर सभी अपने अपने टेंट में गए. बाहर पुरी तरह से अंधेरा छा गया था.

सुबह रोज की तरह चाय-नाश्ता करने के बाद हम नगगर के लिये निकले. आज का रास्ता रुमसू से नगगर तक था. 7 किलोमीटर की दूरी पैदल तय करनी थी. लंच बेस कैम्प पहुंचकर लेना था. यह सड़क भी पूरी तरह से ढलान वाली थी. सबने खुशी-खुशी सड़क पार की. नीचे जाने के लिए कई सीढ़ियाँ थीं. नगगर में देखने लायक दो चीजें, नगगर किला और आर्ट गैलरी हैं. लेकिन मैंने इसे पहले ही फॅमिली के साथ आये थे तभी देखा था. तो वहां से हम जितने हमारे

मेंबर आये हुए थे सब सीधे बेस कैम्प 15 माईल के लिये प्रायव्हेट जीप से निकल पड़े.

बेस कैम्प में आज पानी बहुत ही ठंडा था, फिर भी स्नान करके फ्रेश हो गये. अपना सारा सामान लॉकर से वापस ले लिया और वाईएचआई की सैक वापस कर दी. उस रात्री प्रमाण पत्र वितरण समारोह, अपने अपने अनुभवों को कथन करने और कैम्प फायर, मस्ती-मजाक गीत जैसे शानदार कार्यक्रम हुआ. किसी ने डांस किया तो किसी ने गाना गाया. इतने दिनों घर से दूर रहने के कारण अभी घर की बहुत याद आने लगी थी. वैसे फोन पर बात होती थी लेकिन रेंज होने पर ही. जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि हम एक दिन पहले ही वापस आ गए थे क्योंकि हमने एक दिन जलदी ट्रेक शुरू किया था. चूंकि हमारा रिटर्न टिकट एक दिन बाद का था, इसलिए हम वहां से अगले दिन निकल गए और मनाली में नोमैडिक नेस्ट नामक होटल पहुंचे, जिसे जगदीश ने घर से ऑनलाइन बुक किया था. यह हिडिबा मंदिर के पास एक सेब के बाग में था. कमरे का दरवाजा खोला तो सामने बर्फ से ढकी चोटियां नजर आ रही थीं.

होटल के रास्ते में, हम तीन अर्थात् गायत्री, त्रिवेणी और मैं ब्यास नदी पर राफ्टिंग करने गए. यह बहुत ही अब्दुत, मजेदार तथा साहस भरा अनुभव था. बहुत ठंडे पानी में भीगते हुए हमने राफ्टिंग का भरपूर आनंद लिया. हमने नोमैडिक नेस्ट होटल में डॉरमेट्री बुक की थी. एक डॉरमेट्री महिलाओं के लिए और दूसरी पुरुषों के लिए थी. यह होटल अकेले या समूह से आने वाले ट्रेकर्स के लिए एक अच्छा निवास है. जब हम गए तो देश-विदेश के बहुत से ट्रेकर वहां ठहरे हुए थे. शाम को हम मनाली घूमे और कुछ छोटी छोटी खरीदारी की. अगले दिन शाम सात बजे हमारी बस मनाली बस स्टैंड से निकलने वाली थी. शाल-हिमाचली टोपियां- उलन कोट तक की खरीदारी का लुत्फ उठाते हुए दो दिन मनाली में घूमते रहे. शाम को हम बुकिंग के अनुसार दिल्ली के लिए निकल पड़े. सुबह दिल्ली पहुंचे और एक दिन के लिए सेंट्रल बैंक ट्रांजिट होम में शिफ्ट हो गए. चाय-नाश्ता कर और नहा-धोकर सब फ्रेश हो गए. खानसामा मामा ने सादा लेकिन स्वादिष्ट भोजन तैयार किया था. फिर दिन भर आराम किया. कुछ पहली बार दिल्ली आ रहे थे, उन साथियों ने दिल्ली दर्शन का आनंद लिया. हम कनॉट सर्कस

### 9 नवंबर

1948 - जूनागढ़ रियासत का भारत में विलय. / 2000 - उत्तराखण्ड का उत्तर प्रदेश से अलग राज्य के रूप में गठन. / 1989 - ब्रिटेन में मृत्यु-दण्ड की सज़ा पर पूरी तरह से रोक लगाई गई.



इलाके में घूमे. हमारी ट्रेन नई दिल्ली स्टेशन से थी. रात के खाने के बाद हम नई दिल्ली रेलवे स्टेशन की तरफ निकले. ट्रेन का टिकट पनवेल तक का था, वहा से अपने कार से मैं अपने घर पहुंची. दस दिन के बाद घर पहुंची थी.

चंद्रखानी ट्रेक पर पुणे से आया एक ग्रुप हमारे साथ था. वाईएचएआई द्वारा आयोजित ट्रेक में देश भर से ट्रेकर्स आते हैं. पुणे के लड़कों ने सबकी बहुत मदद की. वे कठिन स्थानों पर हाथ देकर सबकी मदद कर रहे थे. ट्रेक से एक महिना पहले बैक पेन की वजह से मैं 7 दिन हॉस्पिटलाईज्ड थी. लेकिन चूंकि हमारे डॉक्टर भी ट्रेकर हैं तो उन्होंने मेरी फिटनेस देखकर मुझे मेडिकल सर्टिफिकेट दिया और ढेर सारी शुभकामनाएं भी दीं. जब हमारे डॉक्टर ही इतने सकारात्मक है तो आपको और क्या चाहिए ?

वाईएचएआई के बारे में दो शब्द लिखे बिना यह लेख अधूरा रहेगा. यह संस्था नो लॉस नो प्रॉफिट आधार पर चलाई जाती है. यहां सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक सभी पार्टिसिपेटिंग मेंबर्स का अच्छे से ख्याल रखा जाता है. वे इस बात का ध्यान रखते हैं कि फ्रेश भोजन, गर्म और ठंडे पेय (यानी चाय, शरबत, सूप आदि) आपको कैसे मिले और शरीर में पानी का स्तर कैसे बनाये रखना है. वातावरण ठंडा होने के कारण पानी ज्यादा नहीं पिया जाता है. यह आपके शरीर के लिए अच्छा नहीं है. मीठा और पतला खाना जैसे एनर्जी पैदा करने वाली गुडसे बनी खीर, रात को बोरनविटा, गरम फुलके, चावल, दाल और प्रोटीन युक्त आहार, खाने में रोजाना सलाद ये चीजें जो हमारे सेहत के लिए अच्छी है, मूंगफली की चिक्की और सूखे मेवे, इन सब बातों को ध्यान रखते हुए डाइट बनाते हैं और रोजाना उबले अंडे की खुराक दी जाती है. नाश्ते में तरह-तरह के चटपटे नास्ता देकर युवाओं को खुश रखा जाता है. वैसे भी वहा भूख बहुत लगती है और पाचन भी ठीक होता है, इसका सारा श्रेय वाईएचएआई को ही देना चाहिए, प्रदूषण मुक्त वातावरण के कारण पहाड़ों पर चलने या चढ़ने की थकान अपने आप दूर हो जाती है. सभी को तनाव मुक्त वातावरण में सुंदर प्रकृति देखने को मिलती है. सभी कैंप लीडर मुस्कराते, हँसते-हँसते और अच्छी जानकारी देकर कैंप के वातावरण को स्वस्थ और आनंदी रखते हैं. कई बार ये शिस्तप्रिय भी होते हैं. अनुशासन के लिए यह

जरूरी भी है. कैंप में टीम भावना जागृत रहती है. और इतना ही नहीं, ट्रेक में भाग लेने वाली महिलाएं सुरक्षित महसूस करती है.

हर ट्रेक हमें अपने आसपास की प्राचीन प्रकृति, दुर्लभ पौधों, पक्षियों, फूलों, जानवरों, पानी और भोजन योजना, स्थानीय लोगों के जीवन, उनके रीति-रिवाजों को खुले आंखों से देखना सिखाता है. एक टीम स्पिरिट हमें सिखाता है कि अपने साथ-साथ बाकी सबका भी ख्याल रखना चाहिए और नेचर का शून्य वेस्टेज, शून्य ध्वनी प्रदूषण का हम अच्छी तरह से ख्याल रखेंगे.

सरकार ने सभी सरकारी और निम-सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए साहसिक खेल ट्रेकिंग के लिए 30 दिनों का विशेष अवकाश जारी किया है. मैंने पहले देव तिब्बा ट्रेक के लिए 2017 में 10 दिनों के लिए विशेष अवकाश लिया था, और अब मुझे 14/05/2019 से 22/05/2019 तक चंद्रखनी ट्रेक के लिए 9 दिनों की छुट्टी मिली है. यह आगमन और प्रस्थान के दिनों की गिनती नहीं करता है, यह वास्तविक ट्रेक के दिनों की गणना करता है. साथ ही दो साल के अंतराल में एक बार छुट्टी ले सकते हैं. उसके लिए, वाईएचएआई के पास विशेष ट्रेक लिव के लिए एक प्रारूप है, इसे ट्रेक पुरा करने के बाद लेना होता है, और ट्रेक पूरा होने का प्रमाण पत्र भी प्राप्त करना है. सरकार के जीआर की एक प्रति जमा करनी होती है. फिर पिछली स्वीकृत छुट्टी को फिर से हमारे लिव खाते में जमा किया जाता है. यह सब ट्रेकिंग के साहसिक खेल को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है.

घर वापस आने के बाद हम कई दिनों तक मन से हिमालय में रहते हैं. हिमालय हमें बहुत याद आता है. बार बार मिलने के लिए बुलाता हैं. अब देखते हैं फिर हिमालय हमें कब और कहां बुलाता है. तब तक सहयाद्री में छोटे मोटे ट्रेक के लिए जाते रहेंगे...

- सविता जगदीश चौधरी

वरिष्ठ प्रबंधक / शाखा प्रबंधक

सावंतवाड़ी शाखा



### 10 नवंबर

1983 - बिल गेट्स ने विंडोज 1.0 की शुरुआत की.

1885 - गोटलिब डेमलेर ने दुनिया की पहली मोटरसाइकिल पेश की.

## माँ के साथ हवाई सफ़र



चलना मां ने सिखाया और दौड़ना पापा ने. नौकरी की मजबूरी हम सबको अपनों से दूर, कहीं दूर ले जाती है. ऐसे में साल में एक बार या तो छठ पूजा या दुर्गा पूजा पर ही अपने शहर की सड़क, गाँव की मिट्टी और मां की गोद नसीब होती है.

अगर ट्रेन से गए तो मान के चलिए पांच दिन तो सफ़र में गुजरने है और दो दिन सफ़र की थकान उतारने में. आप कितनी छुट्टियां लेकर कितनी बार ही जा सकते हो अपने देश में इस परदेश से.

एक मध्यमवर्गीय नौकरीपेशा आम आदमी क्या क्या सोचता है ये सिर्फ वही समझता है और क्या क्या झेलता है ये भी सिर्फ वही जानता है. ऐसा नहीं है कि नौकरी किसी मजबूरी में कर रहा हूँ, बैंकिंग तो मेरा पैशन है और पूरे दिल से कर रहा हूँ, पर घर तो घर होता है ना? मुंबई की ऊंची-ऊंची इमारतों के बीच दिल कभी-कभी पटना खोजने लगता है.

आज मां पहली बार फ्लाइट में है और मैं, मां के साथ उड़ रहा हूँ. मैं बहुत बार पहले भी सपने में मां के साथ उड़ा हूँ, पर ये सपना हकीकत में तब्दील होते देख रहा हूँ. मैं सपनों में पता नहीं कैसे छोटा बच्चा बन जाता हूँ और माँ मुझे गोदी उठा लेती है. माँ के किसी लाल परी जैसे दो सुनहरे पंख हैं. माँ से सुंदर और प्यारा इस दुनिया में और कोई नहीं. सितारों के पार कहीं उड़ते हुए डर के मारे मैं आँखे बंद कर लेता हूँ. हम उड़ते ही जाते हैं, बिल्कुल दूध जैसे बादलों के बीच. माँ गीत गाने लगती है...

“जीती हूँ मैं बस तुझे देखकर, इस टूटे दिल का सहारा है तू  
चंदा है तू मेरा सूरज है तू, ओ मेरी आँखों का तारा है तू”

तभी फ्लाइट रनवे पर तेज चलते हुए उड़ान भरती है और मैं सपनों की उड़ान से निकल कर हकीकत की उड़ान भरने की तैयारी करने लगता हूँ. माँ ने अचानक से कस कर मेरा हाथ पकड़ लिया. ठीक वैसे ही, जैसे पहली बार अपने कदमों पर खड़ा होते, मैंने मां की बाँहें कस कर थाम रखी थी. सहसा मुझे अपने बड़े होने का एहसास हुआ. अब माँ डर रही थीं और मुझे उन्हें संभालना था. मैं फिर अपनी कल्पनाओं में खोने लगा, पर इस बार मेरे पंख निकल आए थे और मैं माँ का हाथ थामे उड़ रहा था, गीत गुनगुना रहा था

“उड़ता ही फिरूँ इन हवाओं में कहीं,  
या मैं झूल जाऊँ इन घटाओं में कहीं  
उड़ता ही फिरूँ इन हवाओं में कहीं,  
या मैं झूल जाऊँ इन घटाओं में कहीं  
एक कर दूँ आसमान और ज़मीन,  
कहो यारों क्या करूँ क्या नहीं”

ऊंचाई से मां हमारा घर दूँढने लगी, घोरिकित्ता वाला घर. उसके टूटे हुए दरवाज़े को पहचान लिया माँ ने और कहने लगी, अगली बार ज़रूर मरम्मत करवाना इसकी. ऊपर कहीं दूर आकाश में पापा भी दिखे हमको. मां भी महसूस कर रही थी पापा को हमारे साथ. मेरा मन किया कि उनका छलका एक आंसू मैं चूम लूँ. और कहूँ; नहीं मां, अब सिर्फ उड़ना है, हंसना है, जीना है, जिन्दगी के सारे बिखरे रंग समेटना है.

आनंद कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक (मासवि)  
दक्षिण मुंबई, क्षेत्रीय कार्यालय



### 11 नवंबर

1675 - गुरु गोबिन्द सिंह सिक्खों के गुरु नियुक्त हुए थे. / 1973 - पहली अंतरराष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी नई दिल्ली में शुरू. / 1809 - ब्रिटिश आधिपत्य के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए लोगों का आह्वान करते हुए एक घोषणा निकाली जो 'कुण्डरा घोषणा' नाम से जानी जाती है.



## ऋण वसूली प्रबंधन

समय पर वसूली सुनिश्चित करने और गैर-निष्पादित आस्तियों (एनपीए) की परिणामी कमी सुनिश्चित करने के लिए बैंक अपने प्रयासों में इतने गंभीर कभी नहीं थे, जितने आज हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वसूली प्रबंधन, चाहे वह नए ऋणों का हो या पुराने ऋणों का, एनपीए प्रबंधन के केंद्र में है। इस प्रबंधन प्रक्रिया को ऋण आरंभ करने के चरण में ही शुरू करने की आवश्यकता है। वसूली और गैर-निष्पादित आस्तियों के प्रभावी प्रबंधन में दो आयामी रणनीति शामिल है। पहला चूक को रोकने और उसके बाद एनपीए के निर्माण से संबंधित है और दूसरा ऋण चूक से निपटने के लिए है। वित्तीय क्षेत्र के सुधारों के सिद्धांत क्रांतिकारी थे जिन्होंने बैंक के कर्मचारियों के मन में तात्कालिकता की भावना पैदा की और उन्हें यह संदेश दिया कि या तो वे प्रदर्शन करें या नष्ट हो जाएं। विवेकपूर्ण मानदंड ने बैंक को संपत्ति की गुणवत्ता पर गौर करने के लिए मजबूर किया है।

एक ऋण, क्रेडिट लाइन या प्राप्य खातों से एक ऋण जो या तो पूरे या आंशिक रूप से बट्टे खाते में डाले जाने या खराब ऋण के रूप में वर्गीकृत होने के बाद वसूल किया जाता है। लेखांकन में, खराब ऋण वसूली खराब ऋणों के लिए भत्ता या खराब ऋण आरक्षित श्रेणियों को जमा करेगी, और पुस्तकों में प्राप्य खातों श्रेणी को कम करेगी।

सभी अशोध्य ऋण वसूलियां समान प्रकार की वसूलियां नहीं होती हैं। उदाहरण के लिए, एक संपार्श्विक ऋण जिसे बट्टे खाते में डाल दिया गया है, संपार्श्विक की बिक्री के माध्यम से आंशिक रूप से वसूल किया जा सकता है। या, एक बैंक ऋण को बट्टे खाते में डालने के बदले इक्विटी प्राप्त कर सकता है, जिसके परिणामस्वरूप बाद में ऋण की वसूली हो सकती है और शायद कुछ अतिरिक्त लाभ भी हो सकता है।

रिकवरी बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता की कुंजी है, यह कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए कि भारतीय बैंकों ने समग्र कठिन वातावरण को देखते हुए गैर-निष्पादित आस्तियों (एनपीए) को नियंत्रित करने में उल्लेखनीय काम किया है। वसूली प्रबंधन बैंक के ब्याज मार्जिन से भी जुड़ा हुआ है, हमें यह समझना चाहिए कि

कानूनी ढांचे को सक्षम करने से समर्थित लागत और वसूली प्रबंधन भारतीय बैंकों के भविष्य के स्वास्थ्य और प्रतिस्पर्धात्मकता की कुंजी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत में वसूली प्रबंधन में सुधार एक ऐसा क्षेत्र है जिसके लिए कानूनी संस्थागत और न्यायिक प्रक्रियाओं में अभियान और प्रभावी कार्रवाई की आवश्यकता है। बैंकों को वर्तमान में ऋणों की वसूली और उन पर आरोपित प्रतिभूतियों के प्रवर्तन में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। बैंकों को देय ऋणों की वसूली की मौजूदा प्रक्रिया ने उनके धन के एक महत्वपूर्ण हिस्से को अनुत्पादक परिसंपत्तियों में अवरुद्ध कर दिया है, जिसका मूल्य समय बीतने के साथ बिगड़ता जाता है।

### वसूली के फायदे और नुकसान

**लाभ:** बाहरी लोगों को ऋण वसूली सौंपने की प्रक्रिया बैंकों के अधिकारियों को अधिक लाभकारी नया व्यवसाय विकसित करने में सक्षम बनाती है। ऋण वसूली में तीसरे पक्ष की भागीदारी ने बार-बार बैंक बकाया वसूलने की संभावना को बेहतर बनाया है क्योंकि ये लोग देनदारों के साथ बातचीत करने में विशेषज्ञ होते हैं और परिणाम आमतौर पर खुद के लिए बोलते हैं। एक कुशलतापूर्वक मोल-तोल कर ऋण वसूली का अर्थ मुकदमेबाजी की लागत में बचत करना हो सकता है। बाहरी लोगों को ऋण वसूली सौंपने की प्रक्रिया गैर-बैंकों के अधिकारियों को सक्षम बनाती है।

**नुकसान:** ऋण संग्रह में पैसा खर्च होता है। ऋण संग्रहण एजेंसी बैंक के ग्राहकों के साथ एक संबंध स्थापित करेगी, जो संभावित रूप से हानिकारक हो सकता है यदि वे ग्राहकों के साथ विनम्र तरीके से व्यवहार न करके उस संबंध को खराब करते हैं।

### ऋण वसूली के लिए महत्वपूर्ण बिंदु

सामान्य रिकवरी प्रक्रिया के लिए पूर्वगामी प्रक्रिया के आधार पर, हम ऋण रिकवरी के लिए कुछ निश्चित चीजों को नीचे सूचीबद्ध कर सकते हैं, जो इस प्रकार हैं:

- रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया/ बैंक द्वारा निर्धारित वसूली नीति, प्रक्रिया आदि का उल्लंघन न करें।

#### 12 नवंबर

1930 - लंदन में पहली बार गोलमेज सम्मेलन की शुरुआत . 1936 - केरल के मंदिर सभी हिंदुओं के लिए खुले।

#### 13 नवंबर

1917 - गजानन माधव मुक्तिबोध, प्रसिद्ध प्रगतिशील कवि का जन्म।

- वसूली, व्यवस्था में दिए गए अधिकार से अधिक न हो.
- देनदार को प्रातः 7:00 बजे से पहले तथा रात्रि 9:00 बजे के बाद कॉल न करें.
- देनदार को अज्ञात कॉल या समूह कॉल न करें, जिसे उत्पीड़न माना जा सकता है.
- कॉल और मुलाकात या देनदार के साथ अन्य बातचीत के दौरान अपनी पहचान को न छुपाएं या गलत तरीके से पेश न आएं.
- कर्जदार से मिलने या मिलने के दौरान असभ्य/अभद्र/गंदा व्यवहार न करें या ऐसी भाषा का प्रयोग न करें.
- देनदार को मौखिक या शारीरिक रूप से परेशान/अपमानित/भयभीत न करें/धमकी न दें.
- कर्जदार के परिवार के सदस्यों, दोस्तों/सहयोगियों की निजता में दखल न दें.
- अनधिकृत व्यक्ति को ग्राहक के ऋण/बकाया राशि/खाते की जानकारी का खुलासा न करें.
- यह न भूलें कि देनदार एक इंसान है और इस तथ्य के बावजूद कि वह फिलहाल कर्जदार है, निष्पक्षता और शिष्टाचार के साथ व्यवहार करने का हकदार है.

### ऋण वसूली के तत्व

ऋण वसूली के संबंध में एजेंसी में प्रिंसिपल (बैंक) और एजेंट द्वारा सहमत मुख्य नियम और शर्तें शामिल हैं. ऋण वसूली के मुख्य तत्वों में आम तौर पर शामिल होंगे पूरे किए जाने वाले विशिष्ट कार्य उदा. डिफॉल्ट और व्यापक समय सीमा में निर्दिष्ट ऋण खातों से वसूल की जाने वाली राशि.

### ऋण वसूली नीति और बैंक की प्रक्रिया

पुनर्प्राप्ति प्रक्रिया में आचार संहिता में ड्रेस कोड, मौखिक और लिखित संचार नियम शामिल हो सकते हैं जिनका पालन एजेंसी द्वारा संग्रह के उद्देश्य से नियोजित व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए.

### एजेंट के कर्तव्य

ऋण वसूली, नीति और ऋण वसूली में आचार संहिता विनियमों के अनुरूप होगी, अर्थात् समय-समय पर जारी भारतीय रिज़र्व बैंक

के निर्देशों और दिशानिर्देशों के अनुसार. हालांकि, यदि इन्हें इसमें शामिल नहीं किया गया है, तो एजेंटों के लिए सलाह दी जाती है कि वे प्रिंसिपल से स्पष्टीकरण मांगें, क्योंकि बैंकों और उनके वसूली एजेंटों के लिए नियमों का अनुपालन अनिवार्य है.

क्रेडिट संस्था और ऋण वसूली एजेंट/एजेंसी के बीच ऋण वसूली समझौता संविदात्मक व्यवस्था के रूप में कार्य करता है जो दोनों पर कानूनी रूप से बाध्यकारी है. इस तरह की व्यवस्था, बैंक विशिष्ट होने के कारण विवरण में बैंक से भिन्न हो सकती है. वसूली कार्य की प्रक्रिया में एजेंट/एजेंसी के कर्तव्यों और बैंक द्वारा निर्धारित आचार संहिता को एजेंट द्वारा कड़ाई से अनुपालन के लिए सावधानी से नोट किया जाना चाहिए.

### एनपीए प्रबंधन

एनपीए प्रबंधन के लिए उत्पादक आस्तियों के प्रबंधन तथा प्रभावी कॉर्पोरेट गवर्नेंस सुनिश्चित करने के लिए काफी कुछ किए जाने की जरूरत है. एनपीए प्रबंधन की शुरुआत गुणवत्तापूर्ण अग्रिम पोर्टफोलियो के संचालन से अर्जित होने वाले लाभों की वसूली से होती है, और उधार दिए जाने में निहित जोखिमों की बेहतर समझ को प्रतिपादित करती है. निदेशक मंडल को एनपीए प्रबंधन की रणनीति तैयार करते समय विनियामक मानकों, कारोबारी माहौल, आस्ति प्रोफाइल, उपलब्ध संसाधनों आदि को ध्यान में लेना चाहिए. बोर्ड द्वारा अनुमोदित नीतियों और प्रक्रियाओं में कार्यान्वयन पर निगरानी रखने की रणनीति परिलक्षित होनी चाहिए.

### सुदृढ़ एनपीए प्रबंधन के आवश्यक घटक हैं:

- विवेकपूर्ण समझदारी के माध्यम से एनपीए की रोकथाम
- प्रभावी शीघ्र चेतावनी प्रणाली
- गिरावट से बचने के लिए त्वरित और प्रभावी उपचारात्मक उपाय
- गिरावट के उपरांत तेजी से समाधान

मानक आस्तियों के एनपीए श्रेणी में खिसकाव को रोकने तथा नकद वसूली, उन्नयन, समझौता, विधिक माध्यमों आदि के द्वारा एनपीए में कमी लाए जाने हेतु एक बहुमुखी रणनीति की आवश्यकता है.

### 14 नवंबर

1922 - बीबीसी ने ब्रिटेन में रेडियो सेवा शुरू की.

1681 - ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल के अलग रियासत बनने की घोषणा की.





## पुनर्गठन

सामान्यतया, दबावग्रस्त ऋण खातों में वसूली के संदर्भ में समाधान हो जाने की संभावना ज्यादा होती है, यदि कंपनी संचालन में हो. इसको प्रभावशाली बनाने के लिए एक ऐसी प्रणाली होनी चाहिए जो प्रारंभिक चरण में ही खातों में कमजोरी को पहचान सके. बैंकों को एक 'शीघ्र चेतावनी' प्रणाली लागू करनी चाहिए जो कमजोरी का प्रथम संकेत दर्शाने वाले खातों के संबंध में शुरुआती चेतावनी संकेतों को पकड़ सके. इससे बैंकों को निवारक उपाय करने तथा खाते को एनपीए के रूप में परिवर्तित होने से रोकने में मदद मिलेगी. बैंक अर्थक्षम संस्थाओं के खातों की पुनर्चना/पुनर्निर्धारण कर सकते हैं तथा संस्था के सम्मुख आ रही अस्थायी समस्याओं से निजात दिलाने में उसे मदद कर सकते हैं.

जैसे ही एक कमजोर खाते की पहचान हो जाती है, बैंकों को विभिन्न निवारक उपायों पर विचार करना चाहिए. निवारक उपायों में से एक उपाय पुनर्चना भी है. कई बार उधारकर्ता अपने श्रेष्ठतम प्रयासों और इरादों के बावजूद भी अपने नियंत्रण से बाहर के कारणों तथा कुछ आंतरिक कारणों के चलते भी स्वयं को वित्तीय कठिनाईयों में पाते हैं. अर्थक्षम इकाईयों के पुनरुद्धार और बैंकों द्वारा उधार दी गई रकम की सुरक्षा के लिए, उचित मामलों में पुनर्चना के माध्यम से समय पर सहायता दिए जाने की जरूरत है. पुनर्चना का उद्देश्य कुछ बाह्य तथा आंतरिक कारणों से प्रभावित होने वाले अर्थक्षम इकाईयों के मूल्यों को क्षरण से बचाना और लेनदारों और अन्य हितधारकों के लिए घाटे को कम से कम करना है.

कापेरिट ऋण पुनर्चना ढांचे का उद्देश्य सभी संबंधित पक्षों के फायदे के लिए बीआईएफआर, डीआरटी और अन्य विधिक कार्यवाही के दायरे के बाहर समस्याओं का सामना करने वाली अर्थक्षम इकाईयों के कापेरिट ऋण की पुनर्चना के लिए सामयिक एवं पारदर्शी प्रणाली सुनिश्चित करना है. विशेष तौर पर, ढांचे का उद्देश्य ऐसे अर्थक्षम कापेरिट को संरक्षण देना है, जो कतिपय आंतरिक और बाह्य कारणों से प्रभावित होते हैं, और एक व्यवस्थित और समन्वित पुनर्चना कार्यक्रम के माध्यम से लेनदारों और अन्य शेयर धारकों को होने वाले नुकसान को कम करना है. सीडीआर प्रणाली उन उधारकर्ताओं के अग्रिमों की पुनर्चना को सुविधाजनक बनाने के लिए समन्वित तरीके से परिकल्पित की

गई है, जिन्होंने एक से अधिक बैंक / वित्तीय संस्थाओं से ऋण सुविधाएं ले रखी हैं.

## संकटग्रस्त आस्तियों के पुनरुद्धार का ढांचा

भारतीय रिज़र्व बैंक ने 2014 के प्रारम्भ में अर्थव्यवस्था में संकटग्रस्त आस्तियों के पुनरुद्धार के ढांचे को जारी किया है. ढांचे में सुधारात्मक कार्य योजना की रूपरेखा दी गई है, जिससे समस्या वाले मामलों की प्रारम्भ में ही पहचान करने, अर्थक्षम माने जाने वाले खातों की समय पर पुनर्चना करने और अव्यवहार्य खातों की वसूली अथवा बिक्री के लिए बैंकों द्वारा शीघ्र कदम उठाने में सहायता मिलेगी. ढांचे की मुख्य विशेषताएँ निम्नानुसार हैं:

- भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा बड़े ऋणों से संबंधित सूचनाओं की सेंट्रल रिपोजीटरी (सीआरआईएलसी) की स्थापना की गई, जो 5 करोड़ रुपये और उससे अधिक के समग्र एक्सपोजर (निधि आधारित + गैर-निधि आधारित) वाले उधारकर्ताओं के संबंध में रिपोर्टिंग संस्थाओं के साथ ऋण सूचना संग्रहण करने, एकत्र करने और प्रसारित करने के लिए स्थापित की गई है.
- 100 करोड़ रुपये और उससे अधिक के एक्सपोजर के समाधान के लिए किसी योजना से सहमत होने के लिए समय सीमा के साथ उधारदाता समिति का प्रारंभिक गठन (संयुक्त उधारदाता मंच) के लिए अनिवार्य होगा. सुधारात्मक कार्य योजना में निम्नलिखित में से कोई एक शामिल हो सकता है.

## परिशोधन

### पुनर्चना

### वसूली

- समय पर सुधारात्मक कार्य करने के लिए उधारदाताओं के लिए प्रोत्साहन और हतोत्साहन संरचना
- किसी योजना के लिए सामूहिक रूप से और शीघ्रता से सहमत होने के लिए उधारदाताओं को प्रोत्साहन- यदि कोई समाधान योजना चल रही हो, तो संकटग्रस्त आस्तियों को बेहतर विनियामक ट्रीटमेंट, कोई सहमति न होने की दशा में बढ़ा हुआ प्रावधानीकरण.

## 15 नवंबर

1989 - कराची में सचिन तेंदुलकर ने टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया.

## 16 नवंबर

1821- मैक्सिको की स्वतंत्रता को मान्यता मिली.

- वर्तमान पुनर्चना प्रक्रिया में सुधार- प्रवर्तकों और ऋणदाताओं के बीच अर्थक्षम योजनाओं और नुकसान के उचित बंटवारे पर जोर देते हुए बड़े मूल्य वाली पुनर्चना के लिए स्वतंत्र मूल्यांकन को अनिवार्य बनाना.
- ऐसे उधारकर्ताओं के लिए भविष्य में ऋण अधिक महंगा हो, जो समाधान में उधारदाताओं के साथ सहयोग नहीं करते.

### अर्थक्षम परन्तु संकटग्रस्त खातों को सहायता

बैंकों द्वारा पूरे प्रयास के बावजूद, चूक हो जाती है. यदि एक बार कोई खाता एनपीए श्रेणी में चला जाता है, तो ध्यान उन्नयन की ओर दिया जाना चाहिए. इस अवस्था में यह समझना महत्वपूर्ण है कि रिजर्व बैंक ने ऐसे उधारकर्ताओं को आवश्यकता के आधार पर अतिरिक्त वित्त देने से बैंकों पर रोक नहीं लगायी है, जिनके खाते एनपीए के रूप में वर्गीकृत हैं. इसके विपरीत, रिजर्व बैंक के विद्यमान दिशानिर्देश ऐसी स्थिति की कल्पना करते हैं, जहां उधारकर्ता को पुनरुज्जीवित / पुनर्वास के लिए, और आस्ति के अधिक मूल्य के संरक्षण के लिए बैंकों को संकटग्रस्त उधारकर्ताओं को अतिरिक्त वित्त मंजूर करने की आवश्यकता है. किसी खाते के एनपीए के रूप में वर्गीकृत होने मात्र से अर्थक्षम ऋण खातों से सहायता वापस लेने की आवश्यकता नहीं है. तथापि, संकटग्रस्त खातों को सहायता देने पर विचार करते समय, बैंकों को एक ओर इरादतन चूककर्ता/ असहयोगी/ विवेकहीन उधारकर्ताओं और दूसरी ओर अपने नियंत्रण के बाहर की परिस्थितियों के कारण अपने ऋण दायित्व में चूक करने वाले उधारकर्ताओं के बीच समुचित भेद करना चाहिए.

### एनपीए की बिक्री

ऊपर उल्लिखित उपायों के विफल होने की स्थिति में बैंक ऋण वसूली प्राधिकरण में वाद दाखिल कर सकते हैं अथवा वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्चना एवं प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम 2002 के प्रावधानों को लागू कर सकते हैं. बैंक अपनी अनर्जक आस्तियों को आस्ति पुनर्निर्माण कंपनियों को बेच सकते हैं. भारतीय रिजर्व बैंक ने अभी तक 14 आस्ति पुनर्निर्माण कंपनियों को पंजीकरण प्रमाण पत्र (सीओआर) प्रदान

किया है. आस्ति पुनर्निर्माण कंपनियों के साथ ही बैंक, अन्य बैंक, गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों या अन्य वित्तीय संस्थाओं को भी अनर्जक आस्तियां बेचने की संभावना तलाश कर सकते हैं, जो अनर्जक आस्तियों को दक्षतापूर्वक हल करने के लिए अपेक्षित कौशल रखते हों. दबावग्रस्त आस्तियों के लिए बाजार प्रारंभ करने की सुविधा के लिए फरवरी 2014 में दबावग्रस्त खातों की बिक्री से संबंधित विनियमों को संशोधित किया गया.

### वसूली चैनल

विभिन्न सुधारात्मक उपायों के बावजूद यदि उधारकर्ता के व्यापार के अलाभकारी स्वरूप के कारण उन्नयन संभव नहीं हो रहा है तो बैंकों को उनके पास उपलब्ध किसी भी वसूली विकल्प के माध्यम से ऋण की वसूली हेतु कदम उठाने चाहिए. विभिन्न उपायों में से, 2013-14 के दौरान वसूल की गई अनर्जक आस्तियों में वसूली का 80% वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्चना एवं प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम 2002 के तहत किया गया है. इस प्रकार वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्चना एवं प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम, अनर्जक आस्तियों की वसूली का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है.

तथापि, डीआरटी/न्यायालयों में बढ़ते मुकदमों की संख्या और सीमित बुनियादी सुविधाओं के मद्देनजर मौजूदा विधिक प्रणाली इस बृहद् कार्य से निपटने में असमर्थ है. साथ ही, डीआरटी और सरफेसी से संबंधित कई मुद्दे हैं जिन्हें सुदृढ़ करने की आवश्यकता है ताकि इन चैनलों को सक्षम और प्रभावी बनाया जा सके, विभिन्न स्तरों पर उनकी जांच की जा रही है.

बैंक वर्तमान मूल्य अवधि में अपनी वसूली का अनुकूलन करने के लिए उधारकर्ताओं से समझौता निपटान /एकबारगी निपटान पर भी विचार करें.

तरुण कुमार गोयल  
प्रबंधक  
क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद



### 17 नवंबर

1966 - भारत की रीता फारिया ने मिस वर्ल्ड का खिताब जीता. मिस वर्ल्ड बनने वाली वह पहली एशियाई महिला थी. / 1970 रानी लक्ष्मीबाई का एक महत्वपूर्ण पत्र जो की उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी को लिखा था लन्दन में ब्रिटिश लाइब्रेरी के आर्काइव्स में मिला है. / 1999 - अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस को यूनेस्को ने स्वीकृति दी.



## उसने कहा था : कहानी समीक्षा

“उसने कहा था” कहानी चंद्र शर्मा गुलेरी द्वारा रचित एक कालजयी रचना है। चंद्रधर शर्मा गुलेरी (1883-1922) संपादक के साथ - साथ निबंधकार और कहानीकार भी थे। उन्होंने कुल तीन कहानियां लिखी हैं, ‘बुद्ध का कांटा’, ‘सुखमय जीवन’ और ‘उसने कहा था’। लेकिन हिंदी साहित्य में उसने कहा था और गुलेरी जी को एक दूसरे का पर्याय माना जाता है। कहानी की मूल संवेदना में निस्वार्थ प्रेम और मानवता की रक्षा है। ‘सरस्वती’ पत्रिका में सन 1915 में सर्वप्रथम प्रकाशित इस कहानी की पृष्ठभूमि प्रथम विश्व युद्ध के तुरंत बाद की है। कहानी रचना की पृष्ठभूमि और भाषा शिल्प की दृष्टि से अपने समय से कहीं आगे की प्रतीत होती है। आज से 100 वर्ष पूर्व जिस वासना रहित त्यागमय प्रेम की परिभाषा चंद्र शर्मा ने गढ़ी, वह भारतीय परिवेश में प्रेम के आदर्श स्वरूप को परिलक्षित करता है। इस कहानी का नायक ना तो कोई प्रेम सप्ताह मनाता है, ना ही गुलाब के फूलों का आदान - प्रदान करता है फिर भी भाव, विचार, आदर्शों, भाषा - शिल्प तथा शैली के हर मानक पर यह कहानी के आदर्श कसौटी पर खड़ी उतरती है और निष्काम प्रेम को अभिव्यक्त करते हैं।

कुछ वर्ष पहले आए बीबीसी के एक सर्वेक्षण के मुताबिक ‘उसने कहा था’ न सिर्फ प्रेम-कथाओं अपितु हिंदी की दस बेमिसाल कहानियों में भी शामिल है। अमृतसर की तंग गलियों से निकल कर विश्व युद्ध के मैदान तक पहुंचने और प्रेम की पराकाष्ठा को स्थापित करती यह लंबी छलांग कहानी के कुछ पन्नों में ही पूरा कर लेती है और यही कहानीकार की विशेषता और सफलता है। कहानी की मुख्य पात्र लहना सिंह का चरित्र उदात्त है और यह भारतीय उदात्तता के ही अनुकूल है जो इस कहानी को सदाबहार कहानी के श्रेणी में प्रतिष्ठित करता है। लहना सिंह ने जिस प्रेम को कहानी के माध्यम से परिभाषित किया है वह आने वाले सैकड़ों वर्षों तक कई पीढ़ियों के लिए प्रेम की आदर्श परिभाषा है। दृश्य के चित्रण में सजीवता और शैली की रोचकता इस कहानी को कालजयी बनाती है। सौ वर्ष पूर्व अमृतसर शहर की पृष्ठभूमि

और लहना सिंह का त्याग एवं बलिदान भी इस कहानी को अमर बनाती है।

युद्ध और प्रेम दोनों दो ध्रुव की चीजें हैं, लेकिन गुलेरी साहब ने लहना सिंह के माध्यम से यह स्थापित कर दिया कि शब्दों की कारीगरी से सब कुछ संभव है और कहानी भी दो ध्रुवों के बीच में प्रवाहमय और प्रभावमय हो सकती है। पांच खण्डों में और 25 वर्षों के लंबे अंतराल को खुद में समेटती यह कहानी विषय और अपने अद्भुत वर्णन में किसी उपन्यास जैसी है। प्रेम, कर्तव्य और देशप्रेम के तीन मूल उद्देश्यों से जुड़ती, उसे अपना विषय बनाती हुई आगे बढ़ती है। ढेर सारे किरदारों के बावजूद इस कहानी में तीन ही मुख्य किरदार हैं: लहना सिंह, सूबेदारनी और फिर वजीर सिंह। बोधा बच्चा है, सूबेदार पुत्र मोह में कमजोर, सो बेटे को लेकर रणभूमि से घर लौट जाता है। हालांकि लहना की भी एक पत्नी है पर उसका कोई जिक्र यह कहानी नहीं करती। लहना के मरते वक्त भी वह उसकी स्मृतियों में नहीं आती, आती है तो अमृतसर की गलियों वाली वह बच्ची। वह पत्नी के गोद में मरने की बात भी नहीं करता, भाई की गोद में मरना चाहता है। जाहिर है लेखक ने ऐसा लहना के उस बच्ची के लिए प्रेम को बताने के लिए ही किया है नहीं तो इस तरह उसका चरित्र कमजोर हो जाता। लहना और सूबेदारनी का वह अमर प्रेम फिर शायद उस तरह अमर न हो पाता। तीन के बाद जो भी चरित्र हैं वे वक्त - जरूरत नायक-नायिका के चरित्र को रचने और उभारने के लिए हैं। बार - बार बचपन में मिल जानेवाली और बाद में एक बार मिलनेवाली यह नायिका नायक से बस तीन शब्द कहती है। इसमें बारंबार कहा जानेवाला है ‘धत्त’... (जो इस कहानी का बहुत ही लोकप्रिय और प्यारा शब्द है। इसे ‘तीसरी कसम’ फिल्म के हीरामन के ‘इस्स’ से भी जोड़कर देखा जा सकता है। शायद ‘धत्त’ ही प्रेरणा रहा हो इस ‘इस्स’ की.) ‘धत्त’ भी जैसे एक चरित्र है इस कहानी का, नायिका के अल्हड़पन, मासूमियत, झिझक और शर्म को एक साथ बताता हुआ।

### 18 नवंबर

1727 - महाराजा जय सिंह द्वितीय ने जयपुर शहर की स्थापना की। शहर के वास्तुकार बंगाल के विद्याधर चक्रवर्ती थे।

1972 - बाघ को राष्ट्रीय पशु चुना गया। / 2017- भारत की मानुषी छिल्लर ने जीता ‘मिस वर्ल्ड 2017’ का खिताब।

अमृतसर की भीड़ भरी सड़कों पर एक लड़का और एक लड़की एक दुकान पर मिलते हैं। लड़के ने मुस्कुराकर पूछा तेरी कुड़माई हो गई इस पर लड़की ने कुछ आंखें चढ़ा कर, धत कह कर दौड़ गई और लड़का मुंह देखते रह गया। कहानी में प्रेम की शुरुआत इसी मोड़ पर होती है। हर दूसरे-तीसरे दिन यहां लड़के और लड़की का मिलना और यह कथन “देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ शालू” कहानी के शुरुआत में ही उत्कर्ष को रेखांकित करता है। समय बीतता जाता है 25 वर्ष बाद वह लड़का जिसका नाम लहना सिंह था अब भारतीय सैनिक है और अंग्रेजों के साथ जर्मनी में लड़ रहा था। वहां युद्ध चल रहा था साथ ही वहां ठंड भी ज्यादा थी। लहना सिंह को 25 वर्ष बाद बचपन की याद आती है। कुड़माई हो गई कहने वाली लड़की आज सूबेदारनी है। वह कहती है मेरा बेटा बोधा सिंह और मेरे पति हजारा सिंह दोनों लाम पर जा रहे हैं। सूबेदारनी लहना सिंह के पास जाती है और कहती है बचपन में तुमने मुझे एक दुर्घटना में मरने से बचाया था। ठीक इसी तरह तुम मेरे पति और बेटे की रक्षा करना।

आज की स्त्री होती तो यह नहीं भी कहती। प्रेमी को पाकर इतने बरस बाद भी पति का जीवन शायद उसे इतना महत्वपूर्ण न भी लगता। सूबेदारनी आंचल पसार कर लहना सिंह से भिक्षा मांग रही थी। कुछ देर के बाद तीनों युद्ध के लिए चले गए। वहां भीषण ठंड पर वर्षा भी हो रही थी। बोधा सिंह को ठंड लग रही थी। लहना सिंह बुखार ग्रस्त बोधा सिंह को अपनी जर्सी ओढ़ा देता है। कुछ देर के बाद लहना सिंह देखता है कि जर्मन सिपाहियों ने धावा बोल दिया है दोनों तरफ गोली चलती है एक गोली बोधा सिंह को लगने वाली थी लेकिन लहना सिंह को लग गयी। अगर लहना सिंह नहीं होता तो आज बोधा सिंह और हजारा सिंह मारे गए होते। घायलों को लेने के लिए गाड़ियां आती हैं। लहना सिंह पिता और पुत्र दोनों को गाड़ी पर चढ़ा देता और खुद नहीं जाता वह कहता है कि अगर तुम सूबेदारनी को चिट्ठी लिखोगे तो यह लिख देना कि - उसने कहा था, वह मैंने कर दिया। गाड़ी चली जाती है लहना सिंह खून से लथपथ हुआ रहता है। वह वजीरा से कहता है कि वजीरा पानी पिला दे, बचपन की सारी स्मृतियां एक साफ होकर सामने आईं। लहना सिंह के घाव से लगातार खून बह

रहा था और कह भी रहा था कि वजीरा पानी पिला दे। उसने कहा था और इस प्रकार कुछ देर बाद लहना सिंह की मृत्यु हो जाती है।

इस कहानी में प्रेम से भी ज्यादा युद्ध का वर्णन और माहौल है। यह बताने की खातिर कि युद्ध हमेशा प्रेम को लीलता और नष्ट करता है। लहना सिंह का एक छोटा - सा सपना है, नदी के किनारे अपने गांव में, आम के पेड़ के तले भाई की गोद में मरने का, पर वह मरता है एक अनजान देश में, अपनी प्रेमिका के वचन की रक्षा करते हुए। वह सूबेदारनी के सुहाग और बच्चे को तो बचा लेता है पर खुद के लिए मृत्यु चुन लेता है और परिवार के लिए एक बड़ा प्रश्न छोड़ जाता है। यहां कहानी के एक प्रसंग का उल्लेख आवश्यक है, ‘लहना सिंह जर्मन सैनिक को अपनी बातों में फंसा कर उसे मार भी देता है’ मतलब यह कि लहना सिंह बुद्धिमान भी है, पाठक की सारी विवशता और कौतूहल इसी बात पर आ कर अटक जाती है। इस कहानी के प्रसिद्ध होने का एक कारण यह भी है कि हर स्त्री कहीं - न - कहीं मन में ऐसा ही प्रेमी चाहती है, और हर पुरुष की कल्पना में अपने प्रेम के दिनों का ऐसा ही रूप होता है। लेखक ने नायकों के तमाम गुणों को मिलाकर, उन्हें ठूस-भरकर लहना सिंह को रचा है। उसके चरित्र के हर पक्ष कर्तव्य, प्रेम और देशप्रेम के तीन बिंदुओं के बीच बड़ी सहज भाषा में रच जाते हैं।

इस कालजयी कहानी से जुड़ा एक अन्य दिलचस्प पहलू यह है कि इस कहानी का फिल्मांकन भी है। कहानी वाले शीर्षक के नाम से ही हिंदी फिल्म उसने कहा था 1960 में प्रदर्शित हुई थी। बिमल राय प्रोडक्सन्स के बैनर तले मोनी भट्टाचार्य के निर्देशन में बनी इस फिल्म में मुख्य कलाकार के रूप में सुनील दत्त, नन्दा, राजेन्द्रनाथ, दुर्गा खोटे, तरुन बोस, असित सेन, लीला मिश्रा ने अपना किरदार निभाया।



**अमितेश कुमार सिंह**  
सहायक प्रबंधक - राजभाषा  
क्षेत्रीय कार्यालय, हुबली

### 19 नवंबर

1835 रानी लक्ष्मीबाई - का जन्म / 1994 - भारत की ऐश्वर्या राय मिस वर्ल्ड चुनी गईं.

### 20 नवंबर

1981 भास्कर उपग्रह को छोड़ा गया था.



## चेतना

यह कहानी करीब 33 साल पुरानी है जब चेतना नाम की एक हमारी सहकर्मी थी, वह एक सरल और सौम्य महिला थी और वाक-चातुर्य के साथ - साथ अपनी सुमधुर मुस्कान के लिए पुरुष मंडली में विख्यात थी। चेतनता उनके स्वभाव का अभिन्न भाव था। किसी बात पर जब वह हंसती थी तो सभी लोग हंसने लगते। एक बार चेतना ने कहा कि आप लोग मेरी बातों पर क्यों हंसते लगते हैं तो मेरे सहकर्मी दास बाबू यह सुनकर सन्न रह गए, लेकिन हमारे एक वरिष्ठ साथी ने कहा कि आपकी हंसी ही ऐसी है कि हंसी के परूमाणु पूरा वातावरण ही खुशनुमा कर देते हैं। यहां पर मैं चेतना के गुण, रूप-माधुर्य की प्रशंसा में यह कहानी नहीं लिख रहा हूं बल्कि उस चेतन तत्व की महिमा के बखान करने का प्रयास कर रहा हूं जिसके कारण चेतना, में चेतनता थी और हमारे सहकर्मी सुनील दास उर्फ बंगाली बाबू, उसकी मुस्कान के कायल थे।

चेतन तत्व के बारे में मुगल सम्राट शाहजहां के शासन काल की एक घटना है जब संत मालिक मोहम्मद जायसी उनके दरबार में गए तो उनके कुरूप और एक नयन चेहरे को देखकर सभी दरबारियों ने उनकी हंसी उड़ाई, तो उन्होंने ऐसा उत्तर दिया कि सभी में चेतनता आ गई :- मोहिके हंसे कि वोहि कुम्मारन अर्थात् मुझ पर हंस रहे हो या उस कुम्भकार (ईश्वर) पर जिसने हमें (शरीर) रूपी घड़ा बनाया है। दरबारियों को अपनी भूल का आभास हुआ और अपने व्यवहार के लिए उनसे क्षमा मांगी।

हमारा शरीर 5 जड़ तत्वों (भूमि, हवा, जल, आग और आकाश) और चेतन आत्म तत्व से मिलकर बना है। जब हम मन के माध्यम से आत्म तत्व -चेतन से शरीर का सम्बन्ध जोड़ते हैं तो हमारी सभी इंद्रियों की शक्तियों में एकाग्रता की शक्ति का समावेश हो जाता है और किसी कार्य में सफलता का प्रतिशत कई गुना बढ़ जाता है। आपने देखा होगा कि योगगुरु जब योगाभ्यास कराते हैं तो बार-बार एक ही बात पर ज़ोर देते हैं कि “चेतना में आओ” मन के माध्यम से हमारा भौतिक शरीर हमारे आत्म तत्व चेतन से जुड़कर क्रियाशील होता है। यद्यपि मानव की यह विशेषता है कि उसे अन्य जीवधारियों से भिन्न अधिक ज्ञानेंद्रियां प्राप्त हैं और सभी इंद्रियों को एकाग्रकर अपने अपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

चेतना का व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व है। चेतना और एकाग्रता जीवन की सफलता के संयुक्त चरण हैं। एकाग्रता और चेतना दोनों

साथ-साथ चलते हैं। चेतना से एकाग्रता आती है और बिना एकाग्र हुए किसी भी क्षेत्र में सफलता नहीं मिलती है।

आलस्य और चेतना दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं। एक आलसी व्यक्ति की अंतरचेतना सुषुप्तावस्था में रहती है। चेतनारहित व्यक्ति को प्रत्येक कार्य कठिन लगता है और सफलता बहुत दूर होती है। हमारा शरीर जड़ और चेतन का संगम है और जब तक हम चेतन रहते हैं कार्य करते हैं। इसके विपरीत अचेतन अवस्था में सभी सजीव इंद्रियों के रहते हुए हम जड़ ही हैं, केवल श्वास लेते रहने से हम चेतन नहीं बन जाते हैं।

चेतना रहित होने से बड़ी हानि जीवन में नहीं है। चेतना के अभाव में हम अपने जीवन के लक्ष्य - अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष (परम लक्ष्य) को नहीं प्राप्त कर सकते हैं। एक हिन्दू पौराणिक कथा - ‘अमरनाथ कथा’ में चेतना के महत्व को बताया गया है - एक बार माता पार्वती के गुरु नारद मुनि ने उन्हें बताया कि बाबा भोले शंकर अजर- अमर हैं और आपको बारम्बार जीवन-मरण के चक्र में फंसना पड़ता है। अतः आप बाबा भोले शंकर से निवेदन कीजिए कि उन्हें भी अमर कथा सुनाकर अमर कर दें। माता पार्वती की विनती को बाबा भोले शंकर टाल नहीं सके और निर्जन स्थान-अमरनाथ में अमर कथा सुनाई, किन्तु आलस्यवश कथा के दौरान माता को नींद आ गई और माता पार्वती आलस्यवश नींद आने के कारण कथा श्रवण से वंचित रह गई और इसके साथ अमर तत्व से भी। इस प्रकार माता पार्वती चेतना के अभाव में जीवन के परम लक्ष्य (मुक्ति) को प्राप्त नहीं कर सकीं।

इस प्रकार, यदि हम गणना करें तो हम अपने अमूल्य जीवन का बहुत ज्यादा समय चेतना रहित व्यतीत करते हैं और जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण लक्ष्यों से वंचित रह जाते हैं और हमारा नाव रूपी जीवन समय रूपी नदी में चेतना रूपी पतवार के अभाव में अनियंत्रित रूप से प्रवाहित होता रहता है।

बीरपाल सिंह

प्रबन्धक - राजभाषा  
क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली



21 नवंबर

1947 - आजादी के बाद देश में पहली बार डाक टिकट जारी किया गया. / 1963 - केरल के थुंबा क्षेत्र से रॉकेट छोड़े जाने के साथ ही भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम शुरू हुआ. भारत का 'नाइक-अपाचे' नाम का पहला रॉकेट छोड़ा गया.

## कर्तव्यपथ...

**ज**ब महाभारत के युद्ध में कौरव और पांडव आमने सामने खड़े थे तब अर्जुन अपने सामने अपनों को देखकर स्तब्ध रह गए और सोचने लगे कि मैं कितना बड़ा पाप करने जा रहा हूँ, जिनसे मैंने शिक्षा ली, जिनके गोद में खेलकर मैं बड़ा हुआ, क्या आज मैं उन्हें ही मारने जा रहा हूँ? नहीं मुझसे ये पाप न होगा और अपनी तीर कमान को नीचे रखकर भगवान श्री कृष्ण से कहते हैं हे श्री कृष्ण मैं किससे युद्ध करने जा रहा हूँ यह सारे मेरे प्रिय जन हैं, मैं कैसे इन्हें मार सकता हूँ? मुझसे यह पाप नहीं हो सकता, मैं युद्ध नहीं कर सकता तब भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं:

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
मा कर्मफलहेतुर्भुमा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि हे पार्थ कर्म करने में ही तेरा अधिकार है फलों में कभी नहीं अतः तू कर्म कर फल का हेतू भी मत बन और तेरी अकर्मण्यता में भी आसकती ना हो. अंततः अर्जुन को यह बात समझ आ जाती है और वह अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर हो जाते हैं अंततः धर्म की विजय होती है.

“कर्तव्येन कर्ताभि रक्षयते” अर्थात् कर्तव्य ही कर्ता की रक्षा करता है वर्तमान परिवेश में भी हम देख सकते हैं कि कर्तव्य से ही कर्ता की पहचान होती है. हम सब बचपन से ही अपने बड़ों के मुख से एक कहावत सुनते आ रहे हैं

“जैसी करनी वैसी भरनी”

अर्थात् हमारा कर्तव्य जैसा होता है उसका फल भी हमें वैसा ही प्राप्त होता है. इस प्रसंग में कबीर दास का एक दोहा बहुत प्रसांगिक प्रतीत होती है.

करता था सो क्यों किया, अब कर क्यों पछताए ।  
बोया पेड़ बबूल का, आम कहां से खाए ॥

अर्थात् हमें कर्म करने से पहले सोच लेना चाहिए कि यह मैं जो करने जा रहा हूँ वह सही है या नहीं है जैसा कि अगर हम अपने बाग में बबूल का पेड़ लगाते हैं तो हमें कांटे ही मिलेंगे मीठे व रसीले आम नहीं.

मनुष्य संसार में आने से संसार से जाने तक के सफर में वह अपने कार्यों एवं कर्तव्यों से ही जाना जाता है बचपन से ही बच्चे जिस भी क्षेत्र में मेहनत करते हैं वह उसी क्षेत्र में ख्याति को प्राप्त करते हैं.

हमारे देश में कितने ही महान लोग हुए हैं चाहे वह महात्मा हो, सन्यासी हो, समाज सुधारक हो, क्रांतिकारियों हो, देशभक्त हो, वैज्ञानिक हो आदि सभी अपने कार्यों व कर्तव्यों के बदौलत आज भी जाने जाते हैं. कहां जाता है कोई भी कार्य असंभव नहीं होता बस उसे करने का जज्बा होना चाहिए 18 मई 1974 से पहले हम कभी परमाणु शक्ति वाला देश बनने की सोच भी नहीं सकते थे पर यह कठिन कार्य भी हमारे देश के महान वैज्ञानिकों ने कर दिखाया उन्हीं वैज्ञानिकों में से एक थे डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जो बाद में भारत के राष्ट्रपति भी बने, उन्होंने अपनी पूरी जीवन सादगी में ही बिता दिया पर अपने कार्यों से हमारे देश को मिसाइल तकनीक के क्षेत्र में शीर्ष तक ले गए. आज वे हमारे बीच नहीं हैं पर अपने कर्तव्यों के कारण वे मरकर भी हममें अमर हो गए.

जिस प्रकार बचपन में हम विद्यालय में गुरु जी के डांट से बचने के लिए हम घर पर मेहनत कर

अपना होमवर्क हम पूरा करके जाते थे और वही मेहनत गुरु जी के डांट से हमारी रक्षा करती थी उसी प्रकार हमारी पूरी जीवन यात्रा

22 नवंबर

2008 हिन्दी के प्रख्यात कवि कुंवर नारायण को वर्ष 2005 के ज्ञानपीठ पुरस्कार हेतु चुना गया.

1997 - भारत की डायना हेडेन विश्व सुंदरी बनी.



में हमारे अपने कर्तव्य ही हमारी हमेशा रक्षा करते हैं।

आज हमारा प्यारा भारत प्रगति पथ पर अग्रसर हो चला है। हमारा प्यारा भारत आज विश्व के विकसित देशों में शुमार होने को अग्रसर है। हमारे देश की प्रगति के पीछे हमारे देश के कृतज्ञ नागरिकों का ही मेहनत है पर हमें अभी और मेहनत करने की आवश्यकता है हमें उन देशों से शिक्षा लेनी चाहिए जो विकसित देशों में शुमार है हमारे देश के उत्तर पूर्व में एक छोटा सा तटीय देश है जिसका नाम जापान है उसकी जनसंख्या मात्र 13 करोड़ है जो हमारे देश की जनसंख्या का दसवां भाग है पर जापान की सकल घरेलू उत्पाद हमारे देश के से कहीं ज्यादा है अगर हम देखे तो जापान हमसे तकनीकी क्षेत्र में भी बहुत आगे है। जापान एक ऐसा देश है जहां भूकंप व अन्य प्राकृतिक आपदायें भी बहुत ज्यादा आते हैं पर इन सब विपरीत परिस्थितियों के बावजूद जापान एक विकसित देश है। कहा जाता है कि प्रतिकूल परिस्थितियां ही इंसान को ज्यादा मजबूत बनाती है यह कथन जापान के लोगों पर बिल्कुल चरितार्थ होता है यहां के लोग बहुत ही मेहनती होते हैं वहां के लोग एक दूसरे से ज्यादा बात करके अपना बहुमूल्य समय नहीं गवांते बशर्ते वे इस समय का उपयोग अपने कार्यों को पूर्ण करने में करते हैं यहां के लोग मेहनती होने के कारण स्वस्थ एवं तंदुरुस्त रहते हैं उनकी उम्र भी लंबी होती है आज हमारे देशवासियों को भी इन से शिक्षा लेने की जरूरत है हमें भी खूब मेहनत करना चाहिए।

जब हम बढ़ेंगे, तब देश बढ़ेगा ।

जब देश बढ़ेगा तब भारत विश्व गुरु बनेगा ॥

उपर्युक्त वाक्यों को अगर हमें चरितार्थ करना है तो हम सभी देशवासियों को अपने-अपने क्षेत्र में पूरी लगन व निष्ठा से अपने कर्तव्यों का वहन करने कि आवश्यकता है। जब हमारे देश के सभी देशवासी अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान होंगे तब वह दिन दूर जब हमारा प्यारा देश एक विकसित देश के नाम से जाना जाएगा।

अगर हम अपने प्यारे बैंक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की बात करें तो हमारे प्यारे बैंक को देश का सबसे पहला स्वदेशी बैंक होने का गौरव प्राप्त है। हमारा प्यारा बैंक देशवासियों की 111 वर्षों से सेवा करता आ रहा है, हमारे बैंक ने पिछले 111 वर्षों में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं और देशवासियों की सेवा में हमेशा तत्पर रहा है, यह सब हमारे बैंक के कृतज्ञ कर्मियों के कर्तव्यों के कारण ही हो पाया है। आज का दौर एक प्रतिस्पर्धा का दौर है, आज हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बहुत बढ़ गयी है, उसी प्रकार बैंकिंग क्षेत्र भी प्रतिस्पर्धा वाले दौर से गुजर रहा है। इस प्रतिस्पर्धा के दौर में भी अपने बैंक की गरिमा एवं इसकी ऊंचाइयों को बनाए रखना हमारा परम कर्तव्य है। इस गरिमा को बनाए रखने के लिए हम सभी बैंक कर्मियों को पूरी निष्ठा, लगन एवं कृतज्ञता से अपने कार्यों को करना होगा तभी हमारे प्यारे बैंक का नाम हमेशा स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा।

अतः हम यह कह सकते हैं कि कर्तव्य किसी भी व्यक्ति की पहचान होती है, इन्सान तो मर जाता है पर उसके द्वारा किए गए अच्छे कार्य उसे अमर कर देता है अर्थात अच्छे कार्य/कर्तव्य कभी नहीं मरते हैं।

कर्म पथ पर बढ़ते रहना यह क्रम है संसार का,  
कर्मवीर को फर्क न पड़ता किसी जीत या हार का ॥

कर्तव्य ही कर्ता की रक्षा करता है यह वाक्य अनादि काल से चरितार्थ रहा है एवं अनंत काल तक भी चरितार्थ रहेगा।



**सन्नी कुमार**  
सहायक प्रबंधक

### 23 नवंबर

1983 - भारत में पहली बार राष्ट्रमंडल शिखर सम्मेलन का आयोजन हुआ. / 2002 - जी-20 की बैठक नई दिल्ली में शुरू हुई.

### 24 नवंबर

1859 - चार्ल्स डार्विन की 'आन द ओरिजिन आफ स्पेशीज' का प्रकाशन.

## व्यंजन



## नायलोन खमण

**आवश्यक सामग्री :** 1.5 कप बेसन (200 ग्राम), 3 टी स्पून चीनी, 2 स्पून तेल, ¾ कप पानी (आवश्यकता अनुसार), ¾ टी स्पून नीबू फूल, ¾ टी स्पून नमक (स्वादानुसार), 1 टी स्पून इनो/खाने का सोडा.

**तड़के की सामग्री :** 3 टेबल स्पून तेल, 1 चम्मच राई (सरसो), 3-4 हरी मिर्च, 15-20 करी पत्ता, ½ कप पानी, ¼ कप चीनी.

खमन भाप में पकने वाला व्यंजन है। घोल बनाने से पहले स्टीमर में पानी रखकर पानी को गरम करें। खमन मोटा बनता है तो हम केक टीन या पतिली को तेल से चिकना करके रख देंगे।

बेसन को छान लीजिये और एक बर्तन में पानी में नमक, नीबू के फूल, चीनी डालकर घुलने तक मिलाए इसके बाद तेल मिला के घोल को अच्छे से तैयार कर लें। सब घुल जाने के बाद छने हुए बेसन को थोड़ा थोड़ा कर पानी में डालकर मिक्स कर घोल बनाए। घोल नातो गाढ़ा हो और नाही पतला। मीडियम घोल बनाए। गुठलिया न रहे इस बात का ध्यान रखे। अब 5 मिनट के लिए तैयार घोल को रख दें। इसके बाद खाने का सोडा या इनो डालकर मिक्स

करें। मिक्स करते समय घोल को एक ही दिशा में घुमाएं। बैटर हल्का हो जाएगा। तैयार घोल को तेल लगे टीन में डाले। टीन को आधी ही भरे। क्योंकि खमन पकने के साथ ही फूलेगा। तेल लगे टीन को अब स्टीमर में भाप देने के लिए रखें। 15 से 20 मिनट भाप देकर पकाएं। खमन पक जाने के बाद स्टीमर से निकाल कर ठंडा होने दे। इसके बाद इसे चौकोर काट लें।

अब तड़का बनाना है। गरम तेल में राई डाले, राई चटकने तक रुके। अब कटी हरी मिर्च, करी पत्ते डाल कर पकाएं। पानी और चीनी डालकर 1 से 2 मिनट तक उबाले। अब यह तड़का बनाए हुए खमन पर डालिए। ऊपर हरी धनिया से गार्निश करें। खमन को 10 मिनट के लिए रख दें। अब तैयार है गुजराती नायलॉन खमण।



**रीमा पनारा**

पत्नी-विशाल पनारा,  
सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

### 25 नवंबर

1866 - इलाहाबाद उच्च न्यायालय का उद्घाटन. / 1948 - भारत में राष्ट्रीय कैडेट कोर की स्थापना हुई. / 1949 - स्वतंत्र भारत के संविधान पर संवैधानिक समिति के अध्यक्ष ने हस्ताक्षर किये तथा इसे तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया.





## गुड़ जो लोलो (सिंधी डिश)



सर्दियों का मौसम शुरू हो गया है। सर्दियों में गुड़ खाना सेहत के लिए बहुत ही लाभदायक है। मीठा सबको पसंद आता है पर बीमारियों की वजह से लोग शक्कर नहीं खाते हैं, पर गुड़ मीठे का एक अच्छा विकल्प है जो आपको मिठास की चाहत को भी पूरा करेगा और लाभदायक भी है।

**सामग्री :** गेहूँ का आटा - 250 ग्रॅम, गुड़ - 150 ग्रॅम, पानी - ¾ कप, घी - 100 ग्रॅम, छोटी इलायची पाउडर - 1 चम्मच.

**विधि :** सबसे पहले गुड़ को पानी में भिगोकर रखना है, जब तक वह पूरा घुल जाए और फिर उस पानी को छान लें ताकि अगर उसमें कुछ कचरा है तो निकल जाए. अब एक बड़े पतिले में गेहूँ का आटा डालिए उसमें इलायची पाउडर मिला दिजिए. घी का मोहन डालकर आटा गूँथ लीजिए और साथ में गुड़ वाला पानी थोड़ा-थोड़ा कर डालना है. ध्यान रहे आटा सख्त रहना चाहिए. अब इस आटे के छोटे-छोटे पेड़े बनाकर उसकी मोटी रीटी बना लेनी है. अब इस बेली हुई मोटी रोटी को तवे पर धीमी आंच पर पकाना है ताकि रोटी अंदर तक पक जाए. पकाते वक्त थोड़ा-थोड़ा तेल डालते रहना है ताकि रोटी थोड़ी कुरकुरी बन जाए. जब एक तरफ से पक जाए तो दुसरी तरफ पलट देना है और उसे भी सुनहरा होने तक पकाना है. इसी तरह बाकी लोलों को भी बनाना है. इसे आप गरम-गरम निकालकर उसपर ताजा मक्खन लगाकर, ऐसे भी खा सकते हैं या फिर आचार / दही / रायता / किसी भी फ्राई सब्जी जैसे आलू, करेला, भेंडी या पालक की सब्जी के साथ खा सकते हैं. इस लोले का आप 8 - 10 दिन तक भी रख सकते हैं.

## गुजराती पैन हांडवा



गुजराती पैन हांडवा एक ट्रेडिशनल डिश का आधुनिक स्वरूप है उसके लिए ढोकले के लिए बनाए गए खमीर आए हुए घोल का उपयोग किया जाता है।

**सामग्री :** 1 कप ढोकले का घोल, 250 ग्राम लौकी, 2 टी स्पून अदरक मिर्ची का पेस्ट, 3 टेबल स्पून कुटी हुई मूँगफली, 1 टी स्पून लहसुन/लाल मिर्च पाउडर एवं नमक (स्वादानुसार), 1 टी स्पून तिल, 1 टी स्पून खाने का सोडा.

**विधि :** ढोकले के खमीर आए हुये घोल में कद्दू कस लौकी अदरक मिर्च का पेस्ट, कुटी मूँगफली, लहसुन, लालमिर्च पाउडर, नमक (स्वादानुसार) मिक्स कीजिये। अब एक तरफ पैन में तेल गरम करके राई डालकर चटकने दें. अब उसमें जीरा डालें उसके बाद हिंग, करी पत्ता और तिल डालकर तड़का लगाएँ. तड़के में घोल की थोड़ी मात्रा डालकर 2 मिनट तक पकाए। अब पैन को ढक्कन लगाकर धीमी आंच से पकाएं धीमी आंच पर एक तरफ पकने के बाद यानि की ब्राउन कलर आने के बाद उसको पलटा दीजिये और दूसरी तरफ भी पकने के बाद यानी की ब्राउन कलर आने तक पकाए। पकाते वक्त टूथपिक या कोई शार्प ऑब्जेक्ट डालकर चेक करें। तैयार है गुजराती पेन हांडवा।

किरण मीरचंदानी

मानव संसाधन  
विकास विभाग, केन्द्रीय कार्यालय



26 नवंबर

1885 - पहली बार उल्कापिंड की तस्वीर ली गयी. / 1948 - नेशनल कैडेट कोर की स्थापना हुई.

1960 - भारत में पहली बार कानपुर एवं लखनऊ के बीच एसटीडी सेवा शुरू हुई.

## सतर्कता जागरूकता सप्ताह



सतर्कता जागरूकता सप्ताह (31 अक्टूबर 2022 से 06 नवंबर 2022) के दौरान 'सेन्ट विजिल' पत्रिका का विमोचन करते हुए बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम. वी. राव एवं कार्यपालक निदेशकगण.



आंचलिक कार्यालय कोलकाता द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान सतर्कता जागरूकता संबंधी एक रोड शो रैली निकाली गई.



आंचलिक कार्यालय हैदराबाद द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान सतर्कता जागरूकता संबंधी एक रोड शो रैली निकाली गई.



सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान अहमदाबाद आंचलिक एवं क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा रैली का आयोजन किया.



दिनांक 04.10.2022 को आंचलिक कार्यालय पुणे द्वारा सतर्कता जागरूकता अभियान के अंतर्गत सतर्कता मानव रैली निकाली गई.



दिनांक 03.10.2022 को सतर्कता जागरूकता अभियान के अंतर्गत आंचलिक कार्यालय पुणे द्वारा 'साईबर अपराध से बचाव' पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया.

## स्थापना दिवस - केन्द्रीय कार्यालय



बैंक के 112वें स्थापना दिवस के अवसर पर हमारे बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम. वी. राव का पुष्प गुच्छ से अभिनंदन करते हुए श्री जे. एस. साहनी, अंचल प्रमुख - दिल्ली.



बैंक के 112वें स्थापना दिवस के अवसर पर स्क्रीन पर वर्चुअली सम्बोधित करते हुए हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम. वी. राव एवं मंच पर उपस्थित बाएं से श्री राजीव पुरी, कार्यपालक निदेशक, श्री विवेक वाही, कार्यपालक निदेशक एवं श्री एम. वी. मुरली कृष्ण, कार्यपालक निदेशक.



बैंक के 112वें स्थापना दिवस के अवसर पर हमारे बैंक के संस्थापक की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए बैंक के कार्यपालक निदेशकगण श्री राजीव पुरी, श्री विवेक वाही एवं श्री एम. वी. मुरली कृष्ण.



बैंक के 112वें स्थापना दिवस के अवसर पर मुंबई महानगरीय आंचलिक कार्यालय द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में मंच पर विराजमान बैंक के माननीय कार्यपालक निदेशकगण श्री राजीव पुरी, श्री विवेक वाही एवं एम. वी. मुरली कृष्ण.



बैंक के 112वें स्थापना दिवस के अवसर पर श्री विवेक वाही, कार्यपालक निदेशक का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए श्री स्मृति रंजन दाश, महाप्रबंधक (मासंवि / राजभाषा).



बैंक के 112वें स्थापना दिवस के अवसर पर श्री राजीव पुरी, कार्यपालक निदेशक का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए सुश्री नमिता रॉय शर्मा, महाप्रबंधक (केन्द्रीय लेखापरीक्षा एवं निरीक्षण विभाग).



बैंक के 112वें स्थापना दिवस के अवसर पर श्री एम. वी. मुरली कृष्ण, कार्यपालक निदेशक का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए श्री सत्यनारायणन, महाप्रबंधक (ऋण निगरानी एवं नीति विभाग).



बैंक के 112वें स्थापना दिवस के अवसर पर उपस्थित कार्यपालक निदेशक एवं महाप्रबंधकगण.

## ११२ वें स्थापना दिवस की झलकियां - विभिन्न अंचल



मूल्यवान ग्राहक को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि श्रीमती गरिमा सिंह, आईएस (1997 बैच) वित्त सचिव, पंजाब सरकार और श्रीमती पॉपी शर्मा, अंचल प्रमुख, चंडीगढ़.



आंचलिक कार्यालय पुणे द्वारा भव्य आयोजन.



पटना में आयोजित रक्तदान शिविर में अंचल प्रमुख, श्री डी.पी. खुराना, क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजीव रंजन सिन्हा एवं सीआईए, श्री दिनेश पन्त रक्तदान करते हुए.



नंदन पैलेस भोपाल में श्री तरसेम सिंह जीरा, अंचल प्रमुख - भोपाल, बैंक के संस्थापक के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर सांस्कृतिक संध्या का उद्घाटन करते हुए.



आंचलिक कार्यालय, हैदराबाद में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया.



बैंक के संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन करते हुए श्री अजय कुमार सिंह, अंचल प्रमुख - कोलकाता.



आंचलिक कार्यालय दिल्ली में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया.



मुंबई महानगरीय आंचलिक कार्यालय द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की एक झलक.



सांस्कृतिक संध्या के दौरान संबोधित करते हुए अंचल प्रमुख श्री वी.वी. नटराजन तथा मंच पर उपस्थित श्री के. सुरेश कुमार, क्षेत्रीय प्रमुख चेन्नई, सेवानिवृत्त वयोवृद्ध महाप्रबंधक, श्री के रघुरामन, तथा श्री पी. के रॉय, सीआईए.



सांस्कृतिक कार्यक्रम में शाखा- अलीगंज के सम्मानित ग्राहक श्री हृदय नारायण जायसवाल, अध्यक्ष, लखनऊ प्रगति सेवा संस्थान, सीतापुर योजना, अलीगंज, लखनऊ को अंगवस्त्र एवं पुष्प गुच्छ से सम्मानित करते हुए अंचल प्रमुख, लखनऊ श्री एस. के. गुप्ता एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री ए.के. खन्ना.

## विविध



दिनांक 23.11.2022 को विजयवाडा में विशाल क्रेडिट कैम्प का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हितग्राही को स्वीकृति पत्र प्रदान करते हुये प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव.



सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के निदेशक मंडल में सरकार द्वारा नामित निदेशक श्री हार्दिक मुकेश सेठ का अहमदाबाद आंचलिक कार्यालय में अंचल प्रमुख श्री मोहित कोडनानी द्वारा स्वागत किया गया.



दिनांक 14.10.2022 को आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा आयोजित स्वच्छता कार्यक्रम में उपस्थित श्री वी. श्रीनिवास, आईएएस, सचिव, डीएआरपीजी एवं डीओपीडीडब्ल्यू और श्री गया प्रसाद, अवर सचिव, डीएआरपीजी.



दिनांक 05.12.2022 को पटना में क्रेडिट आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें ग्राहक को आवास ऋण - स्वीकृति पत्र प्रदान करते हुए, महाप्रबंधक, केन्द्रीय कार्यालय, श्री वी. लक्ष्मण राव उपस्थित थे, साथ ही, अंचल प्रमुख, श्री डी.पी. खुराना, क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजीव रंजन सिन्हा.



दिनांक 20.10.2022 को पुणे मार्केट यार्ड में बैंक को आंबटिंट प्लॉट पर पुणे अंचल प्रमुख श्री बी बी मुटर्रेजा द्वारा विधिवत् भूमिपूजन कर निर्माण कार्य का प्रारंभ.



स्टाफ सदस्यों के लाभार्थ आयोजित मोटिवेशनल स्पीच कार्यक्रम में अतिथि वक्ता श्री जी. कल्याणरामन का स्वागत करते हुए अंचल प्रमुख श्री वी. वी. नटराजन.

## स्वागतम

### हमारे नये कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्ण का संक्षिप्त परिचय

01 अगस्त 1967 को जन्मे श्री एम वी मुरली कृष्ण बैंकिंग एंड फाइनेंस में एमबीए हैं। उन्होंने प्रोबेशनरी ऑफिसर के रूप में बैंक ऑफ बड़ौदा में अपना करियर शुरू किया। उन्हें नेतृत्व की भूमिकाओं में तीन दशकों से अधिक का पेशेवर बैंकिंग अनुभव है। बैंकिंग के सभी प्रमुख क्षेत्रों कॉर्पोरेट क्रेडिट, अंतर्राष्ट्रीय संचालन, ग्रामीण और कृषि बैंकिंग, वित्तीय समावेशन, एनआरआई व्यवसाय आदि में उनकी विशेषज्ञता है।



बैंकिंग उद्योग में अपने लंबे कार्यकाल के दौरान, उन्होंने शाखाओं से लेकर क्षेत्रीय कार्यालयों और विदेशी कार्य क्षेत्र से कॉर्पोरेट कार्यालय तक काम किया है। उन्होंने बड़े कॉर्पोरेट के प्रमुख, अंतर्राष्ट्रीय संचालन के प्रमुख, ग्रामीण और कृषि विभाग के प्रमुख और वित्तीय समावेशन विभाग के प्रमुख जैसे दायित्वों को सफलतापूर्वक संभाला है। श्री मुरली कृष्ण ने बीओबी कैपिटल फाइनेंस लिमिटेड, बड़ौदा, गुजरात ग्रामीण बैंक और एएफसी लिमिटेड (कृषि वित्त निगम) के बोर्ड में निदेशक का पद भी संभाला है।

1 दिसंबर, 2022 से सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के कार्यपालक निदेशक के रूप में पदोन्नति से पूर्व श्री मुरली कृष्ण बैंक ऑफ बड़ौदा के मुख्य महाप्रबंधक के पद पर हेड ऑफ कॉर्पोरेट एंड इस्टीमेटेशन क्रेडिट - लार्ज कॉर्पोरेट थे।



### श्री एम वी मुरली कृष्ण, कार्यपालक निदेशक

## पदोन्नति

सेंट्रलाइट परिवार की ओर से हार्दिक बधाई...!!



श्री सतीश कुमार अग्रवाल, महाप्रबंधक



श्री वी लक्ष्मण राव, महाप्रबंधक

## सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्ति उपरांत सुखद एवं दीर्घायु जीवन हेतु मंगलकामनाएं...!!



श्री विजय वसंत मुरार,  
महाप्रबंधक



श्री गंगासिंह कुम्पावत,  
उप महाप्रबंधक



श्री विवेकानंद सिंह,  
उप महाप्रबंधक



श्री भूषण विजयकुमार जोसेफ,  
उप महाप्रबंधक

क्रम सं. Sr. No.	विवरण DETAILS	इकाई UNIT	मार्च, 2022 अंतिम (31.03.22) March, 2022 FINAL (31.03.22)	नवम्बर, 2022 अंतिम (30.11.22) November, 2022 FINAL (30.11.22)	दिसम्बर, 2022 अंतिम (31.12.22) December 2022 FINAL (31.12.22)
1	भारत में शाखाएं / BRANCHES IN INDIA	सं./No.	4528	4504	4493
1.1	ग्रामीण / Rural	सं./No.	1604	1600	1600
1.2	अर्ध शहरी / Semi-Urban	सं./No.	1330	1330	1330
1.3	शहरी / Urban	सं./No.	783	775	769
1.4	महानगरीय / Metropolitan	सं./No.	811	799	794
2	अनुषंगी कार्यालय / SATELLITE OFFICES	सं./No.	10	10	10
3	विस्तार पटल / EXTENSION COUNTERS	सं./No.	1	1	1
4	आकारवार शाखाएं / SIZE WISE BRANCHES	सं./No.	4528	4504	4493
4.1	अत्याधिक बड़ी शाखाएं / ELB	सं./No.	22	22	22
4.2	बहुत बड़ी शाखाएं / VLB	सं./No.	550	547	547
4.3	बड़ी शाखाएं / Large Branches	सं./No.	1637	1628	1626
4.4	मध्यम शाखाएं / Medium Branches	सं./No.	2296	2284	2275
4.5	लघु शाखाएं / Small Branches	सं./No.	0	0	0
4.6	विशेष शाखाएं / Specialised Branches (**)	सं./No.	23	23	23
5	कुल जमाएं / AGGREGATE DEPOSITS	₹	341036	340905	343771
5.1	चालू / Current	₹	16515	16027	16661
5.2	बचत / Savings	₹	155965	157685	159420
5.3	मियादी / Time	₹	168556	167193	167690
5.4	संस्थागत जमाएं / Institutional Deposits	₹	7989	9173	9347
5.5	सार्वजनिक जमाएं / Public Deposits	₹	333047	331732	334424
5.6	अंतर बैंक जमाएं / Inter Bank Deposits	₹	1656	1053	1076
5.7	कुल जमाएं (अंतर बैंक सहित) / Total Deposits (including Inter Bank)	₹	342692	341958	344847
6	अनु. वाणि बैंको में से.बैं.इं.का हिस्सा / SHARE OF CBI IN SCBs (DEPOSITS)	%	2.04	1.95	1.92
7	प्रति शाखा जमाएं / PER BRANCH DEPOSITS	₹	75.32	75.69	76.51
8	औसत जमाएं / AVERAGE DEPOSITS	₹	332282	338871	339001
9	पिछले मार्च की तुलना में वृद्धि / GROWTH OVER PREVIOUS MARCH				
9.1	कुल जमाएं / Aggregate Deposits	%	3.70	-0.04	0.80
9.2	सार्वजनिक जमाएं / Public Deposits	%	3.35	-0.39	0.41
9.3	संस्थागत जमाएं / Institutional Deposits	%	20.83	14.82	17.00
9.4	औसत जमाएं / Average Deposits	%	3.87	1.98	2.02
9.5	कुल जमाएं (अंतर बैंक सहित) / Total Deposits (including Inter Bank)	%	3.85	-0.21	0.63
10	बिंदु-दर-बिंदु कुल जमाओं में वृद्धि / POINT-TO-POINT ACC.DEPOS.GROWTH	%	3.70	2.15	2.00
11	सीआरआर / CRR:-	₹			
	ए) अनिवार्य / Obligatory (30.12.2022)	₹	13712	15608	15666
	बी) वास्तविक (औसत) / Actual (Average) (30.12.2022)	₹	13729	15621	15680
12	एसएलआर / SLR:-	₹			
	ए) अनिवार्य / Obligatory (30.12.2022)	₹	61865	62431	62725
	बी) वास्तविक / Actual (30.12.2022)	₹	121598	97804	95365
13	हाथ में नकदी / CASH IN HAND (30.12.2022)	₹	1493	1520	1477
14	भारत में स्थित बैंकों में कुल शेष / BALANCE WITH BANKS IN INDIA (30.12.2022)	₹	49	53	36
15	भारतीय रिज़र्व बैंक में शेष / BALANCE WITH RBI (Last reporting Friday)	₹	13275	15950	16850
16	निवेश / INVESTMENT	₹	146759	142410	140383
16.1	सरकारी प्रतिभूतियां / Government Securities	₹	105842	100747	100559
16.2	अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां / Other Approved Securities	₹	0	0	0
16.3	अन्य गैर-एसएलआर प्रतिभूतियां / Other Non SLR Securities	₹	40917	41663	39824
16.3.1	सीपी / CPs	₹	342	315	315
16.3.2	डिबेंचर्स / Debentures	₹	5860	5065	4781
16.3.3	पीएसयू बॉण्ड्स / PSU Bonds	₹	28736	28539	28559
16.3.4	शेयर्स - संयुक्त उद्यम/अनुषंगी (देशी) / Shares - Jt.Vn/Subs'ry (Inland)	₹	258	258	670
16.3.5	संयुक्त उद्यमों के शेयर्स (विदेशी) / Shares of joint Ventures (Foreign)	₹	0	0	0
16.3.6	अन्य / Others	₹	5721	7486	5499
	कुल ऋण / TOTAL CREDIT®	₹	189712	201026	204921

(\*) Total No. of Branches exclude satellite offices. No. of Branches revised as per RBI Branch categorisation guidelines.

(\*\*) Specialised Branches includes CFBS/SANIS/-(RAM/CBS/Capital Market and Treasury Branch).

(\*) शाखाओं की कुल संख्या में अनुषंगी कार्यालय शामिल नहीं है. शाखाओं की संख्या आरबीआय की संशोधित शाखा वर्गीकरण नीति के अनुसार है.

(\*\*) विशेष शाखाओं में सीएफबी / सेम एआरबी/मिड कॉर्पोरेट / पूंजी बाजार / कोष शाखाएं शामिल है.



भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया  
*Central Bank of India*

1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911